दो राहें

लीला अवस्थी

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी :१:

निवेदन

'दो राहें' मेरी चौथी पुस्तक है जो प्रकाशन-पथ पर जा रही है। उपन्यासके क्षेत्रमें यह मेरी पहली ही कृति है। इस क्षेत्रमें अपना प्रथम चरण रखते हुए मुझे प्रसन्नता भी हो रही है और संतोष भी, क्योंकि मेरी कई दिनोंकी इच्छा आज साकार हो उठी है।

अभी तक मैं अपनी कहानियोंमें नारीके विविध रूपोंको केन्द्रित करती रही हूँ परन्तु इस उपन्यासमें मैंने उन परिस्थितियों और वातावरण-का चित्रण करनेका प्रयत्न किया है जो नारीको एक विशेष रूप प्रदान करते हैं। केप्टन रघुनाथकी दो बेटियाँ—रूबी और गौरी, अपनी विभिन्न परिस्थितियों एवं वातावरणके कारण, दो विभिन्न राहों पर अपने कदम उठाती हैं। उन्हीं दो राहों और उन राहों की 'मंजिलों'का चित्रण कैसा हुआ है यह तो पाठकगण ही बता सकेंगे, परन्तु मैं इतना बता सकती हूँ कि यह दो विरोधी राहें वर्तमान समाजके दो रूप हैं, दो तत्त्व हैं। दोनोंके बीच विषमता की खाई है, और उपन्यासका उद्देश्य इस खाईको भरनेका एक प्रयत्न है।

रसज्ञ पाठक और सुधी विवेचकके नाते उपन्यास आपके सम्मुख रख कर मैं अपनी अन्य कृतिकी तैयारीमें विदा लेती हूँ।

—लीला अवस्थी

अध्याय : १ :

बारह अक्तूबर १९४४........।

तूफानी बरखाका पाँचवाँ दिन। पाँच दिन बीते और पाँच रातें बीत गई किन्तु बिरहनके आँसुओंकी तरह पानीकी बूँदोंने पलभर थमनेका नाम न लिया। वह रात जो अक्तूबर मासकी ग्यारह और बारह तारीखोंके सींकचोंमें बन्द थी, मानों रो रही थी। तेज हवाकी सनसनाहट मानों उसकी आहें और चीखें थीं और बेरहम तूफान उस पर सितम बरपा कर रहा था। कहते हैं हर वस्तुकी एक सीमा होती है; जो साकार है उसका अन्त सुनिश्चित है। इस नाशवान् धरा पर नाश ही जैसे शाश्वत है, अमर है। फिर भी सृजन इस नाशके नागशीश पर नृत्य करता रहता है, यह जानते हुए भी कि निर्माणका अन्त नाश में है।

सत्यका मर्म किसने टटोला है? परन्तु वह कुछ तो है ही, इससे इन्कार नहीं किया जा सकता। कारण और कार्यकी सीमा-रेखाओंमें सत्यको बाँधा जा सकता है, ऐसा भी कौन कह सकता है। बिरहनकी आँखों-सी बरसती बदली कैसे थम गई कौन बता सकेगा? परन्तु यह सत्य तो है ही कि उस रोती-सिसकती काली रातकी हिचकियाँ थम गई, बदरियाके गीले नयन सूख गये; मोतियोंने ढुलकना छोड़ दिया। बादल खामोश थे; हवाकी सनसनाहट कहीं छूट गई थी और आकाशका प्रांगण निर्मल हो गया था।

सुबह हुई। आठ बज गए। धूप शुद्ध स्वर्ण जैसी। केसरिया रंग भरी...और किरणोंसे छनती हुई हल्की-हल्की गर्मी, जैसी पश्मोनेकी गर्मी होती है, ठीक वैसी ही। सूरजका बचपना था। उसकी भोली सूरत मुस्करा रही थी। हिन्दन नदीके किनारे बसे चन्दोल गाँवकी छोटी-छोटी मटीली-झोपड़ियोंसे धुआँ उठ रहा था...झोपड़ियोंसे उठे धुएँके ढेर आकाशके सूने आँगनमें जा गलबहियाँ करते और फिर...बेतरतीब फैली नीली चूनरोंसे बिखर जाते। पीली-पीली तितलियोंके झुंड ऐसे उड़ रहे थे जैसे सोनेके पत्तरके पीले-पीले टुकड़े हवामें उड़ रहे हों।

सब कुछ धुला-धुला था। प्रत्येक पेड़ और पेड़का एक-एक पत्ता... घर और घरोंकी छतें और दीवारें...सब धुले हुए थे। लेकिन इन पुछे पेड़ों और धुले घरोंकी गलियोंमें उजलापन नहीं था, कीचड़ था। गाँववाले अभी यह निर्णय भी नहीं कर पाये थे कि इस उजलेपनसे प्रेम करें या इस कीचड़से घृणा के बादल घिर-घिर आए। मेघकी विकराल राक्षसी बाहोंने मुस्कराती सुकुमार किरणोंको कैद कर लिया...और हिन्दनमें बाढ़ आ गई। गाय-सी सीधी नदी पागल हथिनी-सी हर-हरा उठी, तूफानी आवेग बढ़ गया। उस दिन बारह अक्तूबर थी।

हवाके झोंकोंने, पानीकी तेज़ बूँदोंने हिन्दनके किनारेके गाँवोंके घर-घरमें बाढ़का विनाश-सन्देश पहुँचा दिया। हिन्दनकी बाढ़ जीवन-मरणकी समस्या थी परन्तु कोई भी व्यक्ति अपने मकान अथवा अपनी खेतीको छोड़-कर भागना नहीं चाहता था। कई गाँवोंमें ऐड़ी-डुबा पानी भर आया था परन्तु फिर भी ग्रामवासी डटे रहे। सबको विश्वास था कि एक-आध दिनमें हिन्दनका पानी उतर जाएगा। बुरे समयमें ईश्वर जल्दी याद आता है। घर-घरमें महिलाएँ हिन्दन नदीकी पूजा—फूल, चावल, रोली और प्रसाद चढ़ा-चढ़ा कर करने लगीं। परन्तु हिन्दनको तरस नहीं आया। गाँववाले पूजा करते रहे, अपनी भावनाओंके फूल हिन्दनको समर्पित करते रहे और हिन्दन—हिन्दन उनकी पूजा और भावनाओंके सुकुमार फूलोंको अपनी पागल रफ़्तारमें डुबाती चली गई। पूनमकी दादीने बड़ी आस्थासे गंगामैयाके जलकी बूँदें, जो वह कुम्भके मेलेसे ले कर आई थी, हिन्दनकी बलखाती लहरों पर छोड़ दीं कि गंगा मैयाकी पवित्र बूँदोंसे हिन्दनका कोप शान्त हो जाय, परन्तु ऐसा नहीं हुआ। हरखू पिछले साल त्रिवेणी-स्नानके लिये गया था और वहाँ डूबते-डूबते बचा था। उसकी दृष्टि हिन्दनमें समर्पित फूलोंकी ओर गड़ी हुई थी जो लहरोंकी गोदमें मुस्करा रहे थे, इठला रहे थे...खेल रहे थे।

हरखूकी राजरानीने भी हिन्दन पर फूल चढ़ाये थे और अपने चढ़ाये फूलोंको घूँघटकी ओटसे उदास नजरोंसे निहार रही थी। उसके भीतरकी ममता सजल हो उसके नेत्रोंसे झाँक रही थी। राजरानीके चढ़ाए फूल

भँवरमें गोल-गोल घूम रहे थे और इस अनायास बने गजरेमें उसका लल्ला रो रहा था जो एक दिन इसी हिन्दनमें बहा दिया गया था। राजरानी रो पड़ी। हिन्दन फूलोंके उस गजरेको ले आगे बढ़ गई, उससे राजरानीके आँसू देखे नहीं गए।

हिन्दनका आवेग तीव्र होता गया। दोनों किनारों पर स्थित हरे-भरे पेड़ धरती पर आ पड़े। फूल टूट-टूट कर बहने लगे। घाट टुकड़े-टुकड़े हो गये। असहाय ग्रामवासी यह दृश्य मौन-दृष्टिसे देखते रहे। बलवती आशाकी एक क्षीण किरण अब भी उनके हृदयके किसी कोनेमें छिपी हुई थी कि हिन्दन अभी नहीं तो कुछ क्षण बाद, कुछ घंटों बाद या अधिक-से-अधिक एकाध दिनमें अवश्य उतर जाएगी।

हिन्दनके पूर्वी तट पर चन्दोल ग्राम था। सौभाग्यसे चन्दोल कुछ ऊँचाई पर बसा हुआ था, इसीलिए उसका कुछ अधिक नुकसान नहीं हुआ। खेतोंमें कुछ पानी भर गया था इससे अधिक अभी कुछ नहीं हुआ था किन्तु गाँवके उत्तरकी ओरसे आनेवाले घरोंके छप्पर पेड़-पौधे और दूसरी वस्तुएँ उनके भयको उकसा रहे थे। आशंका और निर्बलताका मिला-जुला भाव उनके चेहरोंके रंग परिवर्तित कर रहा था कि न जाने कब हिन्दनका कोप चन्दोल पर भी टूट पड़े।

:o: :o: :o:

हिन्दनके पश्चिमी तट पर मैदान बाल-विधवाके जीवन-सा वीरान पड़ा था। चन्दौली ग्रामसे उत्तरकी ओर, वह करीब एक मील दूर था। रातको मैदानमें श्मशान घाट-सा सन्नाटा छा जाता था। सियारों, उल्लुओं और झींगुरोंकी बोली उस सन्नाटेको भयावह बना देती थी। वहीं एक घना पीपलका पेड़ था, आसपासके ग्रामवासियोंका विश्वास था कि जो उस पेड़को देखेगा उसके घरमें दो-चार रोजमें कुछ बुरा ज़रूर होगा। एक बार तो चन्दोली ग्रामके हेडमास्टर चन्द्रप्रकाश तिवारी के साथ कुछ लोग उत्सुकता-वश नदी पार कर वीरान मैदानके उस अपशकुनी पेड़ को देख आए। फिर डरके मारे कुछ लोगोंने अपशकुन दूर करनेके लिए पूजा पाठ कराया फिर भी जो बुरा होना था वह हो कर ही रहा। चन्द्रप्रकाशके बीमार पिता तो

सदाके लिये चल बसे। इन सब कारणोंसे आस-पासके ग्रामवासियोंने उस मैदानके अस्तित्वको अस्वीकार करनेमें ही अपना भला समझा।

उसी उजाड़ मैदानको आबाद करनेके लिये एक सैनिक टुकड़ी १ अक्तूबर १९४४ को आयी थी। फलस्वरूप दस बारह तम्बू तन कर खड़े हो गए। इन तम्बुओंके बीचमें एक बड़ा तम्बू था जिस पर एक सफेद लम्बे-चौड़े कपड़े पर अंग्रेजीमें रिक्रूटिंग आफिस लिखा था। रिक्रूटिंग आफिस द्वितीय महायुद्धके लिये ग्रामीणोंकी भरतीके लिए खोला गया था। इस दफ्तरके अफसर थे मेजर रीढ, परन्तु वे इस टुकड़ीके साथ नहीं आये थे। वे पन्द्रह दिन बाद आनेवाले थे। इस अवधिमें हिन्दुस्तानी टुकड़ीको हुक्म था कि वह जमीन साफ कर दफ्तरकी पूर्ण व्यवस्था करे और तब मेजर रीढका आगमन होगा। मेजर रीढ सैनिक-टुकड़ीके साथ आते भी कैसे? वह केवल शासक ही नहीं थे अंग्रेज भी थे, अतः हिन्दुस्तानी नौकरोंके साथ आनेमें उनका अपमान था। फिर शासक शासितोंके साथ आ गए तो शासनका ऐश्वर्य उसमें कहाँ रहा? हाँ, ये और बात थी कि जमीन इन शासित हिन्दुस्तानियोंकी ही थी, पसीना और लहू भी इन्हीं हिन्दुस्थानियोंका था किन्तु शासक—शासक तो आखिर शासक हैं, उसे शासितोंके सुख-दुःख से क्या लेना-देना है! उसके लिये अपना सुखही प्रमुख है। अतः मेजर रीढने इस टुकड़ीके निरीक्षण एवं कार्य पूरा होने पर सूचना देनेके लिये कैप्टन रघुनाथको इस टुकड़ीके साथ भेज दिया था।

अवसरसे लाभ न उठाना नादानी है। कम-से-कम कैप्टन रघुनाथका यही मत था। अतः जब कैप्टन रघुनाथको यह ज्ञात हुआ कि मेजर रीढ पन्द्रह दिनों बाद आनेवाले हैं और उस समय तक वही सर्वेसर्वा हैं तो उन्होंने सोचा कि चलो 'आउटिंग' ही हो जाए और वह अपनी पत्नी हेमा, सात वर्षीया रूबी और चार वर्षीया बेबीके साथ काका को भी ले आए ताकि मेजरसाहब के आनेके पूर्व ही वह उनकी पत्नी बच्चोंको ले कर दिल्ली वापस चले जाएँ।

कैप्टनसाहबने वीरान मैदानको साफ करवाया, तम्बू तनवाये, दफ्तर ठीक करवाया और टुकड़ीके विभिन्न लोगोंको ड्यूटी पर लगा मेजरसाहबके स्वागतकी तैयारी करने लगे। स्वागतकी तैयारी पूरी भी नहीं हो पाई थी

कि वरुण देवताकी कृपा हो गई और लोग अपने-अपने तम्बूमें कैद हो गये। समय काटनेके लिये उनके पास ताश थे, गपशप थी और नींद थी। बिना कामके दिन कट रहे थे और सब खुश थे।

परन्तु कैप्टन साहबको यह सब अच्छा नहीं लग रहा था। वह तो पत्नी-बच्चोंको यह सोच कर लाए थे कि सैर-सपाटे होंगे, घूमने-फिरनेका मज़ा आएगा, परन्तु हुआ यह कि तम्बूसे एक कदम बाहर रखना कठिन हो गया। कैप्टनसाहबको लगता जैसे मेजरसाहबने इस स्थान पर उन्हें भेज कर उनसे दुश्मनी की है। उनकी यह झल्लाहट काकाके सामने खूब खुल कर प्रकट होती—"काका, पता नहीं मेजर रीढने मुझे ही इस जंगलमें क्यों भेजा है? मुझसे ही दुश्मनी थी उन्हें? उनको कोई दूसरा नहीं मिला! यह 'क्यों' मुझे बड़ा परेशान करता है काका... मेरी समझमें नहीं आता... कि मेरा मन यहाँ क्यों नहीं लगता?"

काका कोई पुस्तक पढ़ रहे थे। सिर उठा कर उन्होंने आँखें रघुनाथके मुँह पर जमा दीं और बोले—"रघु मन जैसी चीजको 'क्यों' की तर्कमयी इस्पाती बाहोंमें नहीं बाँधा जा सकता? अगर मन तर्कसे बँध जाए तो समझ लो वह मन नहीं है, बुद्धि है या कुछ और है। तुम अपने 'क्यों' पूछने-वाले मनसे इतना परेशान क्यों होते हो? यह क्यों करनेवाला मन ही प्रगतिका, जागृतिका द्योतक है..."

"और सभ्यताका भी!" रघुनाथ अपने 'पुरातनपंथी' काकाको तर्कजालमें समेट लेना चाहते थे क्योंकि काका हमेशा आधुनिकता और शहरी जीवनका विरोध करते थे।

"हाँ सभ्यताका भी... अगर वह कृत्रिम न हो।" काका ने कहा।

"सभ्यता भी क्या कृत्रिम और अकृत्रिम होती है काका? सभ्यता यदि कृत्रिम हुई तो वह सभ्यता कहाँ रही!"

"हाँ, आजके मशीन-युगमें तेज आदमी भी कृत्रिम होते हैं, फिर बना-वटी सभ्यता क्यों नहीं हो सकती? और ये तुम्हारी शहरी सभ्यता जो पश्चिमसे तुमने उधार ले रखी है, आखिर बनावटी नहीं तो और क्या है? तुम्हारी इस शहरी सभ्यताका आधार ही प्रदर्शन है। और जहाँ प्रदर्शन

होगा वहाँ बनावटीपन स्वयं अपने लिये जगह बना लेगा। धोबीके घरसे उधार लिये हुए कपड़ोंकी तरह जिनमें चमक तो है किन्तु न वह अपना है न उसमें अपनत्व है...ये झूठी सभ्यता नहीं है क्या ?"—काका ने पुस्तक मेज़ पर रख दी और एकदम 'तर्क' के मूडमें आ गए।

"पता नहीं काका तुम्हें शहरी जीवनसे क्यों इतनी नफरत है ? इन सड़े-गले गाँवोंमें जहाँ एक-एक पल काटना मुश्किल होता है, जहाँके लोगोंको न जीना आता है न रहना...तुम्हें उनमें सभ्यता दिखाई देती है। यहाँ बात करनेके लिये इन्सान तक तो मिलते नहीं, सभ्यता इन जंगलियोंमें क्या निवास करेगी ?"

"तुम इन्हें जंगली कहते हो न ? लेकिन मैं तुमसे पूछता हूँ तुम्हारी ये ऊँची सोसायटीके खूबसूरत-कीमती-कपड़ोंमें सजे हुए लोग जो अपने क्षुद्र स्वार्थोंके लिये तुम्हारे चरित्रको 'स्केन्डल' बनाते हैं, जो मिलने पर धुली कलफ लगी-सी सफेद हँसी हँस कर तुमसे बात करते हैं और तुम्हारे मुँह फेरतेही तुम्हें गालियाँ देने लगते हैं, जो मनुष्यकी कीमत उसकी मनुष्यतासे नहीं, उसके धन-बल और पदसे लगाते हैं, जो नारीको नारी नहीं केवल कोलतारकी सड़कोंकी शोभा समझते हैं, उन्हें तुम जंगली नहीं समझते ? इन सड़े-गले गाँवोंमें रहनेवालोंकी आत्मामें कम-से-कम यह कलमष तो नहीं, इनकी पसीने की कमाईमें बेईमानीकी घासलेटी बदबू तो नहीं और इनके खून पर पाउडरकी सफेदी भी नहीं चढ़ी है...तुम्हारे शहरके लोग इन गाँवके किसान मजदूरोंकी फौलादी बाहों और सात्विक विश्वासोंका मुकाबला कर सकेंगे...!" और काकाको खाँसी आ गई, उनका मुँह लाल हो गया।

"नाराज़ क्यों होते हो, काका !" रघुनाथ ने काकाको शान्त करते हुए कहा—"मैं तो यह सब तुमसे इसलिए कह रहा था कि यहाँके निर्जीव वातावरणमें मुझे शान्ति नहीं मिलती। यहाँ तो समय काटे नहीं कटता। दिल्लीमें कम-से-कम दफ्तर, क्लब, सिनेमाघर...!"

"हाँ, हाँ ! तुम्हारे लिये तो शान्ति शहरकी भीड़ और क्लबकी रंगीनीमें ही है, न ?"

"हाँ काका, इनमें ही तो शान्ति है। कामकी भीड़में, क्लबके खूबसूरत वातावरणमें और सड़कोंकी उन्मत्त चहल-पहलमें एक शान्ति है जिसमें आदमी स्वयंको खो देता है, भूल जाता है। काका, शान्ति आत्मविस्मरणके अतिरिक्त है ही क्या? और यहाँ क्या है? गोबरकी दुर्गन्धमें पाला हुआ उबकाई लालेवाला वातावरण, उदास गलियाँ और ऊँवते हुए रोगी से खपरैलोंके मकान जहाँ प्रगतिके प्राण छटपटा रहे हैं। मुझे तो इनमें कुरूपताके अतिरिक्त कुछ भी नहीं दिखाई देता। कहाँ वह दिल्लीकी शीशे-सी चमचम करतीं विशाल सड़कें जिनका न कोई ओर है न छोर। सड़कोंके किनारे लगे हुए हरे-घने पेड़ जिनकी परछाइयाँ सबेरा होते ही अपनी जड़ों-को चूम लेती हैं और फैल जाती हैं, हरे-भरे लॉन, उन पर खेलते-कूदते लड़के-लड़कियाँ...और फिर उन सबका शामके नीले कुहरेमें डूब जाना... मुझे यह सब बहुत अच्छा लगता है काका?"

"बन्द कर अपनी कविता!" काका शहरके इस गुणगानसे कुछ चिढ़से गये—"तेरा तो दिमाग़ खराब हो गया है। गाँवकी स्वच्छ हवा तो दिखती नहीं शहरकी गन्दी हवाकी तारीफोंके पुल बाँध रहा है, जो रात-दिन ऊँची-ऊँची हवेलियों और मिलोंकी चिमनियोंमें कैद रहती है। कहाँ यहाँका प्राकृतिक जीवन निर्द्वन्द्व, उन्मुक्त और बाधाहीन और कहाँ समयकी बेड़ियोंमें बँधा हुआ शहरी जीवन जो प्रकृतिसे बहुत दूर है। इस कृत्रिम सभ्यताने उसे क्या दिया है—झूठी शान, ऊपरी चमक-दमक और मानसिक चिन्ता। शहरके जीवनमें शान्ति कहाँ है रघु? लोगोंके मन टटोल कर देखो तो... तो तुम्हें वहाँ कालिमा दिखाई देगी, कुंठाएँ दिखाई देंगी और विद्रोह दिखाई देगा। प्रकृतिसे खिलवाड़ कर अपने चारोंओर वह अपने ही बनाए भौतिक बन्धनोंमें फँसते जा रहे हैं। पैसा...पैसा...पैसा! इसके अतिरिक्त किसी भी वस्तुका अस्तित्व उनके लिये है ही नहीं। उनके लिए न ईश्वरका महत्त्व है, न ईमानका, न इन्सानका।"

"पैसा जीवनका आवश्यक अंग है आप यह क्यों भूल जाते हैं।" रघु-नाथने काकाको बीचमें रोकते हुए कहा—"उनके बगैर आवश्यकताओंकी पूर्ति हो ही नहीं सकती, अतः उसे कमाना पड़ता है, उसे पाना ही पड़ता

है । क्या ये गाँवके लोग पैसोंके लिए खून-पसीना एक नहीं करते, क्या ये अपनी मेहनत शहरोंकी मंडियोंमें ले जा कर चाँदीके टुकड़ोंके बदले नहीं बेचते हैं ?"

"हाँ, पैसोंकी ज़रूरत उन्हें भी है और धन ये भी कमाते हैं लेकिन इनके साधनोंमें पवित्रता है जबकि शहरी साधनोंमें अपवित्रता । इनकी कमाईसे मेहनतकी सोंधी खुशबू आती है और शहरी धनसे बेईमानीकी बदबू की..."

"तुमसे बहस करना बेकार है काका ।" रघुने ऊबते हुए कहा और एक सिगरेट जला कर आराम कुर्सी पर पैर फैला कर बैठ गया । सिगरेटके छल्लोंमें वह शहरी जीवनके सपने देखने लगा । काकाने भी बहसको यहीं समाप्त कर देना उचित समझा और अपनी पुस्तक उठा कर फिरसे डूब गए ।

:o: :o: :o:

हिन्दन नदी अपनी मर्यादाएँ तोड़ आँखें बन्द किये उन्मत्त वेगसे बढ़ रही थी । किनारों पर खड़े पेड़, कच्चे-पक्के पुल, स्नान घाट उसकी लहरोंमें डूब चुके थे । चन्दोलवालोंने देखा कि उनके उत्तरकी ओर स्थित ग्रामवासियोंकी झोपड़ियोंके छप्पर, बाँस-बल्ली, घास-फूसके बंडल बहे चले जा रहे हैं । देख-देख कर लोगोंके दिल डूबे जा रहे थे । बड़े-बूढ़े कहते थे कि १९२४ में हिन्दनमें इससे भी बड़ी बाढ़ आई थी । उस समय हिन्दनके किनारे स्थित प्रायः सभी गाँव डूब गये थे । गाँववालोंके पुरखोंके बने हुए मकान, हरे-भरे लहलहाते खेत और उनके अनमोल जानवर सब हिन्दनकी भेंट चढ़ गये थे । बड़े-बूढ़ोंने उस बाढ़का जो वर्णन किया था । उसे सुन कर नौजवानोंके सामने प्रश्न उपस्थित हो जाता कि क्या बीस साल बाद हिन्दन सबको बेघर बनाएगी ? बाढ़ और उसके बादका विनाश क्या पुनः हिन्दन तीरके गाँवोंको खा जायगा ? नवयुवक जब यही बातें बड़े-बूढ़ोंसे पूछते तो वे मौन हो जाते और आकाशकी ओर इशारा कर देते । भारी आशंकासे लोगोंके मन काँप रहे थे । गाँवके निवासियोंने अपनी कीमती वस्तुएँ छतोंसे बाँध दी थीं जिससे अगर झोपड़ियोंमें पानी भर भी जाए तो उनकी वस्तुएँ

सुरक्षित रहें। चूल्हेके नीचे दबा हुआ धन और गेहूँमें छिपाये हुए रुपये लोगोंकी अन्टियोंमें बँध गये।

हिन्दनका जल इन सब तैयारियोंसे बेखबर किनारोंको तोड़ता पल-पल बढ़ता जा रहा था, बढ़ता जा रहा था।

:o: :o: :o:

चन्दोल ग्रामके प्रायमरी स्कूलके हेडमास्टर चन्द्रप्रकाश तिवारीको बाढ़की विशेष चिन्ता नहीं थी। टीले पर स्थित स्कूलके पास ही उनका घर था। आँगनमें बाँसकी खाट पर बैठ कर वह चैनसे एक पुस्तक उलट-पुलट रहे थे। तभी परमानन्द वैद्यकी आवाज उनके कानोंमें पड़ी..."

"चन्दू भैया, अरे ओ चन्दू भया, बहरे गए हो क्या ?"

"कौन पदम भैया, आओ न, आओ !" खाट पर बैठे-बैठे ही चन्दूने कहा।

"अरे भई क्या कर रहे हो ? ...आते हुए पदम ने कहा और आ कर उसी खाट पर जिस पर चन्दू बैठा था, वह धँस गये।

"ये 'चरित्रहीन' पढ़ रहा था, शरद् बाबूका। अभी-अभी समाप्त किया है, बड़ा सुन्दर है ! पदम भैया, कितनी गहरी पैठ थी शरद् बाबू की ! उनकी कलम मनको एकदम छू जाती है और आँखसे आँसू जबरदस्ती चू पड़ते हैं।"

"अच्छा तो तुम कितनी बार रोये जरा बताओ तो ?" पदमने पूछा।

"मज़ाक नहीं पदम भैया, तुम शरद् को पढ़ कर तो देखो ! तुम्हारी आँखमें भी..."

"पता नहीं कैसे पढ़ लेते हो तुम इतना !" परमानन्द ने गम्भीर होते हुए कहा—"जब देखता हूँ तुम्हें पढ़ता ही पाता हूँ। क्यों पढ़ते हो इतना ?"

"मन कमजोर होता है पदम भैया ! उसके पास काम न हो तो वह शैतानका घर बन जाता है और तब शक्ति देनेकी बजाय वह क्षीणता देता है, मनुष्यको खा जाता है। मैं नहीं चाहता भैया कि वह मुझे भी खा जाए।"

"तुम ठीक कहते हो चन्दू, मनको कभी खाली नहीं रखना चाहिए। तुम्हारा साहित्य-प्रेम देख कर मेरी तबीयत प्रसन्न हो जाती है। मैं जब अपने जीवनकी घटनाओं पर दृष्टिपात करता हूँ तो सिवा भूलों और निष्क्रियताके उसमें कुछ नहीं पाता।"

"भूलें भी हमारे जीवनको गति देती हैं, पदम भैया ! वह भी क्रमके विशेषरूपमें हमारे जीवनका महत्त्वपूर्ण अंग हैं और इतिहास हमेशा इन्सान को आगे बढ़ाता है।"

"कितनी विशालता है तुम्हारे सोचने में ! शान्त जीवन है न तुम्हारा, इसीलिये बस, विचारोंमें जीवित रहते हो तुम ! यहाँ तो..."

"शान्त जीवन है," थोड़ी व्यंगात्मक हँसी हँसते हुए कहा चन्द्रप्रकाश ने--"काश जीवनकी शान्ति मुझे मिल सकती ! ऊपरसे शान्त दीखनेवाले सागरके अन्तरालमें भी अग्नि छिपी होती है भैया ! मौन दिखाई देनेवाला ज्वालामुखी भी हृदयमें विस्फोट छिपाये होता है,... पर लोगोंकी दृष्टि तो सतह पर ही जाती है न। काश, अपने अन्तरमें घुमड़ते कड़वे धुएँको मैं दिखा पाता जो मेरे प्राणोंको घोंटे जा रहा है। जिस व्यक्तिने अपने एक भी उद्देश्यमें सफलता न पाई हो, जिसकी सारी आकांक्षाएँ, अतृप्तिका शिकार होकर रह गई हों, जो केवल स्वप्नोंके सहारे रेंगता रहा हो... उसके जीवनमें भी कहीं शान्तिका निवास हो सकता है ? मैं अध्ययन करना चाहता था पर मैट्रिकके बाद मैं एक परीक्षा भी न दे सका; साहित्यमें रुचि थी, सोचता था कुछ लिखूँगा-पढ़ूँगा पर वहाँ भी कुछ न कर सका, वर्तमान सिर्फ कमाने और पेट भरने तक सीमित है और भविष्य... भविष्य इतना अन्धकारमय है कि आँखें फाड़-फाड़ कर देखनेके बाद भी आशाकी एक किरण भी नहीं दिखाई देती !... सिवाय असफलताके मुझे मिला ही क्या है, बताओ पदम भैया ?"... और चन्द्रप्रकाशका गला भर आया।

गला साफ कर चन्द्रप्रकाशने उस टूटे तारको फिर पकड़ लिया--"मुझे ऐसा लगता है पदम भैया कि मेरा व्यक्तित्व एक डरपोक कुत्ता है जो रूखी-सूखी खाकर शान्त पड़ा हुआ है, भौंक भी नहीं सकता। निष्क्रियता और अलालीसे जिसे प्रेम हो गया है, जड़ प्रेम ! खतरोंसे जो बचना चाहता है।

पिछले पाँच सालोंसे इस स्कूलसे चिपका पड़ा हूँ, गुलामी कर रहा हूँ और शायद जिन्दगी भर यही करता रहूँगा। चाँदीके चन्द टुकड़ोंके लिये, कीड़े-मकोड़ोंकी ज़िन्दगी बितानेके लिये ही मैं पैदा हुआ हूँ। मेरी रगोंमें न जोश है, न तूफान, न परिस्थितियोंसे लड़नेकी ताकत। ताकत है तो बस इतनी कि चाकरी बजा दी और पेटमें दो मुट्ठी दाने डाल दिये। काश, मेरे जीवनमें शान्ति होती, काश मेरी इच्छाएँ साकार हो पातीं, काश जो मैं चाहता था वह कण्ठसे, कलमसे फूट सकता. . ."

"पागल हो गए हो क्या ?" परमानन्दने चन्द्रप्रकाशको टोकते हुए कहा—"निराशा और उदासीनतासे सफलता नहीं मिलती भैया ! सफ-लता तो संघर्षसे मिलती है। तुम्हें ईश्वरने शक्ति दी है, लिख सकनेका सामर्थ्य दिया है, यदि रोनेकी बजाय तुम उसका उपयोग करो, इस जड़तासे ऊपर उठो तो कोई कारण नहीं कि तुम भी बड़े लेखक न बन सको।"

"बड़े लेखक न बन सको !" शब्दोंको चबाते हुए कहा चन्द्रप्रकाशने —"बड़ा लेखक क्या कोई यूँ ही बन जाता है। उसके लिए वैसा वाता-वरण, वैसी परिस्थितियाँ चाहिये, जिनमें वह प्रेरणा प्राप्त कर सके और शान्तिपूर्वक साहित्य-साधना कर सके। उस वातावरणके प्रभावमें कोई क्या लिख सकता है ? यहाँ पचास रुपयेकी प्रायमरी स्कूलकी मास्टरीमें ज़िन्दगीकी गाड़ी तो खिंचती नहीं. . ."

"श्री चन्द्रप्रकाश साहित्य-आराधक जी ! परिस्थिति और वाता-वरणके नामसे झींकने-रोनेसे कुछ नहीं होता, समझे ! 'मर्द वे हैं जो ज़मानेको बदल देते हैं।' खाली बैठे-बैठे विचार सागरमें डुबकियाँ लगाते रहनेसे कुछ नहीं होता। 'जिन बूड़ा तिन पाइयाँ' . . . यह नहीं कि यह नहीं है, वह नहीं है।" . . . और अन्तिम शब्द कुछ इस तरह मुँह बना कर कहे परमानन्दने कि चन्द्रप्रकाशको हँसी आ गई।

"फिर भी भैया, मनमें विचारोंका घात-प्रतिघात तो होता ही रहता है।" —हँसते हुए चन्द्रप्रकाशने कहा।

"हाँ, और अब आपके मनमें इस घात-प्रतिघातके कारण से ऊल-जलूल विचार उठने लगे हैं कि यदि यही हाल रहा तो आपको आगरा जानेकी नौबत आ जाएगी ?"

दोनों फिर ज़ोरसे हँस पड़े ।

"चन्दू, ओ चन्दू !" यह चन्द्रप्रकाशकी बड़ी बहन राधाकी आवाज थो जो रसोईके पास खड़ी थी ।

"हाँ दीदी, क्या कह रही हो ?" जोरसे चन्द्रप्रकाशने कहा ।

"अरे तुझे गप मारनेका मौका मिल जाए फिर क्या कहना है । कुछ सुध-बुध ही नहीं रहती । आज खाना नहीं खाना है क्या ?" कहती हुई राधा चन्द्रप्रकाशके पास स्वयं पहुँच गई—"चल उठ, अन्दर चल कर पहले खाना खा ले, मुझे मन्दिर जाना है । पदम भैया तुम्हें भी भूख-प्यास नहीं है क्या ?"

"मैं भी जा ही रहा हूँ, वहाँ अम्मा घर पर बैठी-बैठी मुझे कोस रही होंगी । एक बात है दीदी, तुम कुछ दिनोंके लिये मन्दिर जाना छोड़ दो, तो कुछ हर्ज है क्या ?"

हाथ मटकाती हुई राधा बोली—"क्यों रे मैं मन्दिर जाना क्यों छोड़ दूँ ? तुम दोनों तो नास्तिक हो ही, मुझे भी नास्तिक बनाना चाहते हो क्या ?"

अब परमानन्दकी बारी थी । चट बोल उठे—"नहीं रधिया भगवान् करे तुम सबसे श्रेष्ठ आस्तिक बनो; पर बात यह है कि हिन्दन नदीमें बाढ़ आई हुई है । तुम्हारा मन्दिर नदीके किनारे है जिसका पानी पल-पल बढ़ रहा है, इसीलिए..."

"बस-बस रहने दे । बाढ़ आए चाहे बाढ़का बाप आए मैं अपना नियम नहीं तोड़ सकती । चन्दू जब तक पिता नहीं बन जाता मैं मन्दिरमें रोज़ फूल चढ़ाने और पूजा करने जाती रहूँगी और..."

चन्द्रप्रकाशने राधाकी बात पूरी नहीं करने दी—"दीदी, अगर कोई तीसरा मेरे घर आनेके लिये तैयार नहीं है तो तू क्यों परेशान होती है । हम ऐसे ही ठीक हैं । पदम भैया ठीक कहते हैं तुम कुछ दिनोंके लिये मन्दिर जाना छोड़ दो तो..."

"अरे, बस कर जिसकी रक्षा भगवान् करते हैं, उनका बाढ़ क्या कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता ।" कहती हुई राधा चलने लगी तो चन्द्रप्रकाश

हताश हो बोल उठे—"धन्य है भारत की नारी, वह भी ब्राह्मण कन्या और उस पर कान्यकुब्ज ! पता नहीं यह भारत कहाँ जाएगा ।"

परमानन्द और चन्द्रप्रकाश दोनों हँस पड़े और रधिया अपनी धुनमें मन्दिरकी ओर चल पड़ी ।

हँसीका दौरा जब शान्त हुआ तो परमानन्दने कहा—"अबे चन्दू जब मैं रधिया की ओर देखता हूँ तो तेरे आगे सिर मेरा स्वयं झुक जाता है । अगर तू उसका साथ नहीं देता तो कमल जैसी कोमल रधिया का पता नहीं क्या होता ?"

"पदम भैया, मैं तो दीदीसे छोटा ही था, मैंने जो कुछ किया मेरा कर्तव्य ही था । पर तुमने क्या कुछ कम किया है बड़े भाईके रूप में ! और फिर भैया मैं तो सगा भाई था, मुझे करना ही पड़ता लेकिन तुम...! "

"क्या मतलब ? क्या मैं रधियाका सगा भाई नहीं हूँ ? अरे रधिया जब सात वर्षकी थी तबसे मुझे राखी बाँध रही है और तू कहता है...!" —कहते हुए उन्होंने चन्दूके कान पकड़ने के लिये अपना हाथ बढ़ाया ।

"हाँ-हाँ, भई आप उसके बड़े भाई हैं मानता हूँ... मानता हूँ ।" और चन्दू हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया ।

उन बढ़े हुए हाथोंको परमानन्दने रोका नहीं अलबत्ता कान पकड़नेके बदले उसके दोनों हाथ पकड़ कर उसे समीप खींच लिया—"बैठ-बैठ, भागा कहाँ जाता है !"

परमानन्द, चन्द्रप्रकाश और रधिया चन्दोल ग्राममें ही जन्मे थे । चन्दोलके खेतों और गलियोंमें इनका बचपन जवान हुआ । जब परमानन्दकी माँ मरी तब चन्दू और रधियाकी माँ ने उसे अपनाया था और तीनोंमें उम्रमें बड़ा होनेके कारण वह 'पदम भैया' कहलाता । वैसे पदमके परिवार और चन्दूके परिवारमें कोई रिश्तेदारी नहीं थी । सम्बन्ध था तो केवल इतना कि दोनों एक ही ग्राम के वासी थे । चन्दू कान्यकुब्ज ब्राह्मण तिवारी परिवारके थे और पदम सरयूपारी ब्राह्मणके मिश्र परिवारके ।

दोनोंने प्रारम्भिक शिक्षा अपने गाँवमें प्राप्त की । फिर चन्दू दिल्लीके एक स्कूलमें भरती कर दिया गया और पदम वहीं गाँवमें रह कर वैद्यक

सीखने लगा। चन्दू कुछ पिताके भेजे पैसोंसे, कुछ स्कूलके वजीफेसे और कुछ ज़मींदारके छोटे भाईके घरमें कष्ट सह कर, दिल्लीमें मैट्रिक तक पढ़ गया। मैट्रिककी परीक्षा दे कर वह गाँव आया तो पिताने रधियाका ब्याह पासवाले गाँवमें किसान रमन से कर दिया। १९३३ की शरद् ऋतुमें रधिया बाबुलका घर रोती-बिलखती छोड़ कर चली गई।

चन्दूको राधाका जाना अच्छा नहीं लगा। परीक्षासे थक कर वह आया था और राधासे खूब गपशप करना चाहता था, परन्तु उसकी बातें उसके मनमें ही रह गईं। राधाके जानेके बाद उसे घर अच्छा न लगता, दिन भर इधर-उधर भटकता फिरता, थक जाता तो परमानन्दके घर जा कुछ देर आराम कर लेता। इसी बीच मैट्रिक परीक्षाका नतीजा निकला। चन्द्र प्रथम श्रेणीमें पास हुआ अतः उसने किसी प्रकार आगे पढ़नेका निश्चय किया और नतीजा ज्ञात होनेके दूसरे दिन दिल्ली चला गया।

६ वर्ष... रधियाके ससुरालवालोंने उसे खूब दुःख दिया। वे चाहते थे कि रधिया मर जाए जिससे उनके बेटेकी दूसरी शादी हो जाए और फिरसे घर दहेजसे भर जाए। रधियाके पिताके पास रधियाके सुखके लिए सिवाय इसके कोई दूसरा रास्ता नहीं रहा कि वे चन्द्रप्रकाशकी बजाय रधियाके ससुरालवालोंकी माँग पूरी करते जाएँ। इन्हीं छै वर्षोंमें पदम भैया परमानन्द वैद्य बन कर चन्दौल और आसपासके गाँवोंमें प्रसिद्ध हो गये।

इस बीच चन्द्रप्रकाश दिल्लीमें ही रहा परन्तु उसे अपने उद्देश्यमें सफलता नहीं मिली। जमींदारके छोटे भाईने उसे अपने घरमें रखनेसे मजबूरी प्रकट कर दी। घरसे पैसे भी नहीं आए और रधियाके ससुरालकी बातें जान उसने भी घरवालोंको लिख दिया कि वह उसकी चिन्ता न करें। इस छै सालकी अवधिमें खाने और पहनने लायक धन कमानेके अतिरिक्त वह कुछ नहीं कर सका। इसी बीच उसकी माताका देहान्त भी हो गया। कुछ दिनों बाद उसे परमानन्दका पत्र मिला। लिखा था—

प्यारे चन्दू,

रधिया विधवा होगई। मैं आज उसे घर ले आया हूँ। तुम्हारे पिताजीकी तबियत ठीक नहीं है। रधिया उनकी सेवामें लगी है। अब या तो तुम

यहाँ लौट आओ या दोनोंको वहीं ले जाओ। वापसी डाकसे उत्तर देना।

तुम्हारा ही
पदम भैया

पत्र पढ़ते ही चन्दू दिल्लीसे चन्दोलके लिये चल पड़ा।

रधियाके विधवा होनेकी बात याद कर परमानन्द बोले—"जब रधिया विधवा हुई चन्दू तब तुमने उसकी दुर्गति नहीं देखी। उन लोगोंने एक-एक चीज़ रखवा ली और फटी धोतीमें रधियाको घरसे बाहर निकाल दिया। जब मुझे खबर लगी तो भागता हुआ उसके गाँव गया और उसे लिवा लाया। फिर मैंने तुझे चिट्ठी लिखी।"

"पता नहीं पदम भैया, पिताजीके बाद हम दोनों बहन-भाई पर इतना दुःख क्यों टूट पड़ा! जब पिताजी थे तब तो शायद हर मुसीबत जैसे समीप रह कर भी दूर ही रहती थी। जब मैं चन्दोल लौट कर आया तो किसी तरह रूखी-सूखी खा कर रधियाके साथ खुश रहता था। लेकिन नीच ग्राम-वासियोंसे यह भी न देखा गया और उन्होंने हमारे चरित्र पर कीचड़ उछा-लना शुरू कर दिया। जब वे ही बातें याद आती हैं तो जी करता है कि मिठवा और कल्लूका गला घोंट दूँ।" चन्द्रप्रकाश ने कहा।

"कड़वी बातोंको याद नहीं करते चन्दू, उनसे किसी का भला थोड़े ही होता है। तुझे तो मालूम है कल्लू और मिठवा तो ज़मींदारके मुँह चढ़े नौकर हैं और जमींदारको तुम्हारा खेत-मकान हड़पना था इसलिये वह तुम्हें गाँवसे भगाना चाहता था। उसीने सब झूठी बातें फैलाई थीं गाँवमें।"

"इसी नीचताके कारण तो एक बच्चा भी नहीं हुआ घरमें। अब क्या करेगा गरीबोंसे बटोरे इतने धन को?"

"करेगा क्या? हराम का धन जैसा आता है वैसा ही जाता भी है।"

"खैर, जो हुआ सो हुआ, परन्तु मुझे लगता है, पदम भैया कि शादी करके मैंने अच्छा नहीं किया।"

"अरे पगले, शादी न करता तो तुम्हारी और रधियाकी बदनामी और न होती। उसके बगैर उन बातोंको रोकना भी कठिन था।...अरे... अरे, देख तो रधिया हाथमें क्या लिये आ रही है—जल्दी-जल्दी!'

और दोनों खड़े होकर मंदिर की ओर जानेवाले मार्गको देखने लगे। दो क्षण बाद ही राधा उनके सामने थी। राधाकी गोदमें एक चार वर्षीय लड़की थी जो बेहोश थी। राधा उन्हें देखते ही चिल्लाई—"इसे जल्दी घर ले चलो, बेचारी बेहोश है।"

तीनों घर आए। परमानन्दने बच्चीको उल्टाकर दो-तीन झटके दिये तो बच्चीकी नाक और मुँहसे पानी निकला, उसके गीले कपड़े निकाल-कर उसे कम्बलसे लपेट दिया गया। राधाने बच्चीके पैरमें सरसोंका तेल मलना शुरू किया और कहने लगी—"सारा गाँव नदीके किनारे खड़ा है। उत्तरकी ओरसे लाशें बह-बह कर आ रही हैं। सुना है एक नाव उलट गई थी। ये बच्ची न जाने कैसे मन्दिरवाली पौढ़ियोंके पास आ लगी तो मैं कुछ पानी में उतर कर इसे उठा लाई। उत्तरके गाँववाले गाँव छोड़-छोड़ कर भाग रहे हैं।"

"मुझे लगता है दीदी हम लोगोंको भी गाँव छोड़ कर जाना पड़ेगा।" परमानन्द ने कहा।

"अगर ऐसा भी हुआ तो हम कैसे जा सकते हैं? इस बच्चीके माँ-बापको तो ढूँढ़ना पड़ेगा।" चन्द्रप्रकाशने सोचा।

"अरे छोड़ो इस चक्करको! इस लड़कीके माँ-बाप खुद इसे ढूँढ़ते आएँगे। उसकी चिन्ता तू क्यों करता है?"

"नहीं, नहीं, यह मुझसे नहीं होगा। ये मेरे पास अपने माँ-बापकी अमानत है और उन तक इसे पहुँचाना ही पड़ेगा।" चन्द्रप्रकाशने दृढ़तासे कहा।

"अच्छा-अच्छा, पहुँचा देना लेकिन पहले गाँववालोंकी चल कर खबर ले लें।...अरे देखो बच्ची होशमें आ रही है! दीदी तुम इसे थोड़ा दूध गर्म करके दे देना, हमलोग अभी आते हैं।" परमानन्दने कहा और उठ खड़े हुए। चन्द्रप्रकाश भी उन्हींके साथ जानेको तैयार हो गए और बच्चीको रधियाके हवाले कर दिया।

:o: :o: :o:

हिन्दनके पानीको गाँवमें भरता देख चन्दोलके लोग नदीके किनारेके ऊँचे टीले पर इकट्ठे हो गये। औरतें अपने घरोंसे झोपड़ियोंसे निकल-

निकल कर आपसमें चर्चा करने लगीं। छोटे-छोटे बच्चे अपनी माताओंकी गोदमें डर कर दुबक गए। सभीके मुखों पर चिन्ता साफ झलक रही थी। सभीके सामने एक ही प्रश्न था अब क्या करना चाहिये ? हर क्षण ढेर-सा पानी नदीके किनारेको चौड़ा करता जा रहा था। गाँवकी गलियोंमें पानी पहुँच गया। गाय-भैंस बाँ-बाँ चिल्लाने लगीं। बैल अपने खूँटोंसे रस्सी तुड़ानेका प्रयत्न करने लगे। गाँवमें कोहराम मच गया। किसीकी समझमें कुछ नहीं आ रहा था कि क्या किया जाय ? अखाड़ेवाला ननकू पहलवान और उसके शिष्य कुछ करना चाहते थे, परन्तु क्या करना चाहिये इसका ज्ञान उन्हें भी नहीं था। कांग्रेस सेवादलके सेवक अपने नेता चन्द्रप्रकाश तिवारीको पथ-निर्देशनके लिये ढूँढ़ रहे थे। बूढ़े पंडितको कुछ नहीं सूझा तो दौड़ कर मन्दिरमें घुस गया और "जय हनुमान" के नारे लगा-लगा कर मन्दिरके घण्टे जोर-जोरसे बजाने लगा।

तभी नन्हकू पहलवानकी नजर चन्द्रप्रकाश और परमानन्द पर पड़ी। "हनुमानजी की जय" का नारा लगा ननकू अपनी शिष्य मण्डलीके साथ उनकी ओर बढ़ा। सेवादलके सदस्य भी अपने नेताकी ओर दौड़ पड़े। चन्द्रप्रकाश, परमानन्द, ननकू और सब स्वयंसेवकोंने पूरे गाँवका, बढ़ते हुए पानीका और भावी खतरेका निरीक्षण किया और इसी नतीजे पर पहुँचे कि गाँव छोड़ कर चले जाना ही ठीक होगा। अखाड़ेके शिष्य, सेवादलके स्वयं-सेवक और प्रायमरी स्कूलके बड़े लड़के घूम-घूम कर यह संदेश घर-घर दे आए। साथ ले जाने के लिए औरतोंने अपने जेवर, कपड़े और सत्तू पोटलियोंमें बाँध लिये। आदमियोंने बैलगाड़ियाँ जोत लीं। यह कार्य चल ही रहा था कि अखाड़ेकी दीवार गिर पड़ी और चम्पा ग्वालिनकी झोपड़ी हिन्दनकी भेंट चढ़ गई। फिर भी चम्पा अपनी गाय, भैंसोंको छोड़ कर जानेके लिये तैयार नहीं हुई। हनुमान मन्दिरके बाहर रहनेवाला अपाहिज मन्टू भी गाँव छोड़नेके लिए तैयार नहीं हुआ।

कुछ गाँववाले पहले गाँव छोड़नेके लिये तैयार नहीं थे, फिर गाँवमें पानी भरता देख और टूटती हुई झोपड़ियाँ देख कर गाँव छोड़नेके लिए तैयार हो गए।

दो घण्टेके भीतर ही स्टेशनकी ओर जानेवाली सड़क पर चन्दोल ग्राम के प्रायः सभी लोग चल पड़े ।

हिन्दनका पानी अंधाधुन्ध गाँवमें घुस रहा था । भीड़के पीछे कुछ गाय-भैंसें और बकरियाँ भी थीं । चन्दोलके अन्तिम भाग पर बसे लोगोंका कुछ पता नहीं चल रहा था । मालूम नहीं वे वहीं डूब मरनेकी राह देख रहे थे या किसी दूसरे रस्तेसे स्टेशनकी ओर चल पड़े थे ।

चन्दोलके निवासियोंके हृदयमें ऐंठन हो रही थी क्योंकि उन्हें उस मिट्टी-को छोड़ना पड़ रहा था जहाँ उनके बचपनने रेतके घिरौंदे बनाए थे, जहाँ उनके पूर्वजोंकी हड्डियोंने इतिहास बनाया था और जहाँ की जवान फसल उनकी मेहनतकी कहानी कहती खड़ी थी । लोग हसरत भरी नजरसे मुड़-मुड़ कर गाँवकी ओर देख लेते और फिर आगे चल पड़ते । स्त्रियोंकी आँखें भर आई थीं, बूढ़ोंके चेहरे लटक गए थे और जवानोंको चिन्ताने घेर लिया था । सब अपने-अपने विचारोंमें डूबे आगे बढ़ रहे थे—चुपचाप !

चलते-चलते राधाने मुट्ठी भर मिट्टी उठा कर उस पोटलीमें बाँध ली जिसमें नयी प्राप्त बच्चीकी फ्राक, जूते और कानके बुँदे बँधे थे । बच्ची चन्द्रप्रकाशके कंधों पर सिर रखे शान्तिकी नींद सो रही थी और चन्द्रप्रकाश अपनेमें खोए हुए थे ।

:o: :o: :o:

उधर कैप्टन रघुनाथ अपनी बच्चीके खो जानेके कारण जल्द-से-जल्द दिल्ली लौटना चाह रहे थे । सेना टुकड़ीको वहीं छोड़ वह अपने परिवारके साथ जीपसे दिल्ली आ गए और तीव्र गतिसे बच्चीकी खोजका कार्य आरम्भ किया । रेडियो पर कैप्टन रघुनाथकी चार वर्षीया बच्ची 'बेबी'के खो जाने के ऐलान हुए । इश्तहार छपे । अखबारोंमें खबर दी गई । कैप्टन रघुनाथ अपना काम-धाम छोड़ कर दिन रात उसी धुनमें लग गए और काका तो जैसे पागल ही हो गये हों । बेबी उनकी लाडली बच्ची थी, कुछ ही दिन पहले उन्होंने बेबीको नये बुन्दे पहनाए थे । तीन दिनके अथक परिश्रमके बाद कैप्टनसाहबको पता लगा कि हिन्दन नदीके बहावमें बह कर जो लाशें मिली हैं उनको पहचानना... अब मुश्किल है । कैप्टनसाहब फिर भी उन

लाशोंको देखने गए वहाँ कई बच्चोंकी लाशें कैप्टन रघुनाथको दिखाई गईं जिनके चेहरे विकृत हो चुके थे और जिनको पहचाना जाना बड़ा कठिन था। मन भारी लेकर कैप्टन रघुनाथ लौट आए, उन्हें विश्वास हो गया कि उनकी प्यारी बेटी उन्हें सदाके लिए छोड़ गई।

:o: :o: :o:

रेल्वे-स्टेशन पहुँचते-पहुँचते चन्द्रप्रकाशके साथ करीबन पचास-साठ लोग इकट्ठे हो गये। कुछ देर बाद शाहदराको जानेवाली गाड़ीमें ये बेघर-बार लोग जा बैठे। चन्द्रप्रकाश दिल्लीसे परिचित थे अतः उन्होंने दिल्ली जानेके बदले शाहदरा जाना ही अधिक पसन्द किया। ट्रेन चल पड़ी।

चन्द्रप्रकाशका मन गाड़ीकी तीव्र गतिसे भी तेज भाग रहा था। बाहर पटरियों और रेलके पहियोंका संघर्ष कोलाहल उत्पन्न कर रहा था और भीतर चन्द्रप्रकाशके अन्तरका द्वन्द्व। बादलोंसे भरा आसमान, बीचमें टुकड़ोंमें बँटी हुई चाँदनी, ओस भीगे भागते हुए तारके खम्भे, उनींदे पेड़ और चन्द्र-प्रकाशका अशान्त मन! चन्द्रप्रकाशको याद आया—जिस दिन वह गाँव आया था उस दिन भी ऐसी ही अशान्ति और चिन्ता उसके मन पर छाई हुई थी... वह चिन्ता थी... रधियाके भविष्यकी... और जब वह गाँवसे फिर दिल्लीकी ओर जा रहा है, तो भी उसका मन भविष्यके अन्धकारसे पीड़ित है। वह सोच रहा था कि वह शापग्रसित एक धूमकेतु है जो जलती पूँछ लिए टूट रहा था।

दो घंटे बाद ट्रेन शाहदरा पहुँच गई। तब साढ़े आठ बजे थे। चन्द्र-प्रकाश भी अन्य साथियोंके साथ वहाँ उतर गये और प्लेटफार्म पर भावी कार्य-क्रम निश्चित करने बैठ गये। औरतें सत्तू घोल-घोल कर बच्चोंको देने लगीं।

चन्द्रप्रकाश परमानन्द आदिके साथ जगह ढूँढ़ने निकले जहाँ ठहरा जा सके। स्टेशनके पासही एक धर्मशाला थी जहाँ ठहरनेका प्रबंध हो सकता था। करीब नौ बजे चन्द्रप्रकाश सबको ले कर वहाँ पहुँचे। धर्मशालाके चौकीदारसे सेठ लालचन्दजीको रातमें ही यह समाचार प्राप्त होगया था कि धर्मशालामें कुछ बाढ़ पीड़ित आकर ठहरे हुए हैं। सेठजी कांग्रेसी आदमी

थे और धर्मनिष्ठ कहलाते थे। कहते हैं कि जब उनके चारों बेटे जीवित थे तब वह बड़े कंजूस थे, अपने काश्तकारोंसे एक-एक पैसा बड़ी बेदर्दीसे वसूल करते थे। परन्तु हुआ कुछ ऐसा कि एक ही वर्षमें उनके चारों बेटे शिवको प्यारे हो गए और लालचन्दजीका जीवन बदल गया है।

सुबह होते ही सेठजी अपने मुनीमजीके साथ धर्मशाला पहुँचे और बाढ़ पीड़ितोंसे मिले। बाढ़-पीड़ितों का नेतृत्व चन्द्रप्रकाश कर रहे थे उन्होंने बाढ़ और बाढ़-पीड़ितोंका पूरा विवरण सेठजीको दे दिया। सेठजीने परमानन्दजीको परमार्थ औषधालयमें लगा दिया और चन्द्रप्रकाशको शाहदराके मिडिल स्कूलमें मास्टरी दे दी। ननकू पहलवानके लिए एक अखाड़ेकी व्यवस्था करनेका वचन दे दिया तथा अन्य लोगोंको भी यथासमय काम ढूँढ़ देनेका वचन दिया। उन्होंने यह भी कहा कि बाढ़ समाप्त होने पर वे सबको वापस भेजनेका प्रबंध कर देंगे। सेठजीके इस आश्वासनसे लोगोंके हृदयोंमें एक खुशीकी लहर दौड़ गई। सेठजीने उनके खाने-पीनेका प्रबंध भी कर दिया और चले गये।

खाने-पीने और भविष्यकी ओरसे निश्चिन्तता हो जाने पर लोगोंको सैर-सपाटेकी सूझी। चन्द्रप्रकाश और परमानन्द दिल्लीका चक्कर लगाने निकल गए, चन्द्रप्रकाशको दिल्ली देखे बहुत दिन हो गये थे, अतः उन परिचित स्थानोंको पुनः देख उन्हें बड़ी खुशी हो रही थी।

चन्द्रप्रकाश जब लौटे तो साथमें ढेर-से खिलौने, फ्राक, एक तोता और कुछ चाकलेट बिस्किट खरीद लाए। नया फ्राक पहना, खिलौनेके बीच गुड़िया-सी बच्चीको बिठा राधाने उसका नामकरण किया. . . गौरी।

चन्द्रप्रकाशने सबको बताशे बाँटे और गौरीको गोदमें ले लिया। राधाकी आँखें भर आईं। पिंजरेमें तोता "राम-राम" कहने लगा।

अध्याय : २ :

नई दिल्ली की कन्टूनमेंट रोड कोलतार की लम्बी, सीधी सुनसान सड़क है। दोनों ओर घने हरे पेड़ हैं। रातके समय एक-रस जलती हुई सड़कके किनारे-लगी रोशनियाँ बड़ा मनोहर दृश्य प्रदान करती हैं। इसी रोड पर स्थित बीस नम्बरके बँगले पर एक खूबसूरत किन्तु छोटा-सा बोर्ड लगा है 'कैप्टन रघुनाथ'। जैसे ही कोई कैप्टनके घरमें प्रवेश करता है, उसे घर तक जानेके लिये बजरीकी पगडंडी पर चलना पड़ता है जिसके दोनोंओर फूलोंकी क्यारियाँ और हरा-भरा लान है। यह पगडंडी प्रवेश द्वारको घरके पोर्टिकोसे मिलाती है। पोर्टिकोके बाद है घरका बरामदा फिर बैठक और अन्य कमरे।

यह शानदार घर कैप्टनसाहबको स्वतंत्रताके बाद मिला था। पहले इस मकानमें कोई अंग्रेज रहता था। स्वतंत्रताकी खुशी कैप्टनसाहबके लिये इस मकान रूपी उपहारमें सुरक्षित है। इस मकानका उनके लिए 'ऐतिहासिक' महत्त्व है। शरणार्थियोंके आनेका समाचार उन्होंने इसी मकानमें सुना था। कई बार कैप्टनसाहबकी ड्यूटी शरणार्थी कैम्पोंमें लग चुकी थी। कैप्टनसाहबके मुखसे उनकी पत्नी हेमा इन शरणार्थियोंके दुखड़े अनेक बार सुन चुकी थी। इसी मकानमें रहते उन्होंने महात्मा गाँधीके हत्याकांडकी खबर सुनी थी। तीस जनवरी १९४८ की रातको दिल्लीमें उपस्थित प्रायः समस्त सैनिक टुकड़ी एवं पुलिस किसी न किसी ड्यूटी पर नियुक्त थी। कैप्टन रघुनाथ दूसरे दिन राजघाटमें ड्यूटी पर तैनात थे।

और उस दिन दस अक्तूबर १९५२ थी। बैठकमें इधर-उधर घूम फिर-कर कैप्टन रघुनाथकी पत्नी हेमा न जाने क्या विचार लिये घरकी छत पर चली गयी। कच्ची पीली चाँदनी फैली हुई थी, पास की मस्जिदका मीनार नीरवतामें डूबा हुआ था, नीला आसमान किसी गहरी चिन्तामें था किन्तु तारे चंचल बालकोंसे मुस्करा रहे थे। कुछ देर इधर-उधर चहलकदमी कर हेमा नीचे लौट आयी और अपने कमरेमें चली गई...भों...भों...भों

...भौं ! टामी भौंक-भौंक कर घरको सिर पर उठाने लगा । रूबी बैठकके कमरेमें बैठी "ट्रू रोमान्सेज" नामक पत्रिका पढ़ रही थी और बीच-बीचमें टामीको वर्जना भी करती जा रही थी—"टामी शट-अप टामी...!"

परन्तु टामीके कानोंमें जूँ भी नहीं रेंग रही थी । वह ठहर-ठहर कर भौंकता ही जा रहा था । बीच-बीचमें उसके गलेमें बँधी जंजीरकी खन-खन सुनाई पड़ रही थी । बैठकमें लगी घड़ीने टन-टन कर दस बज जाने की सूचना दी ।

टामीकी भों-भोंसे परेशान होकर रूबीकी माँ...हेमा...झुँझला कर पोर्टिकोमें आईं और टामीको डाँटने लगीं । परन्तु टामी हेमाकी तरफ देख कर और भी भौंकने लगा । बार-बार गलेमें पड़ी जंजीरसे मुक्त होनेका वह प्रयत्न करता । हेमाको टामीकी हरकत समझनेमें देर नहीं लगी । उसे मालूम था कि रोज शामको कैप्टनसाहब टामीको सैरके लिये ले जाते थे और आज वे ले नहीं गए ।

वह ले भी कैसे जाते ? दफ्तरसे घर तो लौटे नहीं बस दफ्तरसे फोन कर दिया—"डार्लिंग, मैं आज जरा देरसे आऊँगा, एक्सक्यूज़ मी !" और इसके पहले कि हेमा देरसे आनेका कारण पूछे उन्होंने रिसीवर रख दिया । हेमाके तन-बदनमें आग लग गई । आज उसे अनाथाश्रममें जाकर बच्चोंको लड्डू कपड़े वगैरह बाँटने थे । बेबीको खोये आज पूरे आठ वर्ष बीत गये थे । हेमा और काकाको दृढ़ विश्वास था कि अनाथ बच्चोंको मिठाई देते रहनेसे बेबीको भी रोटी-पानी मिलता रहेगा... चाहे वह इस दुनियामें हो या दूसरी दुनियामें ।

कैप्टनके न आनेका समाचार पा कर हेमा काकाको लेकर टैक्सीसे अनाथाश्रम चली गई थी । जब टैक्सी अनाथाश्रमसे लौट रही थी तो रास्तेमें हेमाने देखा कि कैप्टनसाहब एक बनीठनी नारीके साथ डेह्लीकोज़ रेस्टोरेन्टमें घुस रहे थे । काका सिर लटकाए किसी विचारमें खोए थे अतः उन्होंने रघुनाथको नहीं देखा । घर लौटने पर काका भारी मन ले अपने कमरेमें बेबीका फोटो लिये बैठ गए । हेमा भी अपने कमरेमें बेबीकी भोली स्मृतियोंके बीच खो-सी गई थी कि टामीने उस गम्भीर क्षणकी एकाग्रताको भौंक-

भौंक कर नष्ट कर दिया। टामीका भौंकना बन्द होता न देख हेमाने टामीकी जंजीर खोल दी। टामी भौंकता-भौंकता घरसे बाहर चला गया।

हेमाके मनमें कभी बेबीके खो जानेकी बात उभरती तो कभी अपने पतिकी। उनकी नारियोंके प्रति सहज कोमलता उसे कचोटने लगती। उसे मालूम था कि उसका पति चरित्रवान् था... परन्तु फिर भी प्रत्येक नारीके प्रति इस प्रकार उदार और सहृदय हो जाना, उसके साथ घूमना-फिरना, सिनेमा देखना, रातमें देर तक उनके साथ रहना क्या अच्छी बात है? कितनी ही औरतोंसे जान-पहचान है उनकी। कोई इस अफसरकी पत्नी है तो कोई उस अफसरकी बिगड़ी बेटी, कोई अमुक कालेजकी प्रोफेसर है, तो कोई अमुक कालेजकी विद्यार्थी। पता नहीं ये कहाँसे टकरा जाती हैं उनसे... और ये भी कैसे हैं हर किसीसे सुलझ जाते हैं। हेमाकी समझमें यह बात नहीं आ रही थी कि उसमें किस बातकी कमी है... वह सुन्दर है, स्वस्थ है, अच्छा गा सकती है, नाच सकती है, खेल सकती है... और उसके साथ हर जगह जा सकती है; फिर उन्हें दूसरी नारियोंके साथ घूमनेकी क्या आवश्यकता है?

और उसे वह दिन याद आ गया जब रघुनाथ उसके प्रेममें पागल था और उससे विवाह करनेके लिये उतावला था। हेमाने रघुनाथकी खातिर अपनी एम. ए. की पढ़ाई छोड़ दी और उससे विवाह कर लिया। उसी प्रेम-विवाहमें घर आई पत्नीके गुण तब न जाने कहाँ हवा हो गये जो पतिको नित्य नयी नारीके पीछे दौड़ना पड़ रहा है।

पोर्टिकोमें रघुनाथने कार रोक कर हेमाको एकदम चौंका दिया।' कारसे उतरते हुए रघुनाथ ने कहा—"डार्लिंग, तुम अभी तक सोई नहीं?'

"नहीं, आज मुझे देखना था कि आप कब तक लौटते हैं?"

"आई एम सारी हेमू, आज दफ्तरमें बहुत काम था और..."

"और वह काम डेह्लीकोज़में पूरा हो रहा था।" हेमा ने कहा।

रघुनाथ समझ गया कि उसका झठ बोलना व्यर्थ हुआ। उसका मन उसे कोसने लगा। हेमासे पहली बार झूठ बोलनेका प्रयत्न उन्होंने किया और पहली बार ही उनके हाथ असफलता लगी। उन्होंने हेमाकी ओर

देखा और मुस्कराये। एक क्षण बाद हेमाका हाथ पकड़ा और बैठककी ओर चल पड़े। हेमाने हल्का झटका देकर अपना हाथ छुड़ाया परन्तु रघुनाथका साथ नहीं छोड़ा; उनके पीछे-पीछे वह भी कमरे में पहुँच गई।

बैठकमें माता-पिताको आता देख कर रूबी वहाँसे भाग खड़ी हुई। बैठकमें पहुँचतेही हेमाने प्रश्न किया—"कौन थी वह ?"

"तू नाराज़ हो गई रे, हेमू ?" रघुनाथने प्रश्नके उत्तरमें दूसरा प्रश्न किया।

"मैं गई चल्हेमें और मेरी नाराज़गी गई भाड़में; आपने कभी मेरे नाराज़ होनेकी पर्वाह भी की है।"

"सच मान हेमा जब तू नाराज होती है तो मुझे बहुत डर लगता है ?"

"इसीलिए रोज नई-नवेलियोंके साथ इधर-उधर घूमते रहते हो। तुम्हारी इन रंगरलियोंसे मुझे बड़ी खुशी होती है ?"

"हेमा, तुमसे कह कर जाता हूँ तबभी नाराज होती हो, और आज झूठ बोल कर गया तो...!"

"कह कर जाओ या बिना कहे, इससे क्या फर्क पड़ता है। दुनिया भरकी औरतोंके साथ इधर-उधर रंगरलियाँ करते-फिरते हो, मेरी सुध तक नहीं लेते और ऊपरसे बातें बनाते हो ?"

"हेमू तुम समझती नहीं, इन औरतोंकी बड़ी-बड़ी समस्याएँ हैं, उलझनें हैं। बेचारी अपना दुखड़ा रोने मेरे पास आ जाती हैं।"

"दुखड़ा सुनने और सुनानेके लिये एक तुमही रह गये हो, बाकी सब मर्द तो उठ गए हैं दुनियासे ? और फिर दुखड़े सुनने-सुनानेके लिये बढ़िया-बढ़िया कपड़ेकी, लिपिस्टिक-पाउडरकी डेव्हीकोज़की क्या जरूरत पड़ती है ? यदि यही रासलीला खेलनी थी तो मुझसे ब्याह ही क्यों किया ?" हेमाका गला भर आया। रघुनाथने उसे अपने अंकमें भरनेके लिये अपना हाथ बढ़ाया किन्तु हेमा तमक कर अपने कमरेकी ओर चल दी। रघुनाथ समझ गये कि आज हेमाको मनाना बहुत मुश्किल है। अतः वह भी अपने कमरेकी ओर चले गये और जाकर कपड़े बदल लिये। हेमाके कमरेकी बत्ती बुझ चुकी थी। दो-चार बार हेमाके कमरेका दर्वाजा खटखटाने

पर भी जब उन्हें कोई जवाब नहीं मिला तो हार कर वह मेहमानखानेमें सो गया ।

:o: :o: :o:

दो दिन तक रघुनाथके घरमें श्मशानकी-सी शान्ति छाई रही। विचारोंकी रेतमें वाणी शुतुरमुर्गकी तरह सिर गड़ाये थी। घरके चारों प्राणी मूक थे ।

काका खोई बेबीकी विभिन्न कल्पनाओंमें लीन थे। कभी वह उन बुन्दोंको याद करते जो उन्होंने बेबीके लिये बड़े चावसे बनवाये थे और जिसकी सुन्दरता पर सभी मोहित थे। पहले-पहल जब बेबीने उन बुन्दोंको पहना था, तब हेमाने उसे हल्के नीले रंगकी फेरी फ्राक, सफेद मोजे और लाल जूते पहनाये थे । बेबी गुड़िया-सी सजी सबकी गोदीकी शोभा बढ़ा रही थी । काकाको डर था बेबीको कहीं नजर न लग जाय और हेमासे कह कर उन्होंने बेबीके माथे पर काली बिन्दी लगवा दी ।

काकाका बेबीके प्रति अत्यधिक प्रेम सबके आश्चर्यका विषय बना हुआ था। कुछ कहते दोनोंकी राशि एक है, कुछ कहते बेबीकी तुतली बोलीने काकाको मोह लिया है, परन्तु बेबीके इस स्नेहके पीछे काकाका वह अधूरा स्नेहस्रोत था जो आधी राहमें ही सूख गया था । बत्तीस वर्षकी आयुमें काका का विवाह हुआ था। काका अपनी पत्नीको बहुत चाहते थे। दोनोंके प्रेमसूत्रको दृढ़ करनेके लिए जैसे 'डाली' का आविर्भाव हुआ। 'डाली' दोनोंकी आँखोंका तारा थी। किन्तु 'डाली' पाँच वर्षकी भी नहीं हो पाई कि वे विधुर हो गए। पत्नीका वियोग उन्होंने 'डाली' को देख कर भुलाना चाहा परन्तु विधाताको काका का यह सुख भी नहीं देखा गया और सात-सालकी डाली दो दिनके बुखारमें ही इस संसारसे कूच कर गई।

उसके बाद काकाने विवाह नहीं किया। घर-गृहस्थीकी झंझटमें वह नहीं फँसे। अपनी नन्हीं बेटीसे वह बिछुड़े थे परन्तु उन्हें बच्चोंका मोह भी नहीं रहा। बस वह अपनेमें खोये रहते।

हेमा गर्भवती थी, उन्हीं दिनों की बात है। काकाको स्वप्नमें डाली दिखाई दी। काकाके गलेसे वह लिपट गई। काकाके कानोंमें अमृत घोलते

हुए उसने कहा—"मैं तुम्हारे पास फिर आ रही हूँ, रूबीकी छोटी बहन बनकर लेकिन तुम मुझे इस बार अलग न करना।" और काकाने डालीके दोनों गालोंको चूम-चूम कर कहा था—"नहीं डाली अब मैं तुझे अपनेसे अलग नहीं करूँगा... कभी नहीं करूँगा बेटी! बस तू एक बार लौट आ फिर देखना मैं तेरे लिए भगवान्से भी लड़ लूँगा।"

डालीने कहा "सब चावा" और खिलखिलाकर हँस पड़ी। काकाकी आँखें खुल गईं।

दूसरे दिन सुबहकी चाय पीते-पीते उन्होंने वह स्वप्न हेमासे कहा और खुशी-खुशी भविष्यवाणी कर दी कि रूबीको बहन ही होगी। यह भविष्य-वाणी हेमाको अच्छी नहीं लगी। वह तो इस बार बेटेका मुख देखना चाहती थी। कैप्टन रघुनाथ तटस्थ रहे, उन्हें इस भविष्यवाणीसे किसी प्रकारका सुख-दुःख नहीं हुआ।

दिन बीते, और काकाकी भविष्यवाणी बेबीके रूपमें साकार हुई। काकाको अपने स्वप्नकी सत्यताका पूरा भरोसा हो गया। उनकी दुनियामें चहल-पहल मच गई। सेनासे विश्राम प्राप्त काकाके पूरे समयकी एकाधि-कारिणी हो गई बेबी। वह बेबीके लिये नित नई वस्तुएँ खरीद कर लाते और रात-दिन उसे गुड़िया-सा सजाये रहते।

और फिर वह दिन भी आया जब बेबी खो गई। काका का स्वर्ग लुट गया। काकाको 'डाली' की सपनेमें कही बात बार-बार याद आती—"लेकिन तुम मुझे इस बार अलग न करना!" और उसकी वह हँसी। काका मन मसोस कर रह जाते। उनकी न खानेमें रुचि रही, न पहनने-ओढ़नेमें? अब संसारमें वह थे और बेबी की स्मृति थी। काकाके मनके किसी कोनेमें एक आशा छिपी हुई थी। यह आशा थी बेबीके जीवित रहनेकी। उन्हें अनुभव होता बेबी मरी नहीं है और वह किसी दिन उन्हें अवश्य मिलेगी। उस स्वर्णिम दिवसकी प्रतीक्षामें उन्होंने आठ वर्ष बिता दिये।

कैप्टन रघुनाथका मन भी भारी था। उनको घरकी चुप्पी खाये जा रही थी। वे चाहते थे कि हेमा सदा खुश रहे, रोज सुबह उन्हें हँसते मुस्कराते दफ्तरके लिये विदा करे और रोज़ शामको उनका इन्तजार पोर्टिकोमें खड़ी

रह कर किया करे। हेमाको वह बहुत चाहते थे और यह भी जानते थे कि हेमा उस सत्यको अच्छी तरह जानती थी। फिर भी यह हेमा जरा-जरा-सी बात पर रूठ जाती है। रघुनाथ सोचते मैं कहीं भी जाऊँ आखिर उसीका हूँ। उसकी खुशी ही तो मेरी खुशी है। वह खुश रहती है तो कितना भला लगता है, मैं भी खुश रहता हूँ और जब वह उदास हो जाती है तो कितना बुरा अनुभव होता है, प्रत्येक वस्तु बुरी लगने लगती है, मन बोझिल हो जाता है। दफ्तरमें भी मैं ठीकसे काम नहीं कर सकता।

इतने साल साथ रह कर भी हेमा मुझ पहचान न सकी। वह इतना भी नहीं समझती कि यदि कोई चाय या डाँसके लिए बुलाने आए तो 'एटीकेट' के नाते... 'यस दी प्लेजर इज़ एन्टायरली माइन' कह कर... उनका साथ देना ही पड़ता है। हेमाको यह सब अनेक बार समझाया भी है परन्तु वह कुछ सोचने-समझनेको तैयार हो तब न? जबसे बेबी खोई है तबसे उसे न जाने क्या हो गया है? कहीं चलनेको कहो तो एकदम नहीं कह देगी और अगर सौ-बार मनाने पर वह गई भी तो सारे समय गुमसुम बैठी रहेगी। न वह पहली-सी हँसी रही उसके पास न वह मीठी-मीठी बातें। अब उसे कैसे समझाया जाय कि दुर्घटनाके कारण सम्पूर्ण जीवनको दु:खी नहीं बनाया जा सकता। एक छोटे-से दु:खके लिए समस्त जीवनको नीरस बनाना बुद्धिमानी नहीं सरासर बेवकूफी है।

हेमाको बेटीका विछोह और पतिका अन्य नारियोंके प्रति आकर्षण खाये जा रहा था। उसे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। मन मारनेके लिये भी उसके पास कोई वस्तु नहीं थी।

रूबी 'ट्रू रोमान्सेज' की दुनियासे होती हुई प्रेमियोंके कल्पना संसारमें पहुँच चुकी थी। रूबीने कई बार अपने माता-पिताको आलिंगनबद्ध देखा था। वह माता-पिताकी बातों को कान लगा कर सुनती थी। उसकी समझमें नहीं आता था कि दूसरी नारियोंके साथ पिताका घूमना इतना बुरा क्यों समझा जाता है? 'ट्रू रोमान्सेज' में नायकोंका एकसे अधिक नारियोंसे सम्पर्क रहता था। उसके कॉन्वेन्टमें भी कई लड़के-लड़कियाँ पढ़ती थीं। वह जिसके साथ चाहते हैं घूमते-फिरते और खेलते हैं, परन्तु

कोई बुरा नहीं मानता । पियानो पर जब स्कूलमें नाच सिखाया जाता है तब सदा एक लड़का दूसरी लड़कीके साथ नाचता है, जोड़ियाँ बनती हैं । उसे भी रोज किसी-न-किसी लड़केके साथ नाचना पड़ता था परन्तु कॉन्वेन्टमें इस बात पर कोई किसीसे शिकायत न करता था । कभी-कभी उसे लगता माँ बहुत पुराने खयालोंकी हैं और पिताजीको बिना किसी कारण तंग करती हैं ।

रूबी अपने पिताजीको बहुत चाहती थीं । पिता सदा उसे प्यार करते थे, गोदमें बिठाते थे, कॉन्वेन्टकी बातें पूछते थे और चाकलेटके ढेर-से डिब्बे ला कर देते थे । जब कभी उसे पैसोंकी जरूरत पड़ती वह चुपचाप पितासे ले लेती, क्योंकि माँ बिना सौ हुज्जतके कभी पैसे नहीं देती थी । रूबी काकासे सदा दूर रहती थी । वह जानती थी काका उसे पसन्द नहीं करते । उसकी एक-एक बातसे काका को जैसे चिढ़ थी, अतः वह या तो पड़ोसके बच्चोंके साथ खेलती या घर बैठ कर 'ट्रू रोमान्सेज़' पत्रिका चोरी-चोरी पढ़ती ।

घरमें दो नौकर थे । एक तीस पैंतीस वर्षीया आया और दूसरा सत्ताईस-अट्ठाइस वर्षीय खानसामा । दोनोंका घरमें मनमाना राज्य था । वे जो काम करते वह हो जाता, जो न करते वह नहीं होता । कोई उन्हें कुछ कहने-सुननेवाला नहीं था । बढ़ियासे बढ़िया खाते और बढ़िया-से-बढ़िया पहनते । वह दोनों घरकी परिस्थितिसे बहुत खुश थे, परन्तु घरमें उपस्थित सन्नाटेसे परेशान थे ।

"ए सुमित्रा, घरका सन्नाटा मुझे खाये जाता है । जी करता है नौकरी छोड़ कर चला जाऊँ ।" याकूब खानसामे ने सब्जी काटते हुए कहा ।

"भई हम नौकरकी जात . . . ! हमारा धर्म है काम करना । मालिकके घरमें क्या हो रहा है,क्या नहीं हो रहा है इससे हमें क्या मतलब ? ठीक समय पर मेज पर चाय नाश्ता पहुँचता रहे, खाना लगता रहे, घर साफ-सुथरा रहे, बस । बाकी बातोंसे हमें क्या मतलब ?"

"अरे तू तो मुझसे पुरानी नौकरानी है, तुझे घरकी भलाई-बुराईसे भी कुछ मतलब रखना चाहिये । जब हम किसीके घर नौकर होते हैं तो उसकी भलाई-बुराईका भी हमें ख्याल रखना चाहिये ?"

"रहने दे, इस घरमें भलाई किससे शुरू करेगा ? मालिकको गैर औरतोंसे फुरसत नहीं, तो मालकिनको रोनेसे । बेटीको वह गन्दी-गन्दी 'फोटू' वाली किताबोंसे फुरसत नहीं मिलती और बूढ़े काकाको सोचनेसे ।"

"इसीलिये तो मैं कहता हूँ कि कुछ करना चाहिये । दो-तीन दिन हो गये मेरा इतना बढ़िया खाना कोई मन लगा कर खा ही नहीं रहा है ।"

"तो हम क्या करें ?" तुनक कर सुमित्राने कहा और चुने हुए चावलोंकी थाली मेज पर रख दी ।

"हाँ, तुझे क्या ? बचा हुआ खाना जमादारको खिला कर भलाई करती है और मौका मिले तो सब्जीवालेको खिला देती है ।"

"बचा हुआ खाना किसीको न खिलाऊँ तो क्या नालीमें फेंक दिया करूँ ?" गुस्सेसे सुमित्राने कहा ।

कुछ मुस्करा कर सब्जी काटना छोड़ याकूबने उसे चिढ़ाते हुए कहा—"इसीलिए तो सब्जीवाला बूढ़ा तुझे याद करता है । जब कभी मुझे वह बाजारमें मिलता है तो तेरे बारेमें जरूर पूछता है ।" और याकूब हँस पड़ा ।

सुमित्राको गुस्सा आ गया । त्यौरियाँ चढ़ाते हुए बोली—"शर्म नहीं आती तुझे बेवासे ऐसी बात करते हुए । जबसे मेरा आदमी मरा है मैंने कभी गैर मर्दकी तरफ मुँह उठा कर देखा भी नहीं और तू ऐसी गन्दी बात कहता है ।"

"अरे, अरे ! तू तो गुस्सा हो गई, मैंने तो तुझे चिढ़ाया था । देख, मैं तेरा भाई हूँ न ? 'भइया दूज' के दिन कहा था न तूने... ले थूक दे गुस्सा ! हलवा पकाऊँ तेरे लिये ?"

"....."

"ले बाबा कान पकड़ता हूँ" याकूबने कान पकड़ते हुए कहा... "अब कभी ऐसी बात कहकर तुझे नहीं चिढ़ाऊँगा, बस !"—और दोनों मुस्करा कर अपने-अपने काममें लग गये ।

दो दिनके सन्नाटेसे ऊब कर रघुनाथने एक चाल चली । सबेरे उठते ही वह नौकरों पर बिगड़ा । कभी यह पटका, कभी वह । आया खानसामा डरके मारे कैप्टनकी नजरोंसे दूर हो कर रसोईमें काम करने लगे । फिर

तकदीरका मारा धोबी ग्रा गया। कैप्टन उसी पर बरस पड़े—"तुम कपड़े ठीकसे क्यों नहीं धोते, न कलफ ठीकसे लगाते हो न इस्तरी ठीक करते हो. . . ग्राजसे ग्रपना हिसाब ले कर ग्रलग हो जाग्रो।" . . . बेचारे धोबीकी समझमें कुछ नहीं ग्राया। वह देखताका देखता ही रह गया। कभी कुछ न कहनेवाले साहब ग्राज इतना क्यों कह गये ? कैप्टन कुछ ग्रौर दो-चार सुनाना चाहते थे लेकिन मुड़ कर देखने पर उन्हें ज्ञात हुग्रा कि धोबी गायब हो चुका है।

कुछ देर बाद वह बड़बड़ाते हुए नहाने चले गये ग्रौर तैयार हो कर बिना कुछ खाये-पिये घरसे निकल पड़े।

हेमाको पतिका बिना खाये-पिये जाना बहुत बुरा लगा। ग्रपने गिले शिकवोंको भूल कर दफ़्तर टेलीफोन किया. . . पहले घंटी बजी, फिर रिसी-वर उठा कर कहा—

"कैप्टन रघुनाथ स्पीकिंग !"

"मैं हूँ हेमा ग्राप. . . !"

ग्रौर कैप्टनने रिसीवर नीचे रख दिया।

हेमाकी ग्राँखोंमें ग्राँसू ग्रा गये। ग्राज उसे पति पर क्रोध नहीं ग्राया, स्वयं पर ग्राया। उसकी निरर्थक ज़िदने ही उसके हँसमुख पति को ऐसा निर्मम बना दिया कि उन्होंने उससे दो बात भी नहीं की। दिन भर भूखे रहेंगे वह ग्रलग। क्या पतिको इसी प्रकार सुख दिया जाता है ?"

कुछ देर बाद जब ग्राया नाश्तेके लिए बुलाने ग्राई तो हेमाने उसे यह कह कर टाल दिया कि उसे भूख नहीं है। हाँ, रूबी ग्रौर काकाको नाश्ता करा देनेकी हिदायत उसने ग्रवश्य कर दी।

सुबह फैल कर दोपहर हो गई ग्रौर दोपहर सिमटकर शाम। सात बज गये। नौकर रसोईमें काम कर रहे थे। काका ग्रौर रूबी सैर करने गये थे। हेमा पोर्टिकोमें खड़ी पतिके ग्रागमनकी प्रतीक्षा कर रही थी।

कैप्टनसाहब सुबहका नाश्ता, दोपहरका खाना ग्रौर शामकी चाय ग्रॉफीसर्स मेसमें ले चुके थे। परन्तु उन्हें मालूम था कि हेमा दिन भरकी भूखी प्रतीक्षा कर रही होगी। ग्रत: ठीक सात बजे घर लौट ग्राये। कार
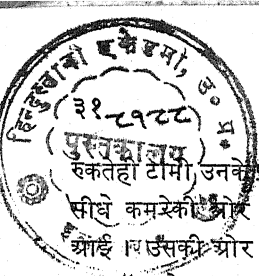
रुकतेही टॉमी उनके पास पहुँच गया । कैप्टनने उसकी गर्दन थपथपाई और सीधे कमरेकी ओर चल दिये । उनके पीछे-पीछे हेमा भी उनके कमरेमें आई । उसकी ओर पीठ किये हुए ही रघुनाथने पूछा—

"तुमने खाना खा लिया ?"

"......"

कुछ उत्तर न पा कर उन्होंने अपना प्रश्न फिर दोहराया तो उत्तर मिला—

"नहीं ।"

"क्यों नहीं खाया तुमने ?"

"भूख नहीं लगी ।"

कैप्टन रघुनाथने मुड़ कर हेमाकी ओर देखा तो हेमा रो पड़ी । कैप्टन-का मन पिघल गया । वह हेमाके समीप आ गये और उसे अपनी मजबूत बाँहोंमें कैद कर लिया । हेमा पतिके वक्ष पर सिर रख कर फूट-फूट कर रो पड़ी ।

न जाने कितने पल ऐसे ही बीत गये और जब कैप्टन रघुनाथने हेमाको अपने सीनेसे अलग कर उसकी आँखोंमें झाँकते हुए पूछा—"अब नाराज तो नहीं हो ?" तो हेमा "ऊँहूँ !" कह कर मुस्करा उठी ।

"पगली !" रघुनाथने कहा और दोनों जोरसे हँस पड़े ।

:o: :o: :o:

कैप्टन रघुनाथके घरका तूफान शान्त हो गया । घरमें प्रत्येक का जीवन पुनः व्यवस्थित हो गया और सामान्य वातावरण हो गया । उदासीकी तह जो जिन्दगी पर छा गई थी, धीरे-धीरे उतर गई और उसकी जगह ताज़गी ने लेली । चाय, नाश्ता, लंच, डांस—सभी पूर्ववत् होने लगे ।"

उस दिन अचानक आयाकी तबीयत खराब हो गई । खानसामा दो दिन पूर्व ही अपनी माँकी मृत्युका समाचार सुन कर छुट्टी पर चला गया था । फलस्वरूप रसोईका भार हेमाके सिर आ गया ।

हेमा रसोईघरमें चाय बनानेके लिये घुसी तो वहाँकी स्थिति देख उसका सिर घूम गया । सारे बर्तन जूठे पड़े थे । रातका बचा हुआ खाना खुला

पड़ा सूख रहा था। एक बर्तनभी साफ नहीं था। उसने नौकरोंसे कई बार कहा था कि रातके जूठे बर्तन रातमें ही साफ करके सोया करो पर नौकरोंको उसके हुक्मकी क्या चिन्ता? वह तो लाट साहब हैं, किसीका हुक्म कैसे सुन सकते हैं?

हेमाने स्टोव जलानेकी कोशिश की तो पता लगाकि उसका तार जल चुका है। मिट्टीके तेलका स्टोव देखा तो उसमें मिट्टी का तेल नदारद था। मिट्टीके तेलका टीन भी खाली पड़ा था। हार कर उसने अँगीठीका सहारा लिया तो अँगीठीके कोयलेसे पहले अँगीठी फूँकते-फूँकते उसकी आँखें लाल हो गईं। बर्तन माँजनेके लिये उसने देगचीमें पानी गर्म करनेके लिये रखा ही था कि कैप्टन रघुनाथकी आवाज उसके कानोंमें पड़ी—

"हेमा तौलिया कहाँ रखा है? ब्रुशका भी पता नहीं लग रहा है!"

हेमा अभी पतिकी आवश्यकताओंको जुटा भी नहीं पाई थी कि रूबीने शोर मचाना शुरू किया कि उसकी कोईभी वस्तु नहीं मिल रही है। चिल्लाती हुई वह हेमाके पास पहुँची—"मम्मी, मेरे जूतेमें पालिश नहीं हुआ है, कपड़े भी बिना इस्त्रीके पड़े हैं...और...और!"

रूबी अभी अपना वाक्यभी पूरा नहीं कर पाई थी कि हेमाने दो-चार चाँटे उसके गोल गालों पर जड़ दिये। रूबी जोर-जोरसे रोने लगी। उसका रोना सुन कर कैप्टन रघुनाथ वहाँ आ गये। उन्हें हेमाका रूबीको पीटना अच्छा नहीं लगा। नाराज होकर हेमासे बोले—"क्या है? सबेरे-सबेरे रूबीको पीटने बैठ गईं!"

"देखा न, लड़कीकी जात है और अपना काम खुद नहीं कर सकती? पराये घर जायगी तो न जाने क्या करेगी।"

"मैं उसे नौकरानी बनानेके लिये नहीं पढ़ा रहा हूँ कॉन्वेन्टमें!"

"अपना या घरका काम करनेसे कोई नौकर नहीं हो जाता। आपने इसे सिर पर चढ़ा रखा है इसीलिये बिगड़ गई है।"

पिताको अपना पक्ष लेता देख कर रूबी कैप्टनसाहबसे लिपट गई। रघुनाथने उसे पुचकारा और उसको कमरेमें भेज दिया। रूबी अपने कमरेमें आ कर अपना क्रोध वस्तुओं पर उतारने लगी। जब कॉन्वेन्टकी बस आई तो रूबी तैयार नहीं थी। उस दिन वह कॉन्वेन्ट नहीं गई।

हेमा रसोईघरमें चायकी व्यवस्थामें लग गई । रूबीको उसने सहायताके लिये पुकारा तो उसने आनेसे साफ इन्कार कर दिया । काकाको रूबीका यह ढंग पसन्द नहीं आया । वह सीधे रूबीके कमरेमें गये और उसे आज्ञा दी कि वह रसोईघरमें जा कर काममें हाथ बटाए । रूबी काकाकी आज्ञाको न टाल सकी और बिसूरती हुई रसोईघरमें चली गई ।

माँको बर्तनोंके बीच उलझा देख उसे बड़ा गन्दा लगा । उसने आज तक कभी बर्तन नहीं धोए थे और न ही इस समय उसकी इच्छा उन्हें धोनेकी थी । काकाकी आज्ञाका पालन करना था अतः मजबूरी थी । उसने चाल चली, जल्दीसे साफ कपड़ेका टुकड़ा लेकर धुले बर्तनोंको पोंछ कर मेज पर रखना शुरू किया । हेमा उसकी चालाकी समझ गई । बर्तन साफ करनेके बाद हेमाने चाय और नाश्ता तैयार किया और मेज सजा दी । रूबी काका और पिताको बुला लाई ।

चाय पीते-पीते काकाने कहा—"हेमा, तुम रूबीको घरका काम नहीं सिखा कर बहुत बड़ी गलती कर रही हो ।"

हेमाने उत्तर दिया—"मुझसे क्या कहते हैं, इनसे कहिये जो रूबीको लड़कोंकी तरह पालना चाहते हैं ?"

"लड़कोंकी तरह पालो या लड़कीकी तरह । रूबी आखिर लड़की ही रहेगी और हर लड़कीको घरका काम काज सीखना बहुत ज़रूरी है ।" काकाने कहा ।

"यही तो मैं भी कहती हूँ इनसे । लड़की है, हम जिन्दगी भर तो इसे अपने घर नहीं रख सकते । एक-न-एक दिन ब्याह होगा, पराए घर जायेगी तो न जाने क्या करेगी ?"

कैप्टन साहबको काका और हेमाकी बातें पसन्द नहीं आईं । बीचमें ही बोल उठे—"हमारी एक ही बच्ची है और मैं नहीं चाहता कि वह नौकरानी का काम सीखे । दो नौकरोंसे काम पूरा नहीं होता तो तीन रख लो ।"

काकाको रघुनाथका यह निर्णय अच्छा नहीं लगा । नाश्ता समाप्त करनेके पश्चात वह उठकर सीधे अपने कमरेमें चले गए और अखबार पढ़ने लगे ।

रूबीको पिताकी बात बहुत अच्छी लगी । अगर वह पिताके इस निर्णयको पहले सुन लेती तो माँके साथ, जो थोड़ा-बहुत काम उसने किया

था, वह भी नहीं करती। नाश्ता समाप्त कर वह भी अपने कमरेमें चली गई।

हेमाने मौका देख कर कहा—"रूबीको आप अनुचित प्रोत्साहन दे रहे हैं। भविष्य किसने देखा है किसीका। आखिर घरका काम-काज सीख लेनेमें हर्ज क्या है?"

"अभी उसे सिर्फ पढ़ाई करने दो हेमा! एक सालमें वह जूनियर कैम्ब्रिज कर लेगी, दो साल बाद सीनियर कैम्ब्रिज। फिर मैं उसे विलायत भेज दूँगा... उसकी शादी क्या किसी ऐरे-गैरेसे होगी। कम-से-कम दो-तीन हजार रुपये महीना कमानेवाले से होगी, समझीं। हमारा धन भी किसका है? रूबीको ही तो मिलेगा।"

हेमा निराश होकर बोली—"खैर, बेटी आपकी है, जैसी इच्छा हो कीजिये। परन्तु मैं इतना अवश्य कहूँगी कि आप उसके जीवनको गलत साँचेमें ढाल रहे हैं और इसका फल आपको नहीं रूबीको ही भोगना पडेगा।"

"तू उदास क्यों हो गई हेमा! अरे, छोड़ इन बातोंको। मैं दफ्तर जाते ही नौकरका इन्तजाम कर दूँगा। वह दोपहरका खाना भी बना देगा... तकलीफ मत करना।"

और कैप्टन साहब नाश्ता समाप्त कर उठ गये। नित्य प्रतिकी भाँति हेमा ने उनके हाथ धुलवाये, उन्हें कोट पहनाया और पोर्टिको तक पहुँचाने गई। जैसे ही कैप्टन कारके पास पहुँचे टामी उनके समीप आ कर दुम हिलाने लगा। कैप्टन ने उसकी गर्दन थपथपाई और कारमें बैठ कर दफ्तर चल दिये।

उसी दिन दोपहरको दो बजे रूबी पड़ोसके घरसे आ कर हेमासे बोली, "ममी! शीला, शान्ति, उमा सब पिक्चर जा रही हैं, मैं भी जाऊँ?"

"कोई बड़ा आदमी भी जा रहा है उनके साथ?" हेमा ने पूछा।

"हाँ, अन्टी जा रही हैं।"

हेमा समझ गई कि पड़ोसिन भी जा रही है और उसने हामी भर दी। रूबी झटपट तैयार हो कर माँसे टिकटके पैसे ले कर सिनेमा चल दी।

माँ-बेटीकी बातें काका अप ` कमरेसे सुन रहे थे। रूबीको इस प्रकार दूसरोंके साथ जाने देना काका को अच्छा नहीं लगा। हेमाके निर्णयको वह उचित नहीं मान सके।

:o: :o: :o:

रूबी ने जूनियर कैम्ब्रिजकी परीक्षा दी और पास हो गई। वह अपनी क्लासके सामने अपनी साथकी लड़कियोंसे बात कर रही थी, उसने देखा कॉन्वेन्टके बागकी झाड़ियोंकी आड़में खड़ा जानी उसे इशारेसे बुला रहा है।

जानी कॉन्वेन्टमें सीनियर कैम्ब्रिजमें पढ़ता था। डान्समें वह प्रायः रूबीके साथ ही नाचता था। रूबीको उसका नाचनेका ढंग बहुत पसन्द था। वैसे, पसन्दकी क्षेत्रमें रूबी केवल जानीको ही पसन्द नहीं करती थी, वह जेम्सको भी पसन्द करती थी, क्योंकि वह क्रिकेट बड़ा अच्छा खेलता था। वह सुरेशको भी पसन्द करती थी क्योंकि वह पढ़ाईमें बहुत होशियार था और हर साल प्रथम आनेपर उसे मेडल मिलता था।

रूबीकी नजर फिर झाड़ियोंकी ओर गई, तो उसने जानीको पुनः इशारा करते हुए पाया। थोड़ी ही देरमें अपनी सहेलियोंका साथ छोड़ रूबी जानीके पास पहुँच गई। दोनों झाड़ियोंमें छिप गये। उन्होंने एक दूसरेको पास होनेकी बधाई दी। जानीने अपनी जेबसे चाकलेट निकाल कर रूबीको दी तो रूबी बोली—"क्या मैं चाकलेट ही खाती रहूँगी ?"

जानी एकटक रूबीको देख रहा था। रूबी एकाध बार उसकी आँखोंमें झाँक लेती और अपनी नजर झुका लेती। जानीसे रहा न गया उसने रूबीका हाथ अपने हाथोंमें ले लिया और उसे धीरेसे सहलाने लगा।

रूबी और जानीके सुखके क्षणोंको स्कूलकी घण्टी ने छोड़ दिया। वे दोनों झाड़ियोंसे निकल कर विभिन्न पगडंडियोंसे होते हुए बस नम्बर तीनमें आ बैठे। बस कॉन्वेन्टके विद्यार्थियोंको घर पहुँचानेके लिये चल पड़ी। बसमें रूबी गम्भीर बैठी थी, बीच-बीचमें सिर उठा कर जानीको देख लेती थी। जानी भी बार-बार उसकी ओर देख रहा था। बाकी विद्यार्थी गपशपमें खोये हुये थे। निर्दिष्ट स्थानों पर बस रुक जाती थी और विद्यार्थी उतर जाते थे। एक स्थान पर जानी भी उतर गया। आज रूबीको उसका

उतरना अच्छा नहीं लगा, परन्तु उसके अच्छा लगने या न लगनेसे क्या होता है, बस आगे बढ़ गई।

रूबी ने जैसे ही घरमें प्रवेश किया, उसने देखा कि सबलोग टी टेबिलके चारों ओर बैठे चाय पी रहे हैं और गपशप कर रहे हैं। रूबी दौड़ कर पिताके पास पहुँची और उसने अपने परीक्षामें सफल होनेका समाचार पिताजीको सुनाया। कैप्टन साहब ने खुशीमें तालियाँ बजाईं। हेमा और काका भी मुस्कराने लगे। रूबी ने पिताके कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा—"पापा, अब तो मैं आपसे पारकर पेन ले कर ही रहूँगी।"

उत्तर मिला—"हाँ, हाँ, बेटी अवश्य ले लेना! चाहो तो आज चल कर खरीद लो; या जिस दिन सीनियर कैम्ब्रिजमें दाखिल होगी उस दिन ले लेना।"

हेमा ने कहा—"फाउन्टेन पेन जब चाहो तब दिला देना परन्तु सीनियर कैम्ब्रिजके बदले रूबीको अब इन्द्रप्रस्थ स्कूलमें भरती करा दो तो ज्यादा अच्छा रहेगा। आखिर हम हिन्दू हैं, हमें अपनी बेटीको भी उसी तरह पालना चाहिये। यह रूबी बात-बातमें जीसस की दुहाई देती है, क्रॉस बनाती है। इन्द्रप्रस्थ स्कूलमें पढ़ेगी तो कुछ हिन्दू तौर-तरीके भी सीख जायेगी। बाइबल तो इसे खूब आती है पर रामायण-महाभारतकी एक कथा तक नहीं जानती।"

काका ने भी हेमाका समर्थन किया—"कॉन्वेन्टमें लड़के-लड़कियाँ साथ पढ़ते हैं। जब तक बच्चे छोटे होते हैं तो ठीक है परन्तु ग्यारह-बारह वर्ष बाद उन दोनोंको अलग-अलग स्कूलोंमें पढ़ाना ही ठीक होगा।"

दोनोंके विचारोंको सुन कर कैप्टन साहब ने रूबीकी ओर देखा—"क्यों! रूबी तुम्हारी क्या राय है?"

रूबी चटसे बोल उठी—"नहीं पापा, हम उसी कॉन्वेन्टमें पढ़ेंगे, प्लीज!"

कैप्टनसाहब ने हेमा और काका की ओर देख कर कहा—"मैं भी यही सोचता हूँ कि उसी कॉन्वेन्टमें पढ़ती रहे तो अच्छा हो। दूसरे स्कूलमें भरती

कराने से विषय बदल जायेंगे, पढ़ने-पढ़ानेका तरीका बदल जाएगा तो रूबी को मुश्किल होगी ।"

हेमाको यह बात रुचि नहीं । उसने कहा—"जैसी आपकी मर्जी ।"

काका ने चाय समाप्त की, वह उठ कर सैरके लिये जा ही रहे थे कि रघुनाथ बोले—"अगर रूबीको क्वींस मेरीमें भर्ती कर मैट्रिक कराया जाय तो कैसा रहे ?"

हेमा ने प्रसन्न हो कर कहा—"कॉन्वेन्टमें से तो यही अच्छा रहेगा ।" काका ने भी हेमाका समर्थन किया ।

:o: :o: :o:

पिताका निर्णय सुन कर रूबी प्रसन्न नहीं हुई । वह चाय पी कर अपने कमरेमें चली गई और 'ट्रू रोमान्सेज़' का नया अंक देखने लगी । प्रत्येक अश्लील चित्र उसे और अधिक रोमांचित करता । हर नारीके स्थान पर वह स्वयंकी और पुरुषके स्थान पर जानीकी कल्पना करती और फिर उसे आजकी बातें याद आ जातीं ।

उसकी समझमें नहीं आ रहा था कि उसके भीतर ही भीतर क्या हो रहा है, फिर भी मनमें वह बहुत प्रसन्न थी । एक मीठी-सी सिहरन उसके सारे शरीरको गुदगुदा रही थी । आज उसे अनुभव हुआ कि वह और जानी एक दूसरेकी ओर आकर्षित ही नहीं हैं, एक दूसरेको प्रेम भी करते हैं । वह प्रेम जो जानी ने आज अपने मधुर स्पर्शसे उस पर प्रकट किया था । माता और काकाका प्रेम जानीके प्रेमके आगे उसे एक दम फीका लगने लगा । हाँ, पिताके प्रेमके संबंधमें वह अभी भी कोई निर्णय नहीं कर पाई थी, फिर भी जानीके प्रेमके आगे वह कुछ-कुछ...!

हृदयकी प्रत्येक धड़कनके साथ उसे जानी याद आ रहा था । उन्हीं विचारोंमें वह न जाने कब तक खोई रहती कि आया ने बत्ती जला कर उसे चौंका दिया । कमरेसे उठ कर वह छत पर टहलने चली गई । छत पर उसने देखा कि जानी सामनेवाली सड़क पर चक्कर लगा रहा है । उसने इशारेसे उसे घरकी पीछेवाली गलीमें बुलाया । वह भी सबकी नजर बचा कर घरके पीछेके सब्जीबागसे होती हुई गलीमें जा कर जानीको ले आई ।

दोनों अँधेरेमें सब्जीबागमें बैठ गये। दोनोंकी धड़कनोंको एक करनेमें अमावस्याकी रात ने सहायता दी। इन नये प्रेमियोंको लगा कि चाँदनी रातसे अमावस्याकी रात अधिक अच्छी होती है।

कुछ समय बाद जब हेमा ने रूबीको घरमें नहीं देखा तो उसने आयाको पड़ोसके घरसे रूबीको बुलानेके लिये भेजा। वहाँसे लौट कर आया ने बताया कि वह किसी पड़ोसके घरमें नहीं है। आया रूबीको ढूँढ़ने निकली। पहले छत पर गई और फिर बागमें जाकर जोर-जोरसे वह उसे पुकारने लगी। जैसे ही रूबीके कानोंमें आवाज पड़ी उसने जानीको वहाँसे भाग जानेके लिये कहा और स्वयं खूब गोल चक्कर लगा कर सामनेवाले बागमें आ कर फिर वहाँसे घरमें घुसने लगी।

हेमा ने उसे देखा तो डाँट कर बोली—"कहाँ मरने गई थी? घरमें रहा नहीं जाता!"

रूबीको भी गुस्सा आ गया, क्योंकि उसकी सुखद घड़ियोंको माँकी खोज ने नष्ट कर दिया था।

"कहीं मरने नहीं गई थी, बागमें ही बैठी थी। बस करने लगीं इतने से के लिये हाय-हाय!" और पैर पटकती हुई वह अन्दर चली गई। अन्दर जाकर उसने जोरसे किवाड़ बन्द कर दिया और जानीका पत्र खोल कर पढ़ने लगी।

काका उसी समय सैरसे लौटे थे और उन्होंने सारा वार्तालाप सुन लिया था। वह सिर लटका कर अपने कमरेमें चले गये। हेमा ने काका को देखा और वहीं बैठ कर विचार-मग्न हो गई। आया मुस्करा कर रसोई घरकी ओर चल दी।

०

अध्याय : ३ :

दिल्लीसे कुछ मील दूर जमुना पुलके उस पार शाहदरा नगर है। शाह-दराके बड़े बाजारके बीचोंबीच एक धर्मार्थ मिडिल स्कूल है। पिछले आठ सालोंसे चन्द्रप्रकाश उसी स्कूलमें मास्टर हैं। स्कूलसे थोड़ी दूर पर एक पुराना पीपलका पेड़ है,पेड़के निकट एक गली है जो दाईं ओर अन्दर जाती है, उसी गलीके पाँचवें मकानमें चन्द्रप्रकाश आठ सालसे रह रहे हैं। घरके प्रवेश द्वार पर 'चिन्तामन' का पिंजड़ा लटका है, जो राम-राम रट कर सुबहकी शाम और शामकी सुबह करता है। हाँ, गौरी कहना भी उसने सीख लिया है और घरमें जब भी कोई गौरीको आवाज लगाता है तो वह भी 'गौरी-गौरी' कह कर उसका साथ देता है।

हरी मिर्च खिलाते समय गौरी और 'चिन्तामन' में रोज छीना-झपटी होती है। गौरी चिन्तामनको हरी-हरी मिर्च दिखाती है और जब वह उसे पानेको अपनी चोंच बढ़ाता है तो गौरी अपना हाथ पीछे खींच लेती है। चिन्तामन क्रोधित हो जाता है, खूब उछलने-कूदने और वावेला मचाता है आखिर गौरी पसीज जाती है और चिन्तामनको मिर्च दे देती है। अब चिन्तामनकी बारी आती है और वह गौरीको मिर्च दिखा-दिखा कर मजे ले-ले कर खाता है। गौरी उससे मिर्च वापस माँगने के लिये हाथ फैलाती है, तो वह सिर हिला कर नाहीं कर देता है।

जब भारत स्वतन्त्र हुआ, चन्द्रप्रकाश इसी घरमें थे। फिर हिन्दू-मुसलमानोंका दंगा हुआ, कई मारे गये, कई शाहदरा छोड़ कर भाग गये। चन्द्रप्रकाशने बापूके निधनका समाचार इसी घरमें सुना। उस दिन शाहदरामें कोई घर ऐसा नहीं था, जहाँसे एक न एक व्यक्ति राजघाट न गया हो।

तब तक पाकिस्तानसे शरणार्थी आ-आ कर बसने लगे थे। हिन्दु-स्तानसे कुछ मुसलमान भी गये। इस आने-जानेमें शाहदरा की शकल ही

बदल गई। शरणार्थियोंने जहाँ-तहाँ झोपड़ियाँ डाल लीं। और पटरियों पर दूकानें लगा कर बैठने लगे। शहरकी चहल-पहल बढ़ गई। सड़कों पर पंजाबी औरतें अधिक दीखने लगीं।

चन्द्रप्रकाशका मन शहरकी इस भाग-दौड़से ऊबने लगा। उनकी इच्छा होती वह वापस चन्दोल जा कर अपनी खेती-बाड़ी सँभाल लें। किन्तु गौरीके माता-पिताको खोजना अभी शेष था और न जाने क्यों उन्हें विश्वास-सा हो गया था कि यह कार्य वह दिल्लीमें रह कर ही अच्छी तरह कर सकते थे।

उन्हीं दिनों दिल्लीके बंगाली मारकेटके प्रायमरी स्कूलकी हेडमास्टरी, जिसके लिये उन्होंने गत वर्ष दरखास्त दी थी, के लिये उन्हें बुलावा भी आया। पुरानी नौकरी छोड़ना और नई नौकरी स्वीकार करना उचित होगा या नहीं यह द्वंद्व उनके हृदयमें छिड़ा हुआ था।

बारह अक्तूबर १९५२ की रातको चन्द्रप्रकाशके विचार अनिश्चयके आकाशमें रह-रह कर चमक उठनेवाले विश्वासके सितारोंको छू लेनेकी कोशिश करते रहे। चन्द्रप्रकाशके मनकी उलझन सुलझ नहीं पा रही थी। दूसरे दिन चन्द्रप्रकाश कुछ देरसे सो कर उठे। उठते ही उनके कानमें "चिन्तामन"की आवाज पड़ी जो "गौरी-गौरी" कह-कहकर घर सिर पर उठाये था। चिन्तामनकी आवाजने चन्द्रप्रकाशकी कर्त्तव्य-भावनाको उकसा दिया। उन्होंने दृढ़ निश्चय कर लिया कि वह दिल्ली अवश्य जायेंगे। इतने दिनों तक वह गाँव इसीलिये तो नहीं लौटा था कि उसे गौरीके माता-पिताको ढूँढ़ना था। पदमने कहा भी था कि गौरीके माता-पिता वहीं गाँवके आस-पास मिल जायेंगे परन्तु उन्हें विश्वास नहीं हुआ था। गौरीका वह फ्राक और गहने दिखा कर चन्द्रप्रकाशने कहा था—"पदम भैया, ये कपड़े और गहने किसी गाँववालेके बच्चेके नहीं हो सकते। शहरके कुछ लोग शायद नदी पार कर रहे होंगे किश्तीमें और नाव उलट गई होगी।"

मन जब किसी बातका निश्चय कर लेता है, तो उसे पूरा करनेके लिये फिर जल्दबाजी करने लगता है। चन्द्रप्रकाशने भी तेरह अक्तूबरको

ही दिल्ली जानेका फैसला कर लिया। रधिया इस निर्णयके विरुद्ध थी। अच्छी भली लगी-लगाई नौकरी छोड़ देना भला कहाँ की बुद्धिमानी है, उसकी समझमें नहीं आ रहा था। वह चन्द्रप्रकाश पर बहुत नाराज हुई परन्तु चन्द्रप्रकाशको अपने निर्णयमें कोई त्रुटि नहीं दिखाई दी। दिल्ली जा कर स्कूल और मकान देखने में हर्ज क्या है। यह कह कर वह दिल्ली चले गये।

:o: :o: :o:

बापू चन्द्रप्रकाशके जानेके बाद गौरी सुबह-शाम शिव-मंदिरमें जा कर बेलपत्र और फूल चढ़ा कर हाथ जोड़ कर प्रार्थना करती—"हे भोलेनाथ, मेरे बापूको सुखी रखना।"

चन्द्रप्रकाशको दिल्ली गये चार-पाँच दिन हो गये थे। गौरी नित्य की भाँति शिव-मंदिर गई और उसने पूजा कर पुनः शिवसे वरदान माँगा कि उसके बापू सदा सुखी रहें और इनकी हर इच्छा पूर्ण हो। जब वह लौट रही थी तो उसे रास्तेमें 'काले चाचा' मिल गये जो चन्द्रप्रकाशके साथ ही स्कूलमें मास्टर थे। काला उनका रंग था इसीसे गौरी उनकी अनुपस्थितिमें उन्हें काले चाचा कहा करती थी, उनके सामने तो वह उन्हें चाचा ही कहती थी।

गौरीने दोनों हाथ जोड़ कर चाचाजीको नमस्ते की। उत्तरमें चाचाजीने भी नमस्ते की और गौरीको एक कागज पकड़ाते हुए कहा—"गौरी इस कागजको घर जा कर ध्यानसे पढ़ना और कल मुझसे यहीं मिल लेना।" गौरीकी समझमें कुछ नहीं आया। वह बोली—"चाचाजी आप ही पढ़ दीजिये न ?"

मास्टर तनिक घबरा गया और उसने कहा—"नहीं, नहीं, तुम ही पढ़ लेना घर जा कर।" और वह चला गया।

घर आ कर गौरीने माँ और बुआको मंदिरका प्रसाद दिया और बोली—"बुआजी, काले चाचाने रास्तेमें मुझे यह कागज दिया है और कहा है कि इसे पढ़ कर कल मुझसे फिर मिलना।"

बुआ हँस कर बोलीं—"हाँ, हाँ पढ़ लेना।" गौरीने कागज खोल कर पढ़ना शुरू किया...

प्रिय,

तुम्हें मालूम है निर्माल्य क्या होता है ? निर्माल्य उस पत्र-पुष्प-नैवेद्य-को कहते हैं जो भगवान् शंकरकी मूर्ति पर चढ़ाया जाता है । उस निर्माल्य-का सेवन परम्परानुसार कोई नहीं कर सकता और यदि कोई करता है तो उसे शिवका परम भक्त होना चाहिये । कल तुमने मंदिरका जो प्रसाद मुझे दिया था वह मेरे लिये निर्माल्य ही था ।

मेरी प्यारी गौरी सच मानों मैं तुम्हें बहुत चाहता हूँ और तुम्हें सदैवके लिये अपने घरकी शोभा बनाना चाहता हूँ । क्या तुम्हें मंजूर है ? उत्तर कल अवश्य देना ।

तुम्हारा ही
केशव

पत्र सुन कर राधा आग-बबूला हो गई । चन्द्रप्रकाशकी पत्नीकी ओर संकेत कर बोली—"जानकी, सुन लिया तुमने ! उस काले भैंसेको गौरी चाचा कहती है और वह उसका पति बननेका सपना देख रहा है । देख लो, कलजुगके लच्छन ! मेरा बस चले तो उस पापीके मुँहमें गोबर भर आऊँ ?"

जानकीने अपना गुस्सा बजाय मास्टरके गौरी पर उतारा—"आजसे घरके बाहर एक कदम भी रखा तो टाँगें तोड़ कर रख दूंगी । कलसे स्कूल जानेकी कोई जरूरत नहीं, समझी ।"

बुआकी डाँट खा कर गौरी रो पड़ी ।

जानकी उठ कर रोटी सेंकने चली गई । राधाको गौरीका रोना दुखित कर गया । उसने सोचा पता नहीं किस रईसकी लाडली हम अभागों-के बीच पड़ गई है । बिना कुछ किये ही बेचारी पर डाँट पड़ गई । हम उसे सुख नहीं दे सकते तो कम-से-कम हमें उसे दुख तो नहीं देना चाहिये । उसे जानकी पर भी क्रोध आया । राधा उठ कर गौरी के पास गई और उसे हृदयसे लगा लिया । गौरी अभी तक सुबकियाँ ले रही थी । राधाने गौरीके आँसू पोंछ दिये और पूजाके थालसे मिश्रीका एक टुकड़ा उठा कर उसके मुँहमें जबरदस्ती डाल दिया । गौरी भी मुस्करा पड़ी । जानकीने

यह सब देखा तो उसे अच्छा नहीं लगा। पराई बेटीसे इतना प्यार करनेसे क्या लाभ, उसने सोचा।

:o: :o: :o:

शरदपूर्णिमाके दिन सत्यनारायणकी पूजा सम्पन्न कर चन्द्रप्रकाश सपरिवार दिल्ली चले गये। धर्मार्थ स्कूलके सेठ लालचन्द इस समाचारसे बहुत प्रसन्न हुए। जिस प्रकार बाढ़के समय उन्होंने चन्द्रप्रकाश आदिको सहारा दे कर नाम कमाया था, उसी प्रकार अब वह शरणार्थियोंको सहायता देकर नाम कमाना चाहते थे। अतः उस मास्टरीके लिये वह शरणार्थी कैम्पोंमें इण्टरव्यू लेनेके लिये चल पड़े। अपनी महानता प्रदर्शित करनेका इससे अच्छा मौका उन्हें न जाने फिर कब मिलता।

दिल्ली पहुँचते ही चन्द्रप्रकाशने पदम भैयाको पत्र लिखा...

भाई पदम,

मैंने शाहदरा स्कूलकी नौकरी छोड़ दी है और अब बंगाली मारकेटके प्रायमरी स्कूलमें हेडमास्टर हो गया हूँ। अगर हो सके तो कुछ दिनोंके लिये यहाँ आ जाओ। तुमसे मिलनेकी बड़ी इच्छा है।

आनेकी कोशिश अवश्य करना। राधा और जानकी नमस्कार कहती हैं और तुम नहीं आये तो गौरी कहती है वह कुट्टी कर लेगी।

तुम्हारा

चन्द्र

:o: :o: :o:

मकानकी चन्द्रप्रकाशको किसी प्रकारकी दिक्कत नहीं हुई। स्कूल-वालोंका अपना मकान था जो चन्द्रप्रकाशको दे दिया गया था। छोटा-सा घर था जिसमें छोटे-छोटे तीन कमरे थे। चन्द्रप्रकाश उस कमरेमें अपनी चारपाई डाले लेटे थे जहाँकी खिड़कीसे तारे झाँकते थे, चाँदकी किरणें फर्श पर उतर आती थीं और नीला आस्मान अपने गंभीर मुखसे उन्हें घूरता रहता था। न जाने कब उनकी आँखें झप गईं।

नया मकान और नई नौकरी चन्द्रप्रकाशको बहुत पसन्द आए। राधा और जानकीकी आसपासके सभी पड़ोसियोंसे अच्छी जान-पहचान हो

गई। दिन भर कोई-न-कोई पड़ोसिन उनके घर बैठी ही रहती थी। चन्द्र-प्रकाशके स्कूलमें सभी अध्यापक उनसे आयुमें छोटे थे अतः वह सबसे छोटे भाईका बर्ताव ही करते थे। सबसे हँस कर बातें करते, सबकी अधिकसे अधिक सुविधाका ध्यान रखते। परन्तु उस पाठशालाके अध्यापक उनकी इस सौजन्यतासे तनिक भी प्रभावित न थे। मन-ही-मन वे उन्हें कोसा करते थे। उन्हें लगता कि उनके साथ अन्याय किया गया है, बाहरसे लाकर एक आदमी उनके सिर पर लाद दिया गया है। क्या वहाँ कार्य करनेवाले सभी लोग नालायक है ? चन्द्रप्रकाशको यह सब ज्ञात नहीं था क्योंकि ऊपरी तौरसे सभी उनकी चापलूसी करते और हाँ में हाँ मिलाते थे। अन्दर ही अन्दर भड़कनेवाली इस आगका पता चन्द्रप्रकाशको उस दिन लगा, जब स्कूल इंस्पेक्टर निरीक्षणके लिये आए। प्रत्येक अध्यापक ने उनके विरुद्ध खूब उल्टी-सीधी शिकायतें कीं। चन्द्रप्रकाश यह सब देखकर आश्चर्यसे अवाक् रह गये। जिन अध्यापकोंको वह अपने छोटे भाईकी तरह स्नेह करते रहे, वही समय पड़ने पर उनके लिये घातक सिद्ध हो रहे थे। चन्द्रप्रकाशके भावुक हृदयको इस अमानवीय व्यवहारसे बहुत ठेस लगी। उस दिन जब वह घर लौटे तो आपेमें नहीं थे।

जैसे तारों भरा नभ बिना चन्द्रमाके सुनसान लगता है, उसी तरह चन्द्रप्रकाशका परिवार चन्द्रप्रकाशके अभावमें सुनसान लग रहा था। तीन दिन पहले वह बाजार करने गये थे और तबसे अभी तक नहीं लौटे थे। राधा और जानकी ने पास-पड़ोसके लोगोंके जरिये पता लगानेकी कोशिश भी बहुत की परन्तु कुछ पता नहीं लगा। तीसरे दिन सभी इसी चिन्तामें डूबे बैठे थे कि अस्पतालका एक आदमी आया और उसने खबर दी कि चन्द्र-प्रकाशका एक्सीडेंट हो गया है और उन्हें आज ही होश आया है।

इस समाचारसे तीनोंके होश उड़ गये। वह सब-की-सब अस्पतालके उस चपरासीके साथ चल पड़ीं।

चन्द्रप्रकाश पट्टियोंमें बँधे हुए बिस्तर पर पड़े थे। तीनोंको उनके पास पहुँचाया गया। गौरी पिताका यह हाल देख कर फूट-फूट कर रो पड़ी। जानकी और राधाका भी बुरा हाल था। चन्द्रप्रकाश ने सबको इशारेसे चुप कराया और रधियाको अपने पास बुलाया।

पीड़ासे चन्द्रप्रकाशके मुखसे बोल नहीं फूट रहे थे। साँस जैसे गलेमें फँस-फँस जाती थी। हर शब्द इस तरह निकलता जैसे नस-नसको तोड़ रहा हो, फिर भी चन्द्रप्रकाश रधियाको समझा रहे थे। उन्होंने कहा—

"रधिया...मेरे दिन पूरे हो गये बहन...अब मैं बचूँगा नहीं...तुम मुझे...बोल लेने दो रधिया...मैं अपना कर्त्तव्य...पूरा नहीं कर सका...पर तुम गौरीको इस अमानतको...उसके मालिक तक पहुँ...चा...दे...ना...बहन...!" और चन्द्रप्रकाशका गला भर्रा गया, वह बेहोश हो गये। राधा चीख उठी।

डाक्टर ने आ कर सबको बाहर कर दिया। उसी रात चन्द्रप्रकाश इस संसारसे विदा हो गये।

जानकी और राधाके समझमें कुछ भी नहीं आ रहा था कि अब क्या करें? बुद्धि उनकी कुंठित हो गई थी। पड़ोसमें रामूकी माँ रहती थी; उससे इन दोनोंका हाल नहीं देखा जाता था। वह दिन-भर इन्हींके साथ रहती, इन्हें समझाती और थोड़ा बहुत जोर-जबरदस्तीसे खिला भी देती। समय कटा और तेरहीका कार्यक्रम समाप्त हुआ। जानकी और राधाके सामने भविष्यकी समस्या थी।

गौरी ने जब सुना कि उसके माता-पिता कोई और तो उसके भीतर अजीब-सा परिवर्तन होने लगे। वह दिन भर अपने असली माता-पिताके बारेमें सोचती रहती—"वे कौन होंगे, कैसे होंगे, क्या वह उसे मिलेंगे...? मिलेंगे भी तो पहचानेंगे या नहीं...!" वह अक्सर इन्हीं विचारोंमें खोई रहती और जब कभी कोई उसे विचार-जगत्से चौंका देता तो उसे बहुत बुरा लगता। फिर यह चौंकानेवाला व्यक्तित्व बुआ हो या राधा, इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता था। कभी-कभी तो उसे ऐसा लगता कि कब इन सबसे पीछा छूटेगा और उसके माँ-बाप उसे मिलेंगे। अब वह रोज भगवान्से मन-ही-मन प्रार्थना करती कि उसके माता-पिता जल्दी ही उसे मिल जाएँ।

एक दिन जानकी और राधा चिन्तामग्न बैठी थीं कि रामूकी माँ दौड़ती हुई आई और बताया कि एक साल पूर्व वह जिस घरमें आया का

कार्य करती थी वहाँ आया की जगह फिर खाली है, चाहे तो उसे वह नौकरी मिल सकती है।

रधियाको उसकी बात रुची नहीं। उसने कहा—"मैं और आयाकी नौकरी करूँ, कभी नहीं। मुझको नहीं करनी है आयाकी नौकरी।"

"आखिर रोटी-पानीका कुछ तो इन्तज़ाम करना पड़ेगा तुम लोगोंको। घरमें बैठे-बैठे कैसे काम चलेगा? राधा बहन, वह घर बहुत अच्छा है, वहाँ नौकरी करनेमें कोई हानि नहीं है, उल्टा तुम्हारा फायदा ही है।" रामूकी माँ बोली।

राधा चुप रही, परन्तु जानकीसे चुप नहीं रहा गया। जानकी ने कहा—"रामूकी माँ तुम दिखा दो मुझे वह घर... मैं करूँगी वह नौकरी..."

राधा ने टोकते हुए कहा—"तुम्हारा दिमाग तो नहीं खराब हुआ है? तुम आयाकी नौकरी करोगी? भैयाको स्वर्गमें दुःख नहीं होगा!"

"दीदी, हम अनपढ़ लोगोंको दूसरी नौकरी कहाँ मिलेगी... और पेटकी आग तो बुझानी ही पड़ेगी तीनोंकी।" जानकी ने विनीत भावसे कहा।

"पेटकी आग बुझानेके लिये तुम इतनी नीचे गिर जाओगी यह मुझे मालूम नहीं था। यह आग तो गाँव लौट कर भी बुझाई जा सकती है; वहाँ पदम भैया भी हैं और..."

"पदम भैया तो हैं लेकिन गौरीके माँ-बाप कहाँ हैं वहाँ... दीदी तो तुम जानती हो कि उनकी अन्तिम इच्छा क्या थी? जब तक गौरीके माता-पिता नहीं मिलते मैं गाँवमें पैर भी नहीं रखूँगी।"

राधा कुछ तुनक कर बोली—"हूँ, काश्तकारके घरकी लड़की आखिर कर ही क्या सकती है। माँ-बापके घरमें मजदूरिनकी तरह काम करती रही अब यहाँ आयागिरी करेगी। मुझसे नहीं देखा जाता यह सब मैं कल ही गाँव चल दूँगी।"

गौरी पास ही खड़ी यह सब सुन रही थी। आज उसको बुआसे ज्यादा माँ अच्छी लग रही थी। राधा ने उससे प्रश्न किया—

"तुम चलोगी न मेरे साथ गाँव ?" तो वह बोली—"नहीं बुआजी माँको अकेली छोड़ कर मैं कैसे जा सकती हूँ ?"

इस उत्तरने जानकीकी हिम्मत बढ़ा दी परन्तु राधाके तो जैसे आग लग गई ।

यह सब उत्तर प्रत्युत्तर सुन कर रामूकी माँ बोली—"अच्छा बहन, मैं जाती हूँ, तुमलोग फैसला करके मुझे बता देना ।"

जानकी ने कहा—"बहन, जाती कहाँ हो, मुझे भी वहाँ ले चलो । मैं आजसे ही काम करना चाहती हूँ ।"

रामूकी माँ ने कहा—"मैं तो तैयार हूँ, चलती हो तो चलो ।"

रामूकी माँ और जानकी दोनों उठ कर चल पड़ीं । राधाको उनका जाना बुरा लगा, गौरीको भला ।

:o: :o: :o:

जानकीके जाते ही राधाकी इच्छा हुई कि वह अपना सामान बाँध कर गाँव चल दे । वह गाँव जा कर पदम भैयाको सब बताना चाहती थी परन्तु गौरीको, अकेली छोड़ कर जाना उसने ठीक न समझा । उसे जानकीका यह व्यवहार बिल्कुल ही पसन्द नहीं आया । ब्याहके समय भी जानकीको राधा ने विशेष पसन्द नहीं किया था । जानकी पदम भैयाकी पसन्द थी । पदम भैया ने कहा था लड़की मेहनती है और सुशील है, हमें और चाहिये ही क्या ? राधा सोच रही थी कि आज यह सिद्ध हो ही गया कि जानकी एक अच्छी बहू नहीं है । अच्छी बहू होती तो क्या वह इस तरह दूसरेके घरमें आयाका कार्य करनेके लिये तैयार हो जाती ? आज पदम भैया सामने होते तो वह उन्हें खूब सुनाती... लेकिन अब कैसे सुनाए । उसे यह भी ध्यान आया कि उसने चन्द्रप्रकाशके मरनेकी खबर भी पदम भैयाको नहीं दी है । इन उलझनों और मुसीबतोंमें उसे समय ही नहीं मिला कि पदम भैयाको वह कोई सूचना दे सके । राधाको लिखना-पढ़ना नहीं आता था, अतः उसने गौरीको बुला कर पदम भयाके नाम एक पत्र लिखवाया ।

पदम भैया,

तुम्हें यहाँकी कुछ खबर नहीं होगी । हमलोगोंके सिर पर तो पहाड़ टूट पड़ा । चन्दू एकमात्र सहारा था, वह ईश्वरको प्यारा हो गया । मोटरसे

टकरा गए थे। हम लोगोंको खुद बहुत देरसे मालूम पड़ा और जिस दिन हम अस्पताल गये उसी दिन रातको चन्दू ने दम तोड़ दिया।

पदम भैया, हमलोग एकदम बेसहारा हो गये हैं। मैं चाहती थी कि हम सबलोग वहीं गाँव आ जाते परन्तु जानकी न आनेकी ज़िद किये है। वह यहाँ आयाकी नौकरी कर रही है, मैंने उसे लाख समझाया कि गाँव चली चल पर वह नहीं मानती। जब तुम ही आ कर उसे समझाओ और हमें ले जाओ। आशा है तुम इस पत्रको पाते ही आओगे और एक दम देर नहीं करोगे।

तुम्हारी बहन
राधा

राधा ने पता लिखा कर गौरीसे कहा कि तू जा कर यह पत्र पासके पोस्ट-आफिसके डिब्बेमें डाल आ। गौरीको बुआकी बातें बिलकुल भली नहीं लग रही थीं। उनका पत्र लिखवाना तो उसे और भी बुरा लगा। उसने सोचा, अगर यह पत्र ताऊजीको मिल गया तो वह यहाँ आ कर हम सबको अवश्य ले जायेंगे और फिर... फिर उसके माँ-बापका पता कैसे लगेगा। और पत्र डिब्बेमें डालनेके बदले उसने रास्तेमें फाड़ कर फेंक दिया।

राधाको गौरी पर गुस्सा आ रहा था। जिस लड़कीके उसने प्राण बचाये थे उसी ने आज उसके विरुद्ध जानकीका साथ दिया था। वह गौरीको जानकीकी मार-पीट, डाँट-डपटसे बचाती रही थी, उसे प्यार भी करती थी लेकिन वही गौरी आज उसका साथ छोड़ जानकीकी तरफ हो गई। अगर गौरी चलनेको राजी हो जाती तो क्या जानकीकी हिम्मत थी कि वह रुकनेके लिये तैयार हो जाती ? सच पूछो तो दोष गौरीका है। खैर, पदम भैयाको पत्र लिख ही दिया है। वह आएँगे तो इन सबको जाना ही पड़ेगा। आज माँ-बेटी ने उसके विरुद्ध मोर्चा बाँध रखा है... कल तक चन्दू था तो घरमें उसकी आज्ञाके बिना पत्ता भी नहीं हिलता था। आज उसके जाते ही उस की इज्ज़त भी उस घरसे चली गई। यह सोच कर राधाका मन भर गया और वह रोने लगी।

गौरी वापस आई तो उसने बुआको रोते देखा। गौरीकी समझमें कुछ नहीं आया कि बुआको बैठे-बैठे अचानक क्या हो गया ? बुआ जोर-जोरसे नाक सुड़क रही थीं और रो रही थीं। गौरी बुआसे दौड़ कर लिपट गई और खुद भी रोने लगी। थोड़ी देर पहले जिस बुआ पर उसे क्रोध आ रहा था, उन्हें रोती देख उसकी आँखोंमें भी आँसू आ गये। राधाको अनुभव हुआ जैसे चार सालकी गौरी, असहाय गौरी... उसके अंकमें सिमट कर आ गई है। गौरी उसीकी तो पाली-पोसी बेटी है। अगर वही उसे सहारा नहीं देगी तो गौरीका क्या होगा ? उसे अपना ख्याल आया। पिता था नहीं, भाई ने सहारा न दिया होता तो उसका क्या होता ? गौरीका सहारा राधा ही है और अगर वह उससे निरपेक्ष हो जाए तो गौरी कैसे जियेगी, उसका ब्याह कैसे होगा ? उसने स्नेहसे गौरीकी आँखके आँसू पोंछ दिये और खुद भी जा कर मुँह धो आई।

तभी, जानकी ने घरमें प्रसन्नवदन प्रवेश किया। "गौरी, ऐ गौरी ! देख मुझे नौकरी मिल गई। हम सब यह मकान भी छोड़ देंगे। साहबका बड़ा बंगला है जिसमें बागमें एक अलग कोठरी बनी है, उसीमें हम रहेंगे। हमें किराया भी नहीं देना पड़ेगा। इतना सब जानकी एक ही साँसमें कह गई।

"सच !" कहकर गौरी दौड़ कर माँसे लिपट गई। राधा वहाँसे उठ कर रसोई घरमें चली गई।

:o: :o: :o:

दूसरे दिन ही जानकी ने मकान परिवर्तित कर दिया। राधा मकान छोड़ना नहीं चाहती थी, उसने बहुत हीला-हवाला किया लेकिन, जानकीके आगे उसकी एक न चली। स्कूलकी तरफसे उन्हें नोटिस मिल ही चुका था कि मकान जल्द-से जल्द खाली कर दिया जाय अतः राधाको जानकी की राय मानने पर मजबूर होना ही पड़ा। कल तक जानकी अपने घरकी रानी थी; कलकी रानी आज की नौकरानी बन गई। जानकीको घरकी मालकिन ने जानकी न कह 'आया' कहना अधिक उचित समझा। उसे बुला कर सब समझा दिया गया। जानकीकी समझमें कुछ आया और कुछ

नहीं आया, परन्तु फिर भी वह मालकिनके सामने यही प्रदर्शित करती रही कि उसकी समझमें सब बातें आ गई हैं।

जानकी ने सबसे पहले घरमें झाड़ू लगाई फिर कपड़ा ले कर मेज-कुर्सी साफ करनेमें लग गई। इसके बाद मेज़ लगानेकी बारी आई। वह चीनीकी प्लेट मेज़ पर सजाने लगी। काँच और चीनीके बर्तनोंको छूते हुए उसके मनमें भय उत्पन्न हो रहा था कि कहीं वह गिर कर टूट न जाएँ। इसीलिये वह बर्तनोंको धीरे-धीरे सम्हाल-सम्हाल कर रख रही थी।

उसी समय रूबी आई। उसने सोचा यह नई आया कामचोर है, इसीलिये धीरे-धीरे काम कर रही है। वह उस पर उबल पड़ी...

"क्या धीरे-धीरे बर्तन लगा रही है। इस तरह बर्तन लगाएगी तो यहीं रात हो जाएगी।"

जानकीका मुँह सिकुड़ गया। वह गिड़गिड़ा कर बोली—"बिटिया रानी, दो-चार रोजमें काम सीख लूँगी तो जल्दी-जल्दी लगाने लगूँगी।"

'बिटिया रानी' रूबीको खटक गया उसने कहा—"मुझे रूबी बाबा कहा करो। यह क्या गँवारोंके घरोंका सम्बोधन कर रही हो... बिटिया रानी!"

"जैसा आप हुकुम देंगी सरकार वैसा ही कहूँगी।" जानकी ने कहा।

"अच्छा, बातें मत बना। जल्दी-जल्दी काम कर।" रूबी बोली।

जब खानसामाने भी हाथ बटाया, तब मेज पर सामान लगा। कैप्टन रघुनाथ कुटुम्ब सहित आकर खानेकी मेज पर बैठ गये। खानेके साथ ही साथ प्रथम चुनाव पर भी बहस छिड़ गई। बहसमें रूबी बाबासे लेकर काका तक सभी जुटे हुए थे। जानकी वहीं पास ही खड़ी थी। उसे यह सब देख कर आश्चर्य हो रहा था। यह सब उसके लिये नया था। अभी तक वह यही देखती आई थी कि जब पुरुष वर्ग बातोंमें भाग लेता है, तो नारी वर्ग उस समय चुप रहता है। पुरुषोंके बीचमें, वह बोल नहीं सकती। आज सभीको बातें करते देख उसे आश्चर्य हुआ।

राधा जानकीके कमरेमें बैठी तर्क-वितर्क में फँसी हुई थी। उसकी समझमें नहीं आ रहा था कि उसे शहरमें रहना चाहिये या गाँव में।

पदम भैयाकी चिट्ठी का उत्तर उसे अभी तक नहीं मिला था। घर बदल देनेके कारण उसे पत्र मिलनेकी आशा भी अधिक नही थी। गौरीके माता-पिताको इतने बड़े शहरमें ढूँढ़ना सरल कार्य नहीं था। विचारों-के इसी कड़ुवे धुएँमें वह घुटी जा रही थी।

गौरी अपने नये घरमें खुश थी। वह इधर-उधरसे फूल तोड़ लाई और बैठ कर ठाकुरजीके लिये हार बनाने लगी।

गौरीको फूलोंमें उलझा देख राधाकी इच्छा हुई कि वह अपने मनकी गाँठ गौरीके सामने खोल दे। वह उसे समझाना चाहती थी कि माता-पिताके मिलनेकी झूठी आशामें इस बड़े शहरमें रहना ठीक नहीं है। सच तो यह है कि अब उसके माता-पिताका मिलना असंभव है। जानकी-का आयाका कार्य करना ठीक नहीं है और नौकरोंकी इस कोठरीमें रहना अपमानजनक है। जब पदम भैया यह सब सुनेंगे तो क्या सोचेंगे? गाँववालोंको यह सब ज्ञात हो गया तो क्या वह लोग गाँववालोंको मुँह दिखा सकेंगे?...पर बेचारी राधा यह सब गौरीसे कह न सकी। कभी ऐसा भी होता है कि हमारे हृदयमें विचारोंका तूफान होता है और वाणी अवश हो जाती है। राधा विचारोंमें खोई हुई थी और गौरी फूलोंकी माला में। वह हार बनाती जा रही थी और गुनगुनाती जा रही थी—
"गोपिन संग खेलत रास कन्हैया।"

:o: :o: :o:

जानकीके जीवनको आँधियोंके पर लग गये। काम सीखनेमें वह ऐसी डूब गई कि किसी और बातको सोचनेका अवकाश उसे रहा नहीं। पौ फटते ही वह अपनी कोठरीसे निकल मालिकके मकानमें पहुँच जाती और रातको नौ दस बजे वापस आती। मकानका कोई कोना उसकी सफाईसे अछूता नहीं रहा। इसी सफाईके दौरानमें उसके हाथ एक फोटो लगी जिसे देख वह अवाक रह गई। आँख फाड़-फाड़कर वह उस फोटो-को देखने लगी। यह फोटो गौरीके बचपनके चेहरेसे कितनी मिलती है? कहीं गौरी इन्हींकी बेटी...नहीं...नहीं...यह गौरीकी तस्वीर नहीं हो सकती। यह गौरीकी तस्वीर क्यों होगी? यह तो रूबीके बचपन-

की तस्वीर होगी। उसे यूँ ही सन्देह हो गया। उसकी गौरी...हाँ... लेकिन नहीं गौरी उसकी भी कहाँ है...फिर भी...फिर भी, कुछ भी हो यह गौरीकी तस्वीर नहीं है। क्यों नहीं है? उसने कह दिया बस, नहीं है। क्या कोई जबरदस्ती है कि यह तस्वीर उसीकी हो...और अगर हो ही तो...तो...क्या गौरीको उसे इन्हें दे देना पड़ेगा। गौरी-को...जिसने उसे अपना रक्त दे कर इतना बड़ा किया है, जिसे उसने स्नेहसे सींच-सींच कर इतना बड़ा किया है, जिसे उसके 'वह' कितना चाहते थे, जिसकी आँखोंमें वह कभी आँसू नहीं देख सके, उसी गौरीको क्या उसे इन सबको लौटा देना होगा। कितनी नन्हीं-सी थी गौरी जब उसको अपनी उँगलियोंका उसने सहारा दिया था...वह तुतला कर बोलनेवाली गौरी...वह रूठने और प्यार करनेवाली गौरी...वह छोटी-छोटी-सी बात पर मचल जानेवाली गौरी...उसकी छाती पर सिर रख सो जाने-वाली गौरी...क्या उससे छिन जायेगी...नहीं...नहीं...वह गौरीको इनके हवाले कभी नहीं करेगी। इनके बीच वह रहेगी भी कैसे?... गाँवकी धूल और ग्रामीण संस्कारोंमें पली फूल-सी, लाजवन्ती-सी, सुकुमार गौरी जो पराये आदमीकी हँसी सुन कर ही अपनेमें सिमट जाती है इन साहबों और मेम साहबोंके बीचमें कैसे रहेगी? उसके तो प्राण इस वातावरणमें घुट जायेंगे...रूबी बाबाकी तरह क्या वह अंग्रेजी कपड़े पहन कर घूम सकेगी...रूबीकी माँ क्या उसे इतना प्यार कर सकेगी जितना वह रूबीको करती है...और अगर रूबी जितना प्यार वह गौरीको करे भी तो भी वह गौरीको इतना प्यार तो कर ही नहीं सकती जितना वह गौरीसे करती है...लेकिन वह क्यों परेशान हो रही है? वह फोटो गौरीका होगा ही क्यों?.... नहीं ही होगा—

और तभी गुस्सेमें भरी रूबीने प्रवेश किया—"ईडियट कहीं की... अभी तक मेरा कमरा क्यों साफ नहीं किया? मुफ्तकी तनख़ाह लेती है, कामचोर फूहड़!"

जानकीको रूबीका यह व्यवहार असह्य हो गया। वह इस घरमें नौकरानी न होती तो अभी उसे खींच कर दो चाँटे लगा देती और उसे

बताती कि बड़ोंसे कैसे बात करती है ? वह बोली—"काम नहीं कर रही हूँ तो क्या मक्खियाँ मार रही हूँ । कोई मशीन तो नहीं हूँ अभी..."

"ज़बान लड़ाती है नालायक...!"

"जबान लड़ानेकी इसमें क्या बात है, रूबी बाबा जो सच है वही कह रही हूँ ।"

रूबीकी क्रोधाग्नि पर घी पड़ गया—"निकल मेरे कमरे से ! ईडियट, नान्सेंस...सच कह रही हूँ की बच्ची..."

और तभी काका आ गये—"क्या बक-बक लगा रही है सबेरेसे रूबी? काम तो कर रही है बेचारी ।...आया तुम अपना काम करो ।"

रूबीको लगा काका नौकरानीकी तरफदारी कर उसकी हतक कर रहे हैं—"काका आप नौकरानीकी तरफदारी..."

"मैं किसीकी तरफदारी नहीं कर रहा हूँ...केवल सत्यकी तरफदारी कर रहा हूँ । मैं तुम दोनोंकी बातें सुन रहा था, समझीं ।" काकाने भारी स्वरसे कहा । रूबी पैर पटकती हुई वहाँसे चल दी ।

जानकीको काकाका व्यवहार बहुत अच्छा लगा । कितने महान् हैं काका । कहीं ऐसा भी होता है कि मालिक नौकरकी तरफदारी करे और घरके आदमीको डाँट दे...किन्तु काकाने सचकी तरफदारी की । वैसे भी काका किसीसे बात कहाँ करते हैं ? न किसीकी बहसमें न, झगड़ेमें । उसके साथ रूबी बाबा अन्याय कर रही थीं, इसीलिये तो काका उसकी तरफसे बोले । फिर भी रूबी बाबासे उसे ऐसे गर्म हो कर नहीं बोलना चाहिये था । कुछ भी हो वह तो मालिककी बिटिया है न ? क्या पता काकाको भी मन ही मन बुरा लगा हो तो...नहीं वह काकासे जाकर माफी माँग लेगी । कहेगी उसीकी गलती थी, अब वह ऐसी गलती नहीं करेगी ।

नित्यकी भाँति जानकीने शामको बागमें छिड़काव किया और काकाकी आराम कुर्सी लगा दी । जैसे ही काका कुर्सी पर बैठे जानकी उनके सामने हाथ जोड़ कर खड़ी हो गई ।

"क्या है जानकी ?"—काकाने सहज स्नेहसे पूछा ।

"सरकार, माफी माँगने आई हूँ।" जानकीने गिड़गिड़ा कर कहा।

"माफी माँगने! किस बातकी माफी?"

"सरकार, बिटिया रानी—मेरा मतलब है रूबी बाबासे आज मैं..."

"हाँ, हाँ, बोलो..."

"मैं जरा गरम होकर बोल गई सरकार! हम नौकरोंको भला..."

काका खूब जोरसे हँस पड़े। "अच्छा तो सबेरेकी बातकी बाबत कह रही हो...अरे वह कोई ऐसी बात नहीं थी जिसके लिए माफी माँगने-की जरूरत पड़े। लेकिन देख कलसे रूबी बाबाका कमरा पहले साफ कर दिया कर, हाँ।"

"जी सरकार!" जानकीने कहा और चली गई। बाबाकी सौजन्यतासे वह फूली नहीं समा रही थी। काम करनेमें उसके हाथ जल्दी-जल्दी चल रहे थे।

:o: :o: :o:

रातको काम समाप्त कर जब जानकी अपने कमरेमें आई तो गौरी सो चुकी थी। राधा बैठी चर्खा कात रही थी। घर आते ही राधाको याद आया कि उसके पास गौरीकी बचपनकी एक फोटो है। गौरीके बापूने शाहदरा आनेके थोड़े ही दिनों बाद वह फोटो खिंचवाई थी। जानकी-ने ट्रंक खोल कर वह फोटो निकाला तो उसे साँप सूँघ गया। वह फोटो गौरीकी उस तस्वीरसे जो उसने आज सबेरे देखी थी बिल्कुल मिलती-जुलती थी। "तो गौरी केप्टन साहबकी बेटी है!" धीरेसे उसके होंठ बुदबुदाये। अचानक उसके मनमें बिजलीकी तरह एक विचार दौड़ गया। इस भेदको वह किसीको नहीं बतायेगी। और जल्दसे जल्द नौकरी छोड़ कर गाँव चली जायेगी।

वह राधाके पास आकर बैठ गई और बोली—"दीदी! इतनी रात तक चर्खा क्यों कातती हो, आरामसे सो क्यों नहीं जाती।"

जानकी आज बहुत दिनोंके बाद राधाके पास आ कर बैठी और इतने प्यारसे बोली थी। राधा पसीज गई, भरे गलेसे बोली—"जानकी तुझे बड़ी मेहनत करनी पड़ रही है न? मुझसे यह सब देखा नहीं जाता।

चन्दू मेरे हाथ तुम्हें क्यों इसीलिये सौंप गए थे कि मैं तुमसे मेहनत करवाऊँ और खुद बैठी-बैठी खाऊँ। चलो जानकी हम लोग गाँव चले जाएँ।"

"दीदी, तुम चाहती हो तो हम लोग गाँव ही चले जाएँगे...तुम जब भी कहो मैं शहर छोड़नेको तैयार हूँ।" जानकीने कहा।

राधा जानकीका निर्णय सुन कर प्रसन्न हुई किन्तु दो क्षण बाद ही फिर बोली—"पर पता नहीं चन्दूकी आत्माको हमारा घर लौटना पसन्द आएगा या नहीं? उसकी अन्तिम इच्छा यही थी कि जैसे भी हो हम गौरी के माता-पिताका पता लगाएँ।

जानकीने अपना सिर लटका लिया। उसके मनमें द्वन्द्व होने लगा। राधा भी उन्हीं विचारोंमें खो गई। कुछ समय इसी प्रकार खामोशी में बीता। कहीं दूरसे घण्टाघरके घण्टोंने बारह बजनेकी सूचना दी। घण्टे सुन कर राधा बोली—"चल जानकी, सो जा! रातके बारह बजे हैं। कल तुझे काम पर भी जाना है न।"

जानकी बिना कुछ कहे वहीं लेट गई। कल काम पर जानेकी बात उसे अच्छी नहीं लगी। वह चाहती थी राधा उससे कहे—"कल हम सबको गाँव चलना है न?" पर राधा ने गाँव जानेकी कोई बात नहीं की और दीया बुझा कर करवटें बदलने लगी। जानकीके विचार भी उसके मस्तिष्कमें करवट बदलने लगे। कभी वह सोचती कि गौरी-को अपने पतिकी इच्छाके अनुकूल उसके माँ-बापको लौटा देना चाहिये, कभी सोचती नहीं उसे ले कर उसे गाँव चले जाना चाहिये। गौरी यदि उसके पास रहेगी तो उसके पतिकी सबसे प्रिय वस्तु उसके पास रहेगी... और वह उसे लौटा दे तो उसके पतिकी अन्तिम इच्छा पूरी हो जाएगी। फिर उसे अपने पतिके शब्द याद आए—"मैं अपनी गौरीका धूमधामसे विवाह करूँगा। मैं तो प्रायमरी स्कूलका हेडमास्टर हूँ पर गौरीका ब्याह हाईस्कूलके हेडमास्टरसे करूँगा। मेरी गौरी अपने घर जाए सुख-से रहे...मैं और कुछ नहीं चाहता।"

पतिके इस विचारके अनुसार जानकीने गौरीके लिए लड़का भी ढूँढ़ लिया था कुंजीलाल, जो रूबीको हिन्दी पढ़ानेके लिये रोज आता था।

कुंजीलाल केण्टूनमेण्टके हाईस्कूलके हेडमास्टर थे और देखने-सुननेमें भी अच्छे थे। आयु उनकी यही तीस वर्षकी होगी। जबसे उनकी पत्नीका स्वर्गवास हुआ है, वह शामका समय ट्यूशनोंमें बिता देते हैं। जानकीने कुंजीलालमें सभी गुण देख लिये थे। उसके मनमें यह लालच भी था कि विधुर होनेके कारण दहेजका प्रश्न भी उत्पन्न नहीं होगा। इन्हीं विचारों-ने जानकीको थपकी दे कर सुला दिया। वह सपनोंमें खो गई। उसने देखा उसका पति बहुत दूर एक टीले पर बैठा है, बाल सूखे और उलझे हुए हैं, कपड़े फटे हुए, चेहरा उदास और चिन्तायुक्त है। टीला वही था जिस पर उनका घर था। जानकी, गौरी और राधाको देख कर वह फूट-फूटकर रो पड़े—"तू वापस आ गई जानकी! तुझसे मैंने क्या कहा था? तू लौट जा जानकी नहीं तो...नहीं तो मेरी आत्मा नर्ककी लपटोंमें जलती रहेगी...तू लौट जा!" वह फूट-फूट कर रोने लगे और आँधीका एक तेज झोंका जानकीके सामनेसे गुजर गया। उसने देखा आगकी तेज लपटोंके बीच चन्द्रप्रकाश फँसे हुए हैं। उससे निकलनेकी चेष्टा करते हैं पर कोई उन्हें बार-बार खींच कर उन लपटोंमें धकेल देता है। उसने आँखें मल कर देखा चन्द्रप्रकाशको लपटोंमें धकेलनेवाला कोई अन्य नहीं गौरी थी...और वह ज़ोरसे चीख पड़ी—"गौरी यह क्या कर रही हो... गौरी...गौरी!"

राधा घबरा कर उठ गई और जानकीके पास आई। जानकी पसीने से भींग गई थी और फटी-फटी आँखोंसे सबको देख रही थी। राधाने स्नेहसे जानकीके सिर पर हाथ फेरा और पूछा—"सपना देख रही थी क्या? ये गौरी...गौरी क्या चिल्ला रही थी!"

जानकी राधाके गलेसे लग कर एकदम रो पड़ी तभी सबेरेके पाँच बजनेकी सूचना घंटाघरने दी। जानकी राधासे अलग हो नहाने चली गई। राधाकी समझमें कुछ नहीं आया कि जानकीको क्या हो गया है?

:o: :o: :o:

जानकीका मन ऊहापोहसे भरा हुआ था। पाँच दिन बीत गए। जानकी ने इस बीच किसीसे बोली न उसने ठीकसे खाना खाया। दिन

भर मशीनकी तरह कार्य करती और शून्यमें आँखें फाड़-फाड़ कर देखती रहती। जब काम समाप्त कर वह रातको सोती तो उसे अजीब स्वप्न दिखाई देते। वह सबके बीच रहती हुई भी एकाकी थी।

छठवें दिन उसे बुखार हो आया। फिर भी वह किसी प्रकार काम पर चली गई। काकाने जब उसकी सूजी हुई लाल-लाल आँखें देखीं तो उनसे न रहा गया। बोल उठे––"जानकी तेरी तबीयत ठीक नहीं है, जा घर जा कर आराम कर।"

बर्तन पोछते हुए जानकीने कहा––"सरकार मैं चली जाऊँगी तो काम यूँही पड़ा रह जायगा। काम कौन करेगा?"

"काम कोई करे या न करे, पर तू जा कर आराम कर।"

जानकीने हाथकी प्लेट नीचे रखते हुए कहा––"जैसा हुकुम सरकार... पर आप लोगोंको कष्ट न हो इसलिये गौरीको काम पर भेज देती हूँ।"

तभी हेमा आ गई। उसने भी काका का समर्थन किया और जानकीको घर जानेकी छुट्टी दे दी। हाँ, गौरीको घर भेज देने पर उसने विशेष बल दिया।

:o: :o: :o:

घरमें गौरीने डरते-डरते प्रवेश किया। उसने देखा कि पूरा परिवार एक बड़ी मेजके चारों ओर एकत्रित है और नाश्ता चल रहा है। काका गौरीकी झिझक भाँप गये। उन्होंने उसे सहारा दिया––"आओ गौरी, आओ! डरो नहीं, इसे अपना ही घर समझो।"

हेमाने गौरीकी ओर देखा तो उसे कुछ अजीब-सा लगा। गलेमें कुछ घुटन महसूस हुई। कैप्टन साहबने गौरीको देखनेका कष्ट नहीं किया, आरामसे आमलेट-रोटी खा रहे थे। रूबीने गौरीको देखा तो जोरसे हँस पड़ी। हेमाकी ओर देख कर बोली––"ममी! यह फुहड़ क्या काम करेगी, उल्लू जैसी आँख फाड़-फाड़ कर तो कमरेको देख रही है।"

हेमाको रूबीका यह व्यवहार पसन्द नहीं आया। उसे मालूम था कि अगर गौरी न आती तो घरके सब छोटे-बड़े काम उसे ही करने पड़ते क्योंकि रूबीके बसका कुछ नहीं है। उसने रूबीको झिड़क दिया––

"रूबी तुममें मैनर्स नहीं है बिल्कुल ! मेज पर बैठ कर इतनी जोरसे हँसा जाता है क्या ? और घर आनेवालोंके साथ...चाहे वह नौकर ही क्यों न हो...क्या इसी तरह "बिहेव" करते हैं ? पहाड़ जैसी होती जा रही हो पर समझ कौड़ी भर की नहीं !" फिर गौरीकी तरफ मुड़ कर बोली—"जा रसोईसे चायका पानी ले आ। देख, केटलीको सँभाल कर उठाना गिरने न पाये।" गौरी जा कर केटली ले आई पर उसके हाथ काँप रहे थे।

कुछ देर बाद नाश्ता समाप्त हुआ। रूबी पढ़ने चली गई, केप्टन साहब काम पर चले गये। काका अपने कमरेमें जा कर अखबार पढ़ने लगे। गौरी हेमाकी आज्ञानुसार 'डस्टर' ले कर बैठककी मेज़-कुर्सी पोंछने लगी। हेमा कुछ देर तक गौरीका काम देखती रही फिर बोली—"चल रसोईमें !" गौरी डर गई। हेमाने रसोईघरमें आ कर डबलरोटीके दो टुकड़े काटे, उन पर मक्खन लगाया और अपने हाथसे गिलास भर चाय बना कर उसे दी। जाते हुए हेमाने कहा—"पहले इसे खाले और फिर जा कर बैठक साफ कर देना।" गौरीने सिर हिला दिया और कोनेमें बैठ कर डबलरोटी खाने लगी।

हेमाके जानेके बाद खानसामाने कहा—"वाह गौरी, तूने आते ही मालकिन पर जादू कर दिया।"

गौरीको खानसामाका यह मजाक अच्छा नहीं लगा। उसने एक बार खानसामाकी ओर देखा और फिर चाय पीने लगी। उसने मन ही मन निश्चय कर लिया कि वह इस खानसामासे कभी बात नहीं करेगी।

खानसामाको जब अपनी बातका कोई उत्तर नहीं मिला, तो उसने भी मन ही मन तय कर लिया कि वह गौरीको कमसे कम खाना देगा। जब भूख सताएगी, वह झख मार कर उसके पास आएगी।

नाश्ता कर चुकनेके बाद गौरीने ग्लास और प्लेट धो कर रख दिये और बैठकमें चली गई।

:o: :o: :o:

गौरीने बैठककी सफाईके बाद अन्य कमरोंकी सफाई की और अन्त में वह रूबीके कमरे में पहुँची। रूबीका कमरा उसे बहुत अच्छा लगा।

उसके मनमें इच्छा उत्पन्न हुई—"अगर मेरे पास भी एक ऐसा ही कमरा होता तो ?"

वह वहाँकी एक-एक वस्तुको ध्यानसे देखने लगी । सारी मेज पर रखी. . .पुस्तकें, आइनेवाली मेज पर रखा श्रृंगारका सामान, दीवारों पर लगे चित्र, खिड़की और दरवाजों पर लगे हुए रंगीन पर्दे. . .और एक कोनेमें रखे हुए जूतोंका ढेर, जैसे जूतोंकी छोटी-मोटी दूकान हो ।

वह क्षण भरको भूल गई कि वह कमरा और उसमें रखी चीजें किसी और की हैं । उसे महसूस हुआ कि वह कमरा उसीका है और वहाँ रखी प्रत्येक वस्तु पर उसका अधिकार है । वह खूब उत्साहसे कमरेकी सफाईमें जुट गई । एक-एक वस्तुको वह निहारती जाती थी और साफ करके रखती जाती थी । जब जूतोंकी सफाईकी बारी आई तो उसने उन्हें साफ करनेके बाद पहनना शुरू किया । पहले जूतोंको वह पहन लेती और फिर उसे रख देती । इन सबसे निपट कर उसने चित्रोंकी सफाई शुरू की ही थी कि रूबी आ पहुँची—"किसने तुझे मेरे कमरेमें घुसने दिया ? . . .निकल जा मेरे कमरेसे एकदम ।" रूबीने सुबहका बदला ले लिया ।

रूबीकी फटकारने गौरीके उत्साह पर ठंडा पानी डाल दिया । वह सोच रही थी रूबी अपने कमरेकी इस सफाईको देख कर खुश हो जाएगी । उसकी समझमें नहीं आया कि रूबीने आखिर उसे डाँटा किस बात पर ! गौरी जहाँ खड़ी थी वहीं काठकी मूर्तिकी तरह खड़ी रह गई । वह इस फटकारके लिये तैयार नहीं थी । रूबीने जब देखा कि गौरी कमरेसे निकलनेके बदले कमरेमें ही खड़ी है तो वह और जोरसे उबल पड़ी—"निकलती है कमरेसे या धक्के मार कर निकाल दूँ तुझे ?"

इस चिल्लानेसे गौरीको होश आ गया । वह झाड़ू और डस्टर लेकर कमरेसे बाहर जाने लगी तभी हेमा आ गई और रूबीसे शोरका कारण पूछने लगी । रूबी चुप रही परन्तु गौरीसे चुप नहीं रहा गया । उसने कहा—"मैं इस कमरेकी झाड़-पोंछ कर रही थी तो. . ." वह वाक्य पूरा भी नहीं कर पाई और उसे रोना आ गया । गौरीको रोता देख हेमा

को दु:ख हुआ, वह बोली—"गौरी, तू कलसे रूबीका कमरा मत साफ किया कर। जब तक ते ी माँ बीमार है अपने कमरेकी सफाई रूबी खुद कर लिया करेगी।"

हेमाके पीछे-पीछे गौरी भी आँसू पोंछती बाहर आ गई। झाड़ू और 'डस्टर' को उसने यथास्थान रख दिया और घर जाने लगी, किन्तु हेमाने उसे रोक लिया और अपने कमरेमें ले जाकर उसे बिस्कुट और गोलियाँ दीं। गौरीने बिस्कुट ले लिये और मुस्कराने लगी।

:o: :o: :o:

दूसरे दिन गौरी काम पर नहीं गई। उसे काम करके भी घुड़की खाना कुछ अच्छा नहीं लगा। वह गरीब है तो क्या, ज़बरदस्ती बातें सुननेके लिये वह तैयार नहीं है. और यह भी समान आयुकी लड़की से? उसने कल शाम ही माँसे गाँव वापस लौटनेकी बात कही थी। जानकी भी गाँव लौटनेको तैयार थी, अगर कोई अड़चन थी तो वह थी राधा। इधर राधाको न जाने क्या हो गया था कि वह शहरमें रह कर चन्दूकी अन्तिम इच्छा पूरी करने पर तुली हुई थी। गौरी और जानकी राधाका निर्णय जानना चाहते थे कि मालिकके घरसे खानसामा आ गया और उसने बताया कि मालकिनने गौरीको बुलाया है। गौरी कभी माँकी ओर देखती और कभी बुआकी ओर। वह जानना चाहती थी कि उसे नौकरी पर जाना चाहिये या गाँव लौटनेकी तैयारी करनी चाहिये। राधाने दो क्षण चुप रह कर कहा—"गौरी, जा मालकिनने बुलाया है तुझे।"

जानकीको आश्चर्य हुआ जो राधा गाँव लौटनेके लिये इतनी बेचैन थी वही आज गाँव वापस जानेकी बातको टाल गई थी।

गौरीने बुआका निर्णय सुना तो भारी मन ले कर काम पर चली गई। मालिकके घर जाते ही गौरीने हेमाको नमस्कार किया, तो हेमा बोली—"गौरी जब तक तेरी माँ बीमार है तब तक तू ही काम पर आ जाया कर, जो तुझे अच्छा लगे वही काम कर, ..समझी। जा, मेज़ पर मैंने तेरे लिये नाश्ता रखा है पहले उसे खा ले।"

गौरीने सिर लटका कर कहा—"मुझे भूख नहीं है।"

"भूख कैसे नहीं है !" हेमाने लाडसे कहा—"तेरी उमरकी लड़कीको तो दिन भर खाना चाहिये, जा खाले जा कर, नहीं तो पीट-पीट कर खिला दूँगी ।"

गौरीको यह सब बहुत अच्छा लगा । वह नाश्तेकी प्लेट ले कर एक ओर बैठ गई और खाने लगी ।

गौरी जब काम कर रही थी तो हेमा उसे बराबर देखे जा रही थी । गौरीको देख कर उसके मनमें न जाने क्यों अज्ञात स्नेहका भाव उमड़ा पड़ता था । वह मन ही मन सोच रही थी कि गौरीको वह एक साड़ी, एक ब्लाउज़, बढ़िया लाल रंगकी चूड़ियाँ और कानपुरी चप्पल खरीद देगी ।

गौरी जब काकाके कमरेमें सफाई करने पहुँची तो काकाने गौरीसे पूछा—"क्यों गौरी, कुछ पढ़ा-लिखा भी है या...?"

"सरकार मैं....!" गौरीने मुँह खोला ।

"मुझे सरकार मत कहो, काका ही कहा करो, जैसे रूबी कहती है ।"काकाने बीचमें टोक कर कहा ।

"रूबी तो आपकी बेटी है न ? मैं तो..."

"तुम भी मेरी बेटी हो और मैं तुम्हारा काका हूँ समझीं ।"

गौरी मुस्कुराई और मेज साफ करनेमें लग गई । काकाने अपना प्रश्न फिर दोहराया—"बताया नहीं गौरी, तूने पढ़ाई कहाँ तक की है ?"

"मैंने छै जमात तक पढ़ाई की है काका और रामायण पूरी पढ़ी है ।" गौरीने उत्साहसे कहा ।

"अच्छा मुझे सुनाओगी रामायण ?" काकाने पूछा ।

गौरी खुशीके मारे झूम उठी कि उसकी पढ़ाईका भी महत्त्व है । "आज सुना दूँ काका ?" उसने खुशी-खुशी पर कुछ सकुचाते हुए पूछा ।

"हाँ, हाँ ! जरूर आज ही सुना देना । काम खत्म करके नहा-धो कर मुझे रामायण सुनाने यहीं आ जाना । बहुत दिन हो गये मैंने रामायण नहीं सुनी है ।...तब तक मैं भी नहा कर आता हूँ ।"

काम समाप्त कर, गौरी नहा-धो कर अगरबत्ती और रामायण ले कर काकाके कमरेमें पहुँच गई। काका आराम-कुर्सी पर बैठे प्रतीक्षा कर रहे थे।

गौरीने अगरबत्ती जला कर रामायण खोली। कमरेमें अगरबत्तीकी सुगंध फैल गई।

काकाने पूछा—"गौरी कौन-सा कांड पढ़ेगी तू ?"

"उत्तरकांड, काका!" गौरीने 'काका' शब्द पर बल देते हुए कहा।

"सुन्दरकांड नहीं पढ़ेगी ?"

"नहीं काका, उत्तरकांडमें मेरा मन खूब लगता है।"

"अच्छा, अच्छा, उत्तरकांड ही पढ़।" काकाने अपनी सहमति देते हुए कहा।

गौरी मुस्कराई फिर उत्तरकांडका पृष्ठ खोल कर हाथ जोड़ कर बोली—"बोल सियावर रामचन्द्रकी जय !"

काका चुप थे। गौरीने काकाकी ओर देख कर कहा—"काका आप भी कहिये न !"

काका ने हाथ जोड़ कर, आँख बन्द कर कहा—"बोल सियावर रामचन्द्र की जय !"

फिर गौरीने सस्वर पढ़ना आरम्भ कर दिया—

श्री गणेशाय नमः
श्री जानकी वल्लभो विजयते
केकीकण्ठाभनीलं सुरवरद्विवलसद्विप्रपादाब्जचिह्नं
शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम्।
पाणौ नाराचचापं, कपिनिकरयुतं बन्धुना सेव्यमानं
नौमीड्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढ़रामम्!"

और गौरीने फिरसे हाथ जोड़ कर कहा—"मैं पुष्पक-विमान पर आरूढ़ श्री रामचन्द्रजीको निरन्तर नमस्कार करती हूँ।"

काकाको गौरीका यह भक्तिभाव बहुत अच्छा लगा। उन्हें लगा रघुनाथका घर इस भक्तिभावसे शून्य है, इसीलिये मन को शान्ति नहीं

मिलती। सदैव ऐसा अनुभव होता है कि जैसे इस घरमें कुछ कमी है। इस भक्तिपूर्ण वातावरणसे घरमें कैसी पवित्रता फैल जाती है।

गौरी फिर पढ़ने लगी——

"कोसलेन्द्र पदकंजमंजुलौ कोमलाब्जमहेशवन्दितौ।
जानकी करसरोजलालितौ चिन्तकस्य मन भृङ्गसंगिनौ
कुन्दइन्दुदरगौरसुन्दरं अम्बिकापतिमभीष्टसिद्धिदम्
कारुणीककलकंजलोचनं नौमि शंकरमनंगमोचनम्।"

"काका समझमें आ गया?"

"जरा अर्थ भी पढ़ती जा!" काकाने कहा। "अच्छा!" गौरीने कहा——"कोसलपुरी के श्रेष्ठ स्वामी श्री रामचन्द्रजीके सुन्दर और कोमल दोनों चरण कमल ब्रह्माजी और शिवजी द्वारा वंदित हैं, जो जानकीजी के कर-कमलोंसे दुलराये हुए हैं और चिन्तन करनेवालेके मनरूपी भौंरेके नित्यसंगी हैं अर्थात् चिन्तन करनेवालोंका मनरूपी भ्रमर सदा उन चरण कमलोंमें लगा रहता है। कुन्दके फूल चन्द्रमा और शंखके समान सुन्दर गौरवर्ण, जगज्जननी श्री पार्वतीजीके प्रति वांछित फलके देनेवाले दुखियों पर सदा दया करनेवाले, सुन्दर कमलके समान नेत्रवाले, कामदेवसे छुड़ाने-वाले कल्याणकारी श्री शंकरजीको मैं नमस्कार करती हूँ।"

गौरीने फिर हाथ जोड़े। देखा-देखी काकाने भी हाथ जोड़े। गौरी फिर पढ़ने लगी।

"रहा एक दिन अवधि कर, अति आरत पुर लोग।
जहँ तहँ सोचहिं नारि नर, कृस तन राम वियोग॥

जब श्री रामचन्द्रजीके लौटनेका एक ही दिन बाकी रह गया तब नगरके लोग बहुत अधीर हो गये।"

"हाँ, वह तो होगा ही?" काकाने कहा——रामचन्द्रजी लौट रहे थे तो नगरके लोग अधीर होंगे ही।

"काका, अगर रामचन्द्रजी नहीं लौटते तो सबको कितना बुरा लगता। मुझे तो लगता है सबसे बुरा रामचन्द्रजीको ही लगता। वे जंगल-जंगल भटकते जाते और माताको याद करके मन ही मन रोते जाते। क्यों

काका !" और गौरी काकाकी ओर देखने लगी। काकाके विचार एकदम कमरेसे उड़ कर खोई बेबीको देखनेके लिए जंगल-जंगल भटकने लगे। उन्हें ऐसा लगा जैसे उनकी बेबी जीवित है और जंगल-जंगल भटक कर घर वालोंको याद कर रो रही है। बेबीकी साकार मूर्ति उनके कल्पना नेत्रों-के सम्मुख खड़ी हो गई। काकाकी आँखें भीग गईं। गौरीने काका की इस स्थितिको देखा तो वह कुछ समझ नहीं सकी। वह दो क्षण उन्हें चुपचाप देखती रही और फिर आगे पढ़ने लगी —

"सगुन होहिं सुन्दर सकल, मन प्रसन्न सब केर।
प्रभु आगमन जनाव जनु, नगर रम्य चहुँ फेर॥

गौरीने फिर काका की ओर देखा परन्तु काकाका ध्यान कहीं और था, नेत्र सजल थे। गौरी कुछ घबराई। काकाके कमरेके प्रवेश द्वार पर रूबी खड़ी थी। रूबीने काका की ओर देखा फिर गौरीकी ओर। गौरी और घबराई और रामायण उठा कर बाहर आ गई। जब गौरी काकाके कमरेसे काफी दूर हो गई तो रूबीने उसे रोक लिया और डाँट कर बोली—"क्यों रुला दिया तूने काका को ?" गौरी घबरा कर बोली—"मैंने तो कुछ नहीं कहा, काका रामायण सुनते-सुनते खुद ही रो पड़े।"

रूबी और दृढ़ होकर बोली—"किसने कहा था तुझे रामायण सुनाने को... बता ?"

गौरीने निस्संकोच कहा—"काकाने।"

रूबी मुँह मटका कर बोली—"बड़ी आई काकावाली। तेरे काका कबसे हो गये वह ! नौकरानी कहीं की।"

गौरीको बहुत बुरा लगा। उसके अन्दरका छोटा-सा कोमल मन तड़प उठा, हाहाकार कर उठा। उसका गला घुट-सा गया। वह वहाँसे भाग खड़ी हुई। रुकती तो शायद फूट-फूट कर रो पड़ती।

"काका को जब होश आया तो उन्होंने अपने पास बजाय गौरीके रूबीको पाया। उन्होंने गौरीको पुकारा तो रूबीने कहा— मैंने भगा दिया उस को।"

"क्यों भगा दिया ?"

"उसने आपको क्यों रुलाया ?" रूबीने लाडसे कहा ।

"उसने थोड़े ही रुलाया था । मुझे खुद ही रोना आ गया था । जा उसको बुला ला ।

"वह आयेगी तो फिर उल्टी-सीधी बात कर आपका मन दुखायेगी । रूबीने मचलते हुए कहा ।

"नहीं दुखायेगी, जा उसे बुला ला, जल्दीसे ! काकाने हँस कर कहा ।

न चाहते हुए भी रूबी गौरीको बुला लाई । गौरीको देखते ही काकाने कहा—"अरे रामायण क्यों नहीं लाई ? तू तो मुझे रामायण सुना रही थी न ?" काकाने स्नेहसे गौरीके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा ।"

"नहीं काका, मैं आपको रामायण नहीं सुनाऊँगी । आप रामायण सुन कर रो पड़ते हैं और रूबी बाबा मुझ पर नाराज हो जाती है ।" गौरीने यह कह कर रूबीकी ओर देखा और फिर काकाकी ओर देखने लगी ।

काका मुस्करा कर बोले—"तू भी रूबीसे डरती है न ? मैं भी रूबीसे डरता हूँ । वह तो अंग्रेज है अंग्रेज ! उससे सभी डरते हैं ।"

गौरी हँस पड़ी । रूबी सकुचाई । उसी समय हेमाने कमरेमें प्रवेश किया—"इस अंग्रेजको हमलोग विलायत भेज देंगे । इसका हिन्दुस्तानमें क्या काम है ? क्यों ठीक है न रूबी"—हेमाने उसे चिढ़ाते हुए कहा ।

"क्या ममी !" कुछ खीझ कर रूबी बोली—"सब गौरीकी ऐसी तारीफ कर रहे हैं जैसे वह बहुत अच्छी है, पढ़ना तक तो आता नहीं उसे—"औरमैं अबकी डिसेम्बरमें मैट्रिक पास कर लूँगी ।" अन्तिम बात रूबीने कुछ गर्वसे कही ।

काकाने गौरीका पक्ष लिया—"पढ़ना कैसे नहीं आता गौरीको ? अभी रामायण पढ़ रही थी, भजन भी गा लेती है—हाँ, अपनी रूबीकी तरह अंग्रेजी पढ़ना, अंग्रेजी ढंगसे रहना नहीं आता ।"

"पर काका बिना अंग्रेजी शिक्षाके आजकी पढ़ाई अधूरी है, और आपको यह मानना पड़ेगा कि बिना पढ़ाईके जीवन अधूरा है। भगवान् न करे अगर गौरीके ऊपरसे अभी माँकी या शादीके बाद पतिकी छत्रछाया हट गई तो वह केवल आया बन कर अपना पेट पाल सकती है और ...!" हेमा अपनी बेटीकी तरफसे बोली।

लेकिन काका गौरीकी उच्चता सिद्ध करने पर ही तुले हुए थे, हेमाकी बात बीचमें ही काट कर बोले—"तुम्हारी रूबीमें ही ऐसे कौन-से गुण हैं? अगर उसकी शादी कर दोगी तो भी वह अपने घरको सुखी नहीं बना सकेगी। सारा घर नौकरोंके भरोसे छोड़ कर दुनिया भरमें घूमेगी। एक मिनट तो उसके पैर घरमें नहीं टिकते। घरका काम करना तो वह नीच काम समझती है। और भगवान् न करे अगर उसके ऊपरसे भी घर-वालोंकी छत्रछाया हट जाये तो उसने अभी पढ़ाई ही कितनी की है कि उसे कोई अच्छी नौकरी मिल जायगी।"

"वह, जूलीको मेट्रिक पास करते ही साठ रुपयोंकी नौकरी मिल गई!" रूबीने काकाकी बात गलत सिद्ध करनी चाही।

"साठ रुपयेसे आजके जमानेमें क्या होता है और तेरे लिये तो सौ रुपये भी जेब-खर्चके लिये कम है। तू अपने खर्चको देख। दुनिया भरके साज-शृंगार चाहिएँ, नये-नये कपड़े चाहिएँ, सिनेमा चाहिए, क्लब चाहिए और न जाने क्या-क्या चाहिए। अगर तुझे बना-बनाया घर और बहुत-सा पैसा भी दे दिया जाये तो भी तू उसे कुछ ही दिनोंमें फूँक कर रख देगी। गौरीको देखो उसे चाहे, कुछ भी मत दो पर वह अपनी मेह-नत से रोटी कमा कर इज्जतके साथ रह सकती है।" काकाने कहा।

गौरीकी ओरसे अत्यधिक पक्ष लिया जाता देख रूबी खीझ उठी, बोली—"तो काका आप चाहते हैं कि मैं भी आयाका काम करके रोटी कमाऊँ?"

"नहीं, मैं यह नहीं चाहता।" काकाने संयत स्वरसे कहा—"आया किसे कहते हैं, जो दूसरोंके कुटुम्बमें जा कर वेतन लेकर घरका काम करे, किन्तु वही काम अपने ही घरमें बिना वेतन किया जाये तो वह घरकी मालकिन होती है या घरकी बेटी होती है। हरेक लड़कीको चाहे वह

कितनी ही लिख-पढ़ जाये—घर पहले देखना चाहिये—और फिर रूबी हम हिन्दुस्तानियोंको यह अंग्रेजी ढंगसे रहना लिपस्टिक रूज़में खोये रहना, बाल कटाना, यह सब अच्छा लगता है क्या बेटी ?"

"वाह आप हम लोगों की ही बात कह रहे हैं। आप लोग भी तो अंग्रेजी कपड़े पहनते हैं, कमीज, फुलपैंट टाई यह सब क्या अंग्रेजी ढंगका रहन-सहन नहीं है ?"—रूबीने प्रश्न किया।

"तुम ठीक कहती हो। ये कमीज, फुलपैंट, टाई हमारा पहनावा थोड़े ही है, इनको हमें छोड़ देना चाहिये। लेकिन रूबी एक वस्तु होती है आवश्यकता और उसकी मजबूरी बड़ी चीज होती है। आज हमारे दफ्तरोंमें, बाजारोंमें, दुकानोंमें इसका चलन इतना अधिक हो चुका है और वह पहनावा लोगोंकी आँखोंमें इतना बस गया है कि इनसे छुटकारा पाना कठिन हो चुका है परन्तु लिपस्टिक न लगाई जाये, बाल न कटाये जायें, फ्राक न पहनी जाये, साड़ी पहनी जाये तो तुम्हारे जीवनमें क्या अन्तर पड़ेगा, बताओ ? पैन्ट-कमीज इतनी बुरी वस्तु है भी नहीं और अच्छी वस्तु कहींसे भी, किसी भी देशसे ली जा सकती है। मुझे अंग्रेजों या अंग्रेज औरतोंसे कोई घृणा नहीं है। उनमें भी सद्गुण हैं। ऐसे सद्गुण हैं जो हमारी नारियोंमें नहीं हैं, वह लें तो अच्छी बात है। वे खर्च करना जानती हैं तो कमाना भी जानती हैं, मेहनत करना जानती हैं। घरका काम करनेसे भी जी नहीं चुरातीं, परन्तु यह सब हम उनसे नहीं सीखते। सीखते हैं तो बस बाह्य प्रदर्शन ही। हमने उनसे खर्च करना सीखा है। सच पूछो तो आजके इस समानाधिकारके युगमें मुझे वह स्त्रियाँ भी अच्छी नहीं लगतीं जो शृंगार कर गुड़िया बनी रहती हैं और बैठी-बैठी घरका खर्च बढ़ाती हैं।"

हेमाको काकाकी बात अच्छी नहीं लगी। उसे लगा जैसे उसीको लक्ष्य कर काका यह सब बातें कह रहे हैं। उसकी इच्छा हुई कि वह भी काकाको बता दे कि इस सबकी जिम्मेदारी पुरुष वर्ग पर ही है, वही नारियों को गुड़िया बना कर रखना चाहता है—परन्तु यह सोच कर वह चुप रह गई कि वृद्ध काकासे मुँह लड़ाना उसे शोभा नहीं देता। कुटुम्बमें बेबीके

बाद सबसे अधिक स्नेह काका हेमासे ही करते थे। यह प्यार उसकी वाणीका अवरोधक बन गया। बेबीके खोनेका दुख जितना काका को है उतना घरमें किसीको नहीं है शायद हेमाको भी नहीं, यह बात हेमा अच्छी तरह जानती थी। काका अपनी जीवन भरकी कमाई बेबीको देना चाहते थे और बेबीके खो जानेके बाद उनका इरादा बेबीकी स्मृतिमें लड़कियोंका एक स्कूल खोलनेका था परन्तु अभी भी काकाकी आशाकी डोर टूटी नहीं थी। यही सब सोच कर हेमाने वहाँसे उठ कर चला जाना ही ठीक समझा। हेमाको जाते देख काका को दुःख हुआ। उन्होंने आर्द्र स्वरमें कहा—"क्यों हेमा बुरा मान गई क्या ? मैं तो यह सब रूबीको ठीक रास्ते पर लानेके लिये कह रहा था।

"नहीं काका, आपकी बातका बुरा क्यों मानूँगी किन्तु इतना कहती हूँ कि रुबीको रास्ते पर लानेके लिये उसके पिताको पहले रास्ते पर लाना होगा।" और हेमा हँसती हुई चली गई।

काका हेमाकी बातकी गुरुता समझ गये। दो क्षण चुप रहे। उन्होंने एक बार रूबीकी ओर देखा और फिर गौरीकी ओर, गौरी अभी तक खड़ी थी। काकाने उसे बैठ जानेके लिये कहा तो वह जहाँ थी वहीं सिकुड़ कर बैठ गई। गौरीने सोचा—यदि वह पढ़ी-लिखी होती तो काका उसका और अधिक पक्ष ले सकते थे। लह तो बचपनसे ही खूब पढ़ना चाहती थी। उसकी माँको यह सब पसन्द नहीं था। अगर अब भी कोई गौरीको पढ़ाना चाहे तो गौरी पढ़ ले।

गौरीको विचारोंमें डूबा देख काकाने उससे पूछा—"क्या सोच रही हो गौरी ?"

"काका मैं सोच रही थी कि मैं भी पढ़ी-लिखी होती तो कितना अच्छा होता।" फिर स्नेहसे गौरीने काकाके चेहरे पर अपनी आँखें स्थिर कर पूछा—"मैं पढ़ूँ तो कोई हँसेगा तो नहीं काका ?"

"पढ़ना कोई बुरी बात है जो उस पर कोई हँसेगा ? और हँसीके डरसे अच्छा काम छोड़ देना कौन-सी बुद्धिमत्ता है पगली !"

गौरीकी हिम्मत बढ़ गई उसने पूछा—"काका आप मुझे पढ़ा देंगे ?"

"अवश्य पढ़ा दूँगा और तुझे स्कूलमें भी भरती करवा दूँगा। तुझे मेहनत करनी पड़ेगी लेकिन।"

"मेहनत करनेके लिये मैं तैयार हूँ।"

काका गौरीके उत्साहसे प्रभावित हुए। उसे समझाते हुए काकाने कहा—"देख गौरी! पढ़ना अवश्य, परन्तु फैशनके चक्करमें मत पड़ना और तुझे तभी तक पढ़ाऊँगा जब तक तू हिन्दुस्तानी बनी रहेगी।"

"काका! जैसा आप कहेंगे वैसी ही बनूँगी।" गौरी मचल कर बोली।

रूबीको काका और गौरीका इस प्रकार स्नेहसे बोलना अच्छा नहीं लगा। 'काका नौकरानीके सामने उसे नीचा दिखा रहे हैं'—उसने सोचा। काकाकी बुद्धिको भी न जाने क्या हो गया है। मेरे सामने इस नौकरानीमें उन्हें गुण ही गुण दिखाई दे रहे हैं। होना तो यह चाहिये था कि मेरे गुणोंकी प्रशंसा कर काका इस गौरीकी बच्चीको ज़लील करते पर हो रहा है उल्टा ही। अब नौकरानीको पढ़ा कर काका भारतीय नारीका गौरव बढ़ायेंगे। घरका काम करो बस इसीमें काकाको नारीकी गरिमा दिखाई देती है। इतना भी नहीं सोचते काका कि यदि हम लोग सब काम करने लगें तो इन नौकरोंका क्या हाल होगा? भूखे मर जाएँगे या नहीं। काका की बातोंमें रूबीको कोई सार नहीं दीखा। उसने सोचा—"जिस प्रकार वह अपना जीवन व्यतीत कर रही है वही ठीक तरीका है। अच्छे और बड़े घरके लोग सब इसी प्रकार रहते हैं...आखिर पिताजी भी तो अच्छा-बुरा समझते हैं। वह तो उसे खर्च करनेको खूब पैसे देते हैं फिर काका को क्यों बुरा लगता है?" काकासे रूबीका क्रोध गौरी पर पहुँचा—"जबसे यह भूतनी घरमें आई है, तबसे काकाका मन इसी पर जमा रहता है। इसको इस घरसे मैंने नहीं भगाया तो मेरा भी नाम रूबी नहीं है। बड़ी आई पढ़नेवाली!" और रूबीने गौरीकी ओर घृणासे देखा। गौरीकी दृष्टि भी रूबी पर पड़ी। आखोंसे रूबीकी घृणा छिपी न रह सकी।

उसी समय टामीने भौंकना शुरू किया। टामीका भौंकना किसीके आगमनकी सूचना थी। हेमाको बैठककी ओर जाते देख रूबी भी उसके

पीछे चली गई। गौरी उठ कर अपने घर चली गई और काका अपनी जगह पर ही बैठे रहे। एक क्षण बाद कैप्टन साहबकी आवाज आई—"हैलो मिस्टर टामी, हाऊ डू यू डू ?"

:o: :o: :o:

जैसे ही गौरी घर पहुँची, उसका दिल धक्से रह गया। पदम चाचा अन्दर बैठे थे और बुआ गाँव जानेकी तैयारी कर रही थीं। अभी वह सँभल कर पदम चाचाको राम-राम भी नहीं कर पाई थी कि पदम चाचाने एकदम कहा—"अरे भूतनी तू तो बहुत बड़ी हो गई !" गौरीने कुछ झेंप कर हाथ जोड़ कर राम-राम की। पदमने उसके सिर पर एक हल्की-सी चपत जमाई और कहा—"चल, गाँव चलनेके लिये तैयार हो जा !" गौरीका मुँह लटक गया। वह सोचती आ रही थी कि माँसे जाकर कहेगी कि उसे काका पढ़ानेको राज़ी हैं और वह उसका नाम किसी स्कूलमें लिखवा दे...और वहाँ बुआ सामान बाँधने बैठी थीं।

जानकीने दो थालियाँ परोस दीं। एक पदमके लिये और दूसरी राधाके लिये। पदम खाते जा रहे थे और राधासे शिकायत करते जा रहे थे कि चन्दू भैयाका देहान्त हो गया और उसने उन्हें खबर तक न दी। क्या चन्दूके मरते ही वह पराये हो गये ? राधाका गुस्सा गौरी पर उतरा। पदम जबसे इसी बात पर अड़े थे कि उनको समाचार न देनेका सारा दोष राधाके सिर है। राधाने जानकीसे अभी तक यह नहीं बताया था कि उसके अजानेमें उसने गौरीसे पत्र लिखवा कर उन्हें भिजवाया था। गौरीको सामने देख वह उसी पर उबल पड़ीं—"लिखवाया कैसे नहीं था ? इसी गौरीसे तो लिखवाया था...पता नहीं इसने कैसे लिखा था...या फिर डाला ही नहीं चिट्ठीके डिब्बे में...!"

गौरी ज़रा घबरा गई। उसे मालूम था कि वह पत्र पदम चाचा तक पहुँच ही नहीं सकता था क्योंकि वह उसने फाड़ कर फेंक दिया था। फिर भी उसने दुस्साहस किया, कहा—"डाला कैसे नहीं था...और तुमने जो पता बताया था वही तो लिखा था...वैसे मुझे पढ़ना ही कितना आता है कि कुछ ठीकसे लिख-पढ़ सकूँ...हो गई होगी गलती लिखने में।"

"हाँ...हाँ...बड़ी आई पढ़नेवाली ! तुझे क्या नौकरी करनी है पढ़-लिख कर...कल हाथ पीले हो जाएँगे तो कलम नहीं करछुल ही काम आएगा, समझी !" बुआने कहा ।

"अरे तुम तो बेकार ही बच्ची पर बिगड़ रही हो...सच तो कह रही है, वह उसे पढ़ाया न लिखाया, चन्दू भैया होते तो क्या उसे न पढ़ाते... जानकी तू इसे अब भी स्कूलमें भरती करा दे, ज़रा पढ़-लिख लेगी तो यह भूतनीकी तरह रहना छोड़..."

"ताऊजी...!" गौरीने लाड़से कहा ।

खाना समाप्त हो चुका था । गौरीने देखा कि सामान सिर्फ बुआका ही बाँधा गया है । उसने जब माँसे पूछा तो उसे मालूम हुआ कि बुआ अभी अकेली ही जा रही हैं । उनका मकान टूट गया है उसे बनवाना है । जब वह बन जाएगा तब ये लोग भी चले जायेंगे ।

जब थोड़ी देर बाद बुआ और पदम दोनों चले गये, तो गौरीने माँके कानमें फुसफुसा कर कहा—"माँ अच्छा हुआ ताऊजी हम दोनोंको नहीं ले गये ।"

जानकीको गौरीकी बात सुन कर आश्चर्य हुआ, उसने पूछा—"क्यों अगर ले जाते तो क्या बुरा होता ?"

"मैं गाँव जाना नहीं चाहती माँ !"

"क्यों नहीं जाना चाहती ? शहरकी हवा लग गई क्या !"

नहीं माँ, तुम तो समझती नहीं हो । फिर स्नेहसे दोनों बाहें उसने जानकीकी गर्दनमें डाल दी और कहा—"माँ, काका कह रहे थे वह मुझे लड़कियोंके स्कूलमें भरती कर देंगे और खुद भी पढ़ाया करेंगे । माँ मुझे भरती करा दो न स्कूल में ।" गौरीने गिड़गिड़ा कर कहा ।

जानकीने भी सोचा कि गौरीकी पढ़ाई बन्द कर उसने अच्छा नहीं किया । कुछ भी हो गौरी बड़े घरकी बेटी है, उसके लिये अनपढ़ रहना ठीक नहीं है । उसने मन ही मन फैसला कर लिया कि वह उसे अवश्य पढ़ाएगी ।

जानकीको चुप देख कर गौरीको सन्देह हुआ कि उसकी बात माँको जँची नहीं। उसने दुखित स्वरमें पूछा—"बताओ न माँ? मुझे पढ़ने दोगी या नहीं?"

"ज़रूर पढ़ाऊँगी अपनी बिटिया रानी को!" जानकीने दुलारसे कहा—"देख कल तू काकाको ले कर स्कूलमें भरती होने चले जाना और मैं काम पर चली जाऊँगी...अच्छा अब चल कर खाना खा ले!" और उसने गौरीका माथा चूम लिया।

माँ-बेटी खाना खाने बैठीं तो मिट्ठूने—"गौरी-गौरी, राम-राम!" चिल्लाना शुरू किया और उस वक्त तक चिल्लाता रहा जब तक उसकी प्यालीको गौरीने चावलसे भर नहीं दिया।

७

अध्याय : ४ :

दिसम्बर १९५४...कैप्टन रघुनाथके शीश-महल और चन्द्रप्रकाशकी कुटिया पर एक साथ ही परीक्षाके बादल मँडराए। रूबी मेट्रिककी परीक्षा दे रही थी और गौरी आठवीं कक्षा की। रूबीको पढ़ानेके लिये दो मास्टर आते थे, कुंजीलालजी हिन्दी और नागरिक-शास्त्र पढ़ाते थे और रूपलालजी अंग्रेजी और शेष विषय। गौरी को जब काका की इच्छा होती तो कुछ पढ़ा देते। रूबीकी पढ़ाईके लिए एक अच्छी मेज़ थी, उस पर दुधिया प्रकाश देनेवाला टेबल लैम्ब था, बैठनेके लिये खूबसूरत कुर्सी थी जिस पर बढ़िया नर्म गद्दी थी। गौरीके लिये जानकीकी कोठरी-का एक कोना, तेलका प्रकाश कम और धुआँ अधिक देनेवाला दीवट और बैठनेके लिए टाटका एक टुकड़ा था। याददाश्त बढ़ानेके लिये रूबीके सिर पर बादामका तेल डाला जाता था। सबेरे उसे बादाम और मिस्री खिलाई जाती थी। गौरी रोज सुबह उठ कर और रातको सोते समय हाथ जोड़ कर भगवान्से सफलताके लिये प्रार्थना करती। रूबी सोनेसे पहले और सबेरे उठ कर सबसे पहले जानीका प्रेम-पत्र पढ़ती। गौरी अपना समय पढ़ाई के सम्बन्धमें सोचनेमें व्यतीत करती, रूबी जानी के। रूबीको सफलता मिलने पर कैप्टन साहब उसे सोनेका मोती जड़ा लाकेट लेनेवाले थे। जानकी गौरीके सफल होने पर उसे काँचकी मीनेवाली लाल चूड़ियाँ खरीद कर देनेवाली थी।

:o: :o: :o:

दिसम्बरकी पन्द्रह तारीखको कैप्टन साहबको दफ़्तरके कामसे कलकत्ता जाना पड़ा। रघुनाथके जानेके पहले ही काका अपने एक मित्र-की बेटीकी शादीमें भाग लेने मेरठ चले गये थे।

उस दिन सबेरे रूबी चाय-नाश्तेके बाद नहा-धो कर साइकल पर सवार हो कर चली गई। न उसने माँको कुछ बताया न हेमाने ही पूछताछ की।

दोपहरको रूबी खाने पर नहीं आई। हेमा बहुत देर तक उसका रास्ता देखती रही। आखिर ऊब कर उसने तीन बजे खाना खा लिया। उसकी समझमें नहीं आ रहा था कि रूबी आखिर बिना खाये-पिये अभी तक कैसे बाहर है। अज्ञात चिन्ता एवं आशंकाओंसे उसका मन काँप जाता। वह सोचती रूबीको कहीं कुछ हो तो नहीं गया...कहीं कोई एक्सीडेण्ट...! या फिर कहीं बदमाशोंके हाथ...नहीं...नहीं ऐसा नहीं हो सकता...! उसने खानसामाको बुलाया। उसे रूबीको बुला लानेकी आज्ञा दी।

खानसामा बेचारा जांनीके घर, रूबीके स्कूल, रूबीकी सहेलियोंके घर सभी जगह ढूँढ़ आया पर रूबी उसे कहीं नहीं मिली। चार बजे आ कर उसने यह सूचना मालकिनको दी। रसोई-घरमें आ कर उसने देखा—जानकी चाय तैयार करनेमें लगी है। खानसामाने जानकीसे फुसफुसा कर कहा—"जानकी! जानती हो रूबी बाबा आज सबेरेसे घरमें नहीं हैं...मालकिनने मुझे उन्हें ढूँढ़नेके लिये भेजा था पर वह कहीं नहीं मिलीं...और तो और जानीके घर भी नहीं मिलीं!" आखरी बात कहते हुए वह अजीब तरहसे हँस पड़ा। जानकीको खानसामेकी भद्दी हँसी बहुत बुरी लगी। उसने चाहा वह उसे झिड़क दे पर कुछ सोच कर उसने ऐसा नहीं किया। खानसामासे बोली—"भैया, रूबी बाबा कहीं बैठ कर पढ़ रही होंगी।"

"तुम बड़ी भोली हो जानकी...रूबी बाबाको तुम नहीं जानती, आजकल उनका मन पढ़ने-लिखनेमें नहीं लगता...वह जानी है न...!"

तभी हेमा दरवाजे पर आ कर खड़ी हो गई और खानसामा चुप हो गया। हेमा जानकीको बुला कर अपने कमरेमें ले गई। उसकी समझमें नहीं आ रहा था कि वह क्या करे? घरमें कोई बड़ा आदमी था नहीं और नौकरोंसे इस सम्बन्धमें अधिक बात भी नहीं की जा सकती। इनका क्या भरोसा...फिर भी जानकीके सद्व्यवहार आदिके कारण और उससे अधिक उसके स्त्री होनेके कारण वह उस पर थोड़ा विश्वास कर सकती थी। हेमाने जानकीको अपने समीप बैठा लिया और रूँआसी हो कर

बोली––"जानकी, तुझे कुछ पता है क्या ? अब कहाँ खोजूँ उसे, वह भी नहीं हैं और काका भी...!"

जानकीको अचानक सबेरेकी घटना याद आ गई। आज सबेरे जब वह गुसलखानेमें सबके कपड़े धो रही थी तो उसे रूबीके फ्राकमें एक कागज मिला था––नीला-नीला-सा। उसे उसने वहीं ऊपर एक कोनेमें रख दिया था, शायद उसमें कुछ कामकी बात लिखी हो।

जानकी बोली––"मालकिन मुझे तो कुछ मालूम नहीं। रूबी बाबा मुझसे कह कर तो कभी जाती नहीं, पर मुझे लगता है..." और जानकी चुप हो गई।

"क्या लगता है तुझे ?...बोल ना, क्या लगता है तुझे ?" हेमाने जानकीके बाजू पकड़ लिए।

जानकी बोली––"नहीं मालकिन, मेरे ही मनकी गलती होगी...न जाने क्यों मेरे मनमें शंका हो रही है कि..."

"क्या शंका हो रही है बताती क्यों नहीं ?" हेमाने उद्विग्न हो कर कहा।

जानकीने कहा––"मालकिन, आप थोड़ी देर बैठिये मैं अभी आती हूँ...और..."

इसके पहले कि हेमा उसे रोके या कुछ बोले जानकी वहाँसे उठ कर तेजीसे चली गई। वह सीधी गुसलखानेमें गई। वह नीला कागज अभी तक ऊपर रखा था, वहाँसे निकाल कर वह सीधी घर गई। गौरी बैठी अपनी पाठ्य-पुस्तक पढ़ रही थी। उसने वह पत्र गौरीको दिया और कहा कि उसे जरा जल्दीसे पढ़ दे। गौरीने पढ़ा––

नई दिल्ली
१४ दिसम्बर '५४

प्राणोंसे प्यारी रूबी,

एन०सी०सी० कैम्पके बाद मैं वापस लखनऊ चला गया था; परन्तु तुम्हारी याद मुझे चैनसे जीने नहीं दे रही थी, इसलिये मैं तुमसे मिलने दिल्ली आ गया हूँ। तुम मुझे १५ तारीखको सबेरे साढ़े नौ बजे कण्टून्मेंट

पार्कमें मिलना। उसके बाद हम दिन भरकी योजना बनाएँगे...जहाँ तुम ठीक समझो दिन वहाँ बिताएँगे।

बाकी मिलने पर।

तुम्हारा अपना
कवि प्रेमी

गौरीसे पत्र वापस ले कर जानकी सीधी हेमाके पास आई। हेमा उसी जगह बैठी अपने विचारोंमें खोई हुई थी। जानकीने वह पत्र हेमाको दे दिया। पत्र पढ़ कर हेमाका सिर घूम गया। अभी-अभी वह पुलिसको टेलीफोन करनेकी बात सोच रही थी किन्तु अब पुलिसको फोन करना व्यर्थ था, पड़ोसियोंकी सहायता लेनेका अर्थ बदनामी मोल लेना था। हेमाने जानकीसे पूछा—"यह तुझे कहाँ मिला ?"

"सबेरे रूबी बाबाकी फ्राक धोते समय मिला था।"

:o: :o: :o:

जानकीके जाते ही गौरी फिर अपनी पुस्तक पढ़ने बैठ गई, परन्तु उसका मन बार-बार उस पत्रकी ओर चला जाता था, जो अभी-अभी उसकी माँ उससे पढ़ा कर गई थी। उसे याद आया उसके काले चाचा केशव मास्टरने उसे एक ऐसा ही पत्र लिखा था, हालांकि उसका कोई अपराध नहीं था फिर भी बुआने उसे कितना डाँटा था। उस दिनकी याद कर उसके शरीरमें सिहरन-सी दौड़ गई। उस पत्रके कारण उसकी पढ़ाई बन्द हो गई थी। उसने सोचा अब रूबीकी पढ़ाई बन्द हो जाएगी... रूबीको खूब डाँट पड़ेगी...शायद मार भी पड़े...और उसका मन करुणासे भर गया...'बेचारी रूबी'! अपराध किसने किया और सजा किसको भुगतनी पड़ेगी। अगर उस कवि प्रेमीने रूबीको पत्र लिखा तो इसमें रूबीका क्या दोष...ये पुरुष भी कैसे होते हैं, जबरदस्ती लड़कियोंको पत्र लिखते हैं और फिर बेचारियोंको माँ-बापकी डाँट और मार पड़ती है। उसका मन पुरुषोंके प्रति घृणासे भर गया। उसकी रायमें केवल दो पुरुष अच्छे थे। एक तो उसके पिता और दूसरे काका...बाकी

सबको जमुनाके पानीमें डाल देना चाहिये, जमुनाके पुलके ऊपर खड़े हो कर।

:o: :o: :o:

मेरी रूबी,

मैं तुम्हें अपनी कलम, प्रतिभा, प्रेरणा, साहित्य सब मानता हूँ। तुम मुझे किसी भी कीमत पर पीछे न हटने दोगी। तुम मेरे लिये केवल स्त्री या रमणी नहीं हो। अगर मुझे केवल स्त्रीकी आवश्यकता होती तो शायद मैं कभीका विवाहित होता, किन्तु मुझे एक ऐसी आत्माकी आवश्यकता थी जो मेरी प्रेरणा बन सके और जिसके लिये मैं केवल पुरुष ही न होऊँ, कुछ और भी होऊँ।...रूबी तुम मेरी प्रेरणा हो, मेरी आत्माकी आवाज़ हो। तुम मुझे भीतर-बाहरसे अच्छी तरह जानती हो, मेरी कमजोरियों को जानती हो और तुममें इतनी शक्ति है कि उन सबको मिटा कर तुम उन्हें मेरी सबलताके रूपमें परिणत कर दोगी। प्रेम सहित।

तुम्हारा अपना

कवि प्रेमी

:o: :o: :o:

मेरी प्यारी रूबी,

आजके वाद-विवादमें तुम्हारे विचारोंने मेरे हृदय पर आघात किया। तुम गरीबोंको, मज़दूरोंको इतना तुच्छ समझती हो यह मैं नहीं जानता था। मैं भी तो गरीब हूँ, तुम मुझे इतना क्यों चाहती हो? केवल इसलिये कि मैं तुम पर, तुम्हारे सौंदर्य पर कविता रचता हूँ?

रूबी, तुम कालीनों पर खेली हो, धूलके बदले मखमलकी नर्मीमें तुम लेटी हो, मोटे और फटे कपड़ेके स्थान पर रेशमी कपड़ोंने तुम्हारे शरीर-को गुदगुदी दी है, तुम्हें क्या पता समाज क्या है, समाजकी दरिद्रता क्या है, उसकी मजबूरियाँ क्या हैं? किस प्रकार अमीरोंके पंजे गरीबोंको कसे हुए हैं, किस प्रकार ऊँचे-ऊँचे पदधारी अपने अन्तर्गत कार्य करनेवालोंको सताते हैं, किस प्रकार सीधे-सादे और भोले-भाले लोगोंका शोषण होता

है (शोषणका अर्थ है 'एक्सप्लॉयटेशन' समझीं) उनका खून चूसा जाता है, उन्हें लात मार कर स्वयंको महान् समझा जाता है। एक साधारण इन्सान, एक दरिद्र मनुष्य आज चाहता क्या है। बस इतना न कि उस मनुष्यको मनुष्यकी तरह जीने दिया जाए किन्तु उसके साथ जानवरोंका-सा व्यवहार किया जाता है, उसके पसीनेकी बून्दोंको पानीसे भी गया बीता समझा जाता है, उसके बदले उसे पेट भर खाना और कपड़ा भी नसीब नहीं होता, हालाँकि वह कामचोर नहीं है। वह दिन-रात कार्य करता है जिससे मालिकके चेहरेकी लाली पनपती है, उसके बेटे और बेटियोंके मोटर और ऐशका सामान आता है...किन्तु जब वही मेहनत कर अपने लिये पेट भर रोटी, तन भर कपड़ा और अपने मुफलिस बेटे-बेटियोंके लिये शिक्षा माँगता है...तो मालिकोंके तेवर चढ़ जाते हैं...। ओह, मैं यह सब क्या लिख गया। तुम्हारे कोमल हृदयको यह कटु सत्य बर्दाश्त न होगा... इन सब बातोंसे तुम्हें क्या मतलब है !

फिर भी तुम्हारा
कवि प्रेमी

:o: :o: :o:

प्रिय,

मुझे आश्चर्य होता है कि मुझमें इतना परिवर्तन क्यों और कैसे हो गया ? मैं फक्कड़ आदमी था पर अब फूँक-फूँक कर कदम रखना चाहता हूँ। मेरे परिवर्तनका कारण भी शायद तुम ही हो; क्योंकि अब मेरी स्वच्छंद प्रकृति पर जैसे दिन-रात पहरा रहता है और तुम ही हो वह पहरेदार। मैं वचन देता हूँ रूबी कि मैं अपने आपको बिल्कुल तुम्हारे अनुकूल बनाना चाहता हूँ। मैं तुम्हें किसी शर्त पर नाराज करना नहीं चाहता।

प्यार सहित...

तुम्हारा ही
कवि प्रेमी

:o: :o: :o:

प्रियतम रूबी,

मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि हमारे विवाहमें तुम्हारे पिता जो कुछ पैसा देंगे उससे मैं कोई धन्धा शुरू करूँगा और सुन्दर-सा घर तुम्हारी इच्छानुसार बनवा दूँगा, जिसमें हम दोनों आरामसे रह सकें।

केवल तुम्हारा
कवि प्रेमी

ये पत्र हेमाको रूबीके तकियेके नीचे मिले। हेमाको अब समझते देर न लगी कि रूबी कहाँ गई है। रूबीको ढूँढ़नेसे कोई लाभ न था क्योंकि रूबी 'कवि प्रेमी'के साथ कहाँ होगी यह निश्चित नहीं था।

:o: :o: :o:

रातके नौ बज चुके थे। कण्टून्मेन्टकी सड़कें, दूर पर छितरे हुए काले-भूरे पठार, सब इस समय रातके सन्नाटेमें चुप थे। ठंडसे सिकुड़ा ऊँचा आसमान कोहरेकी चादर फैलती देख रहा था। पार्कके फव्वारे से फुहार छूटनी बन्द हो गई थी। रंग-बिरंगी मछलियोंने हलचल बन्द कर दी थी और फव्वारेके हौज़की सतहसे डुबकी पड़ी थीं...कोहरेकी मोटी चादरको चीर कर चाँद कभी-कभी पृथ्वीको झाँक लेता था।

हेमाने खाना नहीं खाया था। खानसामा और जानकी खाना खा कर रसोई ठीक करके अपनी-अपनी कोठरियोंमें चले गये थे। गौरीको खाना खिला कर जानकी सो गई। गौरी फिर पढ़ने बैठ गई। दरवाजे पर किसीकी दस्तककी आवाज सुन कर गौरी डर गई। उसने जानकीको उठाया। जानकीने दरवाजा खोला तो देखा मालकिन द्वार पर खड़ी हैं। हेमाने जानकीको अपने साथ चलनेको कहा, तो गौरी भी उसके साथ चल पड़ी। हेमा गौरीको अपने कमरेमें बैठाना चाहती थी पर जानकीके कहने पर उसने उसे रूबीके कमरेमें बैठ कर पढ़नेकी इज़ाजत दे दी।

"जानकी उस चिट्ठीके सम्बन्धमें तूने आज किसीसे कुछ कहा तो नहीं था ?—"हेमाने बरामदेमें आ कर जानकीसे पूछा।

"नहीं तो मालकिन !"

"क्या खानसामा कुछ कह रहा था रूबीके बारेमें ?"

"न. . .नहीं. . .तो मालकिन !" जानकीने रटे हुए पाठकी तरह वाक्य फिर दोहरा दिया ।

"समझमें नहीं आता जानकी क्या करूँ ! आज तेरी समझदारीने घरकी इज्जत बचा ली । अगर तू वह परची मुझे न दिखाती, तो मैं पुलिसमें, अड़ोस-पड़ोसमें शोर मचाती और फिर बदनामी होती और सबको मालूम हो जाता कि रूबी सबेरेसे घरमें नहीं है । किसीको मुँह दिखानेके लायक ये लड़की हमें नहीं छोड़ेगी. . .अब मैं इसे कहाँ ढूँढ़ने जाऊँ बता ?" और हेमाका गला भर आया ।

"मालकिन आप सबर रखिये, रूबी बाबा ज़रूर लौटेंगी. . .वह खुद समझ. . ."

"अरे जानकी तू बड़ी भोली है । समझदार होती तो क्या दिन भर इस तरह गायब रहती और कहीं उस नीच ने मेरी बेटीका आँचल मैला कर दिया तो. . .फिर समझ लो, हमारे घरकी इज्जत-आबरू मिट्टीमें मिल जायेगी ।"

जानकीने सिर झुका कर कहा—"हाँ मालकिन, तुम ठीक कहती हो इसीलिये तो माँ बेटीको जनते ही उदास हो जाती है, औरत हो कर भी वह लड़कीको जन्म नहीं देना चाहती. . .घर में लड़कीके आते ही ऐसा लगता है कि घरकी इज्जत हथेली पर आ गई है और वह कब गिर जायगी, मालूम नहीं ।"

"बेटीकी माँ बन कर जीना कितना मुश्किल है, आज मालूम हुआ !"

"यह तो आजकलके ज़मानेमें हुआ है. . .पुराने ज़मानेमें लड़कियों की शादी इसीलिये दस-बारह सालकी उमरमें करके माता-पिता निश्चिन्त हो जाते थे । जैसे ही उन लड़कियोंके मनमें यौवन लहराता था, उनके सामने उन्हें अपने पति मिल जाते थे. . .।"

बात काटती हुई हेमाने कहा—"पर उसमें भी एक डर रहता है जानकी !"

"कैसा डर सरकार ?"

हेमा दुःखी स्वरसे बोली—"लड़कीवालोंकी सब तरहसे मुसीबत है। बचपनमें शादी कर दो और बड़े होने पर लड़का लड़कीको पसन्द न करे या छोड़ दे या मर जाए...तो लड़की क्या कर सकती है? इसलिये आजकल लड़के-लड़कियोंको पहले पढ़ा-लिखा कर तैयार कर दिया जाता है...और फिर आजकल, जानकी! बेटे-बेटी माँ-बापके नहीं अपने मन के हो गये हैं।

जानकीने हाँमें हाँ मिलाते हुए कहा—"हाँ, मालकिन आप कहती हैं तो ठीक ही होगा...पर यह सब रोना-धोना शहरमें ही है, गाँवोंमें ऐसा कुछ नहीं होता।"

"जब तक यह बीमारी गाँवोंमें न जाय तभी तक ठीक है। नहीं तो सीधे-सादे गाँववालोंकी ज़िन्दगीमें ज़हर घुल जायगा।"

बैठककी घड़ीने साढ़े नौ बजाए। हेमा और जानकी दोनोंको ही मौन छू गया।

हेमा उठ कर प्रवेश-द्वार की ओर चल पड़ी। जानकी भी उसके पीछे-पीछे चली। हेमा प्रवेश-द्वार पर आ कर खड़ी हो गई और घने कोहरेमें आँखें फाड़-फाड़ कर घूरने लगी।

जानकीको मालकिनकी स्थिति पर बड़ा तरस आ रहा था। उसने सोचा आजकल माताओंकी क्या दुर्गति है। बच्चोंको जन्म दो, पालो-पोसो, बड़ा करो और फिर उनकी करतूतों पर सबके आगे सिर झुकाते फिरो। बच्चे क्या हुए दुश्मन हो गए! अच्छा हुआ मैंने किसीको जन्म नहीं दिया...और ये गौरी...गौरी जब तक ठीक है मेरी है, जिस दिन वह भटक गई तो उसे उसकी माँके हवाले करके चल दूँगी अपने घर!...छि...छि...मेरे मनमें अपनी गौरीके लिये ऐसा विचार ही क्यों आया? भले ही उसका जन्म रूबीकी माँकी कोखसे हुआ हो किन्तु उसको पाला तो मैंने है, उसके जीवनको मैंने सँवारा है, वह क्या ऐसी अंग्रेज रूबी जैसी है, वह भला क्यों ऐसे चक्करमें पड़ेगी! ....ये रूबी भी अगर देसी तौर-तरीकोंमें पली होती, तो क्या उसके माँ-बापको यह दिन देखना पड़ता?

हमारे घरोंकी चहारदीवारीमें पली लड़कियाँ लज्जा और पवित्रतासे ही जीवन बिताती हैं इनकी जैसी बेशर्म थोड़े ही होती हैं कि माँ-बापकी आँख के नीचे ही शादीसे पहले यहाँ-वहाँ आँखें लड़ाती फिर रही हैं। शादीके बाद ही अपने गाँवोंकी लड़कियाँ तन-मन पति पर न्योछावर कर उसीके चरणोंमें जीवन-लीला समाप्त कर देती हैं, उसीमें गौरव मानती हैं और यहाँ तो शादीके पहले और बाद भी दूसरी लीला चलती रहती है...हर किसीके साथ घूमेंगी, नाचेंगी, खाएँगी, ये शहरी औरतें भी क्या हिन्दुस्तानी औरतें हैं। इनको न शर्म है न लिहाज, न अपनी इज्जतकी चिन्ता है न घरवालोंकी इज्जत की...शादीके बाद भी ये प्रेम करती हैं, ब्याह रचाती हैं और उसके पहले...तभी उसे एक दिनकी बात याद आ गई।

वह उस दिन कण्टूनमेंट पार्कमें बैठी थी, मालकिनके साथ आई थी। मालकिन किसी सहेलीसे बेंच पर बैठी बातें कर रही थीं और वह थोड़ी दूर हट कर झाड़ियोंके पास ज़मीन पर बैठी थी। उसीके पास झाड़ीके दूसरी ओर दो लड़कियाँ बैठीं आपसमें बात कर रही थीं—

"तुम इस पुस्तकको पढ़ लो फिर तुम्हें बिल्कुल डर नहीं लगेगा...जो चाहे करो...किसी बातका डर नहीं है, माँ बननेका भी नहीं...इसमें सब लिखा है...हाँ, जब तुम्हारी शादी हो जाय तब इन तौर-तरीकोंको भूल जाना, फिर माँ बन जाओगी...क्या समझीं?" और फिर दो लड़कियोंके जोरसे हँसनेकी आवाज़ आई।

जानकीकी इच्छा हुई कि वह जा कर उन दोनों बेशर्म...नीच...लड़कियोंको दो थप्पड़ लगाए...लेकिन...!

ऐसी होती हैं ये शहरकी लड़कियाँ...और ऐसी ही रूबी बाबा भी हैं...उसकी भी कोई ऐसी सहेली होगी जो उससे ऐसी बातें करती होगी, उसे भटकनेके रास्ते बताती होगी। उसका मन शहरवालोंके प्रति घृणा से भर गया।

:o: :o: :o:

"हेलो मिसेज़ रघुनाथ ! यहाँ क्या कर रही हैं इतनी रात गए ?" मिसेज़ चोपड़ाने मिस्टर अरोड़ाकी कारसे उतरते हुए कहा। मिसेज़ चोपड़ा जब भी क्लब जाती हैं मिस्टर अरोड़ाकी कारसे वापस आती थीं और हमेशा कैप्टन रघुनाथके घरके सामने उतरती थीं, जहाँसे उनकी कोठी करीब एक फर्लाङ्ग थी। मिस्टर चोपड़ा रातमें हमेशा देरसे लौटते थे, जब तक रातके एक न बजें वह ताशके पत्तों को छोड़ना पसन्द नहीं करते थे...उनका मत था कि खेल तो बारह बजेके बाद ही जमता है..मिस्टर चोपड़ाके प्रति उनके साथियोंमें भी अजब धारणा थी कि वह बारह बजे तक हारते हैं और उसके बाद जीतते हैं।

हेमाने मिसेज़ चोपड़ाकी बातका अभी कोई उत्तर दिया भी नहीं था कि उन्होंने दूसरा प्रश्न किया—"शामको आपका खानसामा रूबीको ढूँढ़ता हुआ...मेरा मतलब है पूछता हुआ आया था...क्या बात थी ?"

हेमाने कहा—"जी वह रूबी...वह ! ...."

"वह तो घर आ गई शामको ही।" जानकीने वाक्य पूरा किया।

मिसेज़ चोपड़ाको जानकीका बोलना अच्छा नहीं लगा। दो टकेकी नौकरानी उनसे बात करे यह उनकी हतक थी। दो उच्च कुलकी औरतें जब बात कर रही हों तो इन बीच नौकरोंको इतना भी नहीं मालूम कि बीचमें नहीं बोलना चाहिये। जानकीको यह स्पष्ट करनेके लिये कि उसकी बातका उनके लिए कोई महत्त्व नहीं मिसेज़ चोपड़ाने पुनः पूछा—"आपने बताया नहीं मिसेज़ रघुनाथ, रूबी कहाँ गई थी ?"

"जी, बताया न जानकी ने वह आ गई शामको ही..." हेमाने सँभलते हुए कहा।

"नहीं जी, मैंने पूछा वह कहाँ गई थी ? चौकीदार कह रहा था कि रूबी सबेरेसे गायब...मेरा मतलब है जी रूबी सबेरेसे घर पर नहीं है।"

"जी...रूबी...!"—हेमा लड़खड़ा गई। मिसेज़ चोपड़ाने सोचा कि उनका तीर निशाने पर बैठा है, अब उन्हें सब भेद हेमाके मुँहसे ही ज्ञात हो जाएगा।

"वह नई दिल्ली चली गई थी, गौरीको ले कर कुछ सामान खरीदना था।"

जानकीने फिर हेमाकी सहायता की।

मिसेज़ चोपड़ने जानकीको उपेक्षासे देखा और हेमासे बोली—"आपकी तबीयत तो ठीक है न मिसेज़ रघुनाथ? और अपना हाथ बढ़ाकर हेमाका हाथ उन्होंने अपने हाथमें ले लिया। हेमाका हाथ कुहरेसे एकदम ठंडा हो गया था।

"नहीं मैं बिल्कुल ठीक हूँ।" हेमाने अपना हाथ छुड़ाते हुए कहा।

"क्या ठीक है मालकिन?" जानकी फिर बोली—"अभी-अभी तो आपको कै हो गई। आपको मना करती हूँ फिर भी आप बार-बार बाहर ठंढमें खड़ी रहनेकी ज़िद करती हैं। चलिये न अंदर...!" जानकीने हेमाको थोड़ा खींचते हुए कहा। जानकी मन ही मन डर रही थी कि कहीं रूबी अभी न आ जाए और सारी बात खुल जाए, इसीलिये वह मिसेज़ चोपड़ाको वहाँसे शीघ्र हटा देना चाहती थी।

"ओह मिसेज़ रघुनाथ आपकी तबीयत खराब है और आप यहाँ खड़ी हैं...जाइये न अन्दर...!" लेकिन मिसेज़ चोपड़ाकी यह बात सुन कर जब हेमा अन्दर जानेके लिये मुड़ी तो मिसेज़ चोपड़ाने फुसफुसा कर कहा—"देखिये मिसेज़ रघुनाथ आप रूबीको शशिके साथ न रहने दिया कीजिये... मैंने दो-तीन बार उसके साथ देखा है...शशिका चाल-चलन ठीक नहीं है...अच्छा बहन, मैं चलती हूँ। मेरी बातका बुरा न मानना, हाँ।" और मिसेज़ चोपड़ा वहाँसे आगे बढ़ गईं।

"जानकी, तू बहुत समझदार है...अभी तू न होती तो न जाने मैं मिसेज़ चोपड़ासे क्या कुछ कह बैठती...और तू तो जानती है मिसेज़ चोपड़ाको, यहाँ-वहाँ लगानेमें कितनी आगे रहती हैं।" हेमाने वापस दरवाजे पर लौटते हुए कहा। हेमाकी आवाज़में एक अजीब तरहका खोखलापन था, लगता था जैसे जो कुछ वह कह रही है उसका अर्थ वह स्वयं नहीं समझ रही है, फिर भी किसी प्रेरणासे वह यह सब कह गई।

"मालकिन, मैं तो पहले ही समझ गई थी कि वह भेद लेने आई हैं...कैसी बन-बन कर पूछ रही थीं।...मुझे तो उनकी शक्ल नहीं सुहाती, सबके घरकी बुराइयाँ ढूँढ़ती फिरती हैं और फिर चुगलियाँ..."

"वह भी क्या करे? जबसे बेचारीकी बेटी ड्राइवरके साथ भागी है तबसे उसका यही हाल है, इस तरह शायद वह अपनी नाक ऊँची रखने का बहाना निकाल लेती है...लेकिन जानकी...कहीं रूबी मिसेज़ चोपड़ा-के सामने ही आ जाती तो..."

"कुछ न कुछ बहाना मैं बना ही लेती मालकिन! आपकी इज्जतको आँच न आने देती...हम लोग गरीब हैं, छोटे हैं पर इज्जतको समझते हैं सरकार और..."

"जानकी!" हेमाने उसे टोकते हुए कहा—"कहीं रूबी नहीं आई तो?"

"ऐसी बात नहीं सोचते मालकिन, वह ज़रूर आएँगी। एक बात है सरकार आप मिसेज़ चोपड़ाको या किसीको यह बात बिल्कुल नहीं मालूम होने दीजियेगा कि रूबी बाबा अभी घरमें नहीं हैं या देरसे आई हैं, नहीं तो इन्हें तिलका ताड़ बनाते देर नहीं लगेगी और सब जगह बदनामी करती फिरेंगी वह अलग...अपने घरको नहीं देखेंगी।"

"अपने घरमें क्या हो रहा है यह कौन देखता है पगली! हाँ, दूसरों के छिद्र ढूँढ़ते रहनेमें बड़ा मजा आता है सबको। हमारी उँगलियाँ सदा दूसरोंकी ओर उठती हैं, अपनी ओर नहीं। दूसरोंकी बुराई और दूसरोंका पतन देखनेमें हमें बड़ा मजा आता है।"—हेमाने कहा।

"एक बात कहूँ, सरकार बुरा तो नहीं मानेंगी।" जानकीने डरते डरते कहा।

"क्या बात है जानकी?...तुमने आज जैसे इस घरकी इज्जत बचाई, उसके बाद भी क्या मैं तुम्हारी बातका बुरा माननेका साहस कर सकती हूँ। सच पूछो तो आज मेरी बहन भी मुझे इतना सहारा न देती जितना तूने मुझे आज...दिया...!"

"नहीं मालकिन, ये तो आपकी मेहरबानी है कि आप मुझे इतना मान देती हैं...छोटे मुँह बाड़ी बात कहते डरती हूँ सरकार कहीं आप बुरा मान गईं तो—"

"नहीं जानकी, मैं तेरी किसी बातका बुरा नहीं मानूँगी, जो भी तुझे बोलना हो तू निडर होकर बोल।"

"सरकार, अब आप रूबी बाबाकी शादी कर दीजिये !" जानकीने एक-एक शब्द चबाचबा कर कहा।"

"अरे, इतनी-सी बात कहनेके लिये तू इतना डर रही थी।" हेमाने डूबे स्वरमें कहा—"रूबी अभी सत्रह वर्षकी है। इस उम्रमें उसकी शादी कर दूँ तो सोसायटीमें सब हमें गँवार कहेंगे। जब तक रूबी बीस बाईस बरसकी नहीं होगी, उसकी शादी फैशनके बाहर है।"

"मालकिन, फैशनकी बात सोचती रहोगी तो बेटी हाथसे निकल जाएगी। रूबी बाबाके पैरोंको अभी नहीं रोकियेगा तो पता नहीं आगे क्या होगा...फिर ये 'सुसैटी' वाले भी काम नहीं देंगे।" जानकीने कहा।

जानकी की बातकी यथार्थ चित्र बन कर हेमाकी दृष्टिके सामने नाच गई। घने कोहरेकी गहराइयोंसे उसे एक चीज़ सुनाई दी। उसने देखा रूबी चौराहे पर खड़ी हुई है, उसके बाल सूखे और मिट्टीसे भरे हुए हैं, कपड़े फट गये हैं और उसकी गोदमें एक दुबला-पतला बच्चा है, जो चीख-चीख कर रो रहा है। रूबीके चारों ओर खूबसूरत औरतें कीमती साड़ियाँ और फ्राक पहने खड़ी हुई हैं। किसीकी लम्बी चोटियाँ हैं तो किसीके बाल कटे हैं। सबके साथ अंग्रेजी कपड़ोंसे लैस पुरुष खड़े हैं। ये सब मिल कर जोर-जोरसे हँस रहे हैं और रूबीको उँगली दिखा रहे हैं, उसे चिढ़ा रहे हैं, तालियाँ बजा रहे हैं, आवाजें कस रहे हैं। रूबी जोर-जोरसे चीख रही हैं और रो रही हैं...इतनेमें रघुनाथ भीड़को चीरते हुए आगे बढ़े, तो लोगोंके हाथोंमें न जाने कहाँसे पत्थर आ गए। उन्होंने चीख कर कहा—"मिस्टर रघुनाथ, उसको मत छूना...वह अस्पृश्य है...वह नीच है...वह कुलकलिंकिनी है...मारो...मारो...रघुनाथको

भी मारो"—और चारों ओरसे पत्थर बरसने लगे। हेमा जोरसे चीख कर बेहोश हो गई। समयके प्रहरीने उसी समय टन-टन कर दस बजाए। जानकी हेमाको किसी तर बरामदेमें ले आई और उसे वहाँ पड़ी आराम-कुर्सी पर उसे लिटा कर स्वयं पानी लेने अन्दर चली गई। गौरी रूबी-के कमरेमें बैठी पढ़ रही थी, अतः उसे भी वह बुलाती लाई। गौरीकी सहायतासे हेमाको उसके पलंग पर लिटा कर, जानकी उसके मुख पर पानी के छींटे मारने लगी। तभी उसे प्रवेश-द्वार खुलनेकी आवाज़ सुनाई पड़ी। उसके हाथ रुक गए। दो पल भी नहीं बीते थे कि एक साइ-किलके पोर्चमें रुकनेकी आवाज़ आई। पोर्चसे रूबी सीधी अपने कमरेमें चली गई। उसकी मेज़ पर गौरीकी पुस्तक खुली पड़ी थीं। उसने पुस्तक उठा कर दरवाज़ेके बाहर फेंक दी। दरवाज़ा अन्दरसे बंद कर लिया। 'स्विच' आफ किया और धम्मसे पलंग पर पड़ गई।

रूबीके कमरेकी बत्ती बुझते देख गौरी अपनी पुस्तक लेने रूबीके कमरेकी ओर दौड़ी। कमरेके पास पहुँचते पहुँचते दरवाज़ा बंद हो चुका था और बत्ती बुझ चुकी थी। वह लौट ही रही थी कि उसकी दृष्टि नीचे गिरी अपनी पाठ्य-पुस्तक पर पड़ी। वह समझ गई कि यह हरकत रूबीकी ही है। उसे रूबी पर बहुत गुस्सा आया और उसने जोरसे दरवाजे पर थूक दिया।

:o: :o: :o:

हेमाको रातको बुखार चढ़ गया। सबेरा होते ही जानकी डाक्टरके घर गई और उसे बुला लाई। डाक्टरने हेमाको इंजेक्शन दिया और जानकीको अपनी डिस्पेन्सरीसे दवा ले आनेके लिये कहा।

हेमाने सबेरे जानकीसे सबसे पहले रूबीके बारेमें पूछा। उसे कुछ-कुछ याद था कि जानकीने रूबीके आनेका समाचार उसे रात ही दे दिया था। परन्तु उसे इस पर विश्वास नहीं हुआ था। सबेरे वह सबसे

पहले रूबीको देखना चाहती थी। उसने रूबीको बुलानेके लिये जानकी-को भेजा।

जानकीने जब आकर रूबीको बताया कि हेमा उसे बुला रही है, तो उसने जानेसे साफ इन्कार कर दिया। उसने कहा—"जा माँसे कह दे मेरी तबीयत ठीक नहीं है। तू पहले जा कर गर्म पानीकी थैली ला दे समझी।" और रूबी फिर रज़ाईमें दुबक गई।

हेमाको जानकीने आ कर सब बता दिया। हेमाको विश्वास हो गया कि रूबी उस 'कवि प्रेमी' नामधारी व्यक्तिके चक्करमें पड़ कर गलत कदम उठा चुकी है और उसके नेत्रोंके सम्मुख एक व्यक्तिकी मूर्ति नाच गई जो श्वेत वर्ण है, ऊँचा पूरा है, लम्बे-लम्बे कंधों तक लटकते बाल हैं, पैरोंमें चप्पल है, ओठों पर मुस्कान है...सजीली! श्वेत-धवल कपड़े हैं...और उन कपड़ोंके भीतरसे, उसके शरीरके भीतरसे एक काला भेड़िया है जो झाँक रहा है। उसने आँखें बंद कर लीं। उसका मन ग्लानिसे भर गया। उसने ऐसी लड़कीको जन्म दिया, जो कुलका कलंक सिद्ध हो रही है। उसकी एक ही लड़की है और वह भी भटक गई। इसे जन्म देनेके पहले ही वह बाँझ क्यों न हो गई। उसकी चार बहनें थीं, उसकी माँ ही उन सबकी देखरेख करनेवाली थी, परन्तु उसने नारी होते हुए भी चारों बहनोंको कभी गलत रास्ते पर नहीं जाने दिया... वह अपनी एक बेटीको भी सँभाल कर नहीं रख सकी। रूबीकी काली करतूतोंकी बात जब फैलेगी तो वह क्या जवाब देगी? उसका सिर झुक जाएगा। वह सिर जो कभी किसीके आगे नहीं झुका...!" और हेमाकी आँखोंसे ढुलक-ढुलक कर आँसू बहने लगे।

हेमाका बुखार तीन दिन नहीं उतरा। जानकी जी-जानसे उसकी सेवा करती रही। रूबी तीन दिनोंमें एक बार भी माँके पास नहीं आई... वह घर छोड़ कर कहीं बाहर भी नहीं गई। तीसरे दिन रघुनाथ आ गये किन्तु कुछ भयसे, कुछ अन्य बातोंका विचार कर हेमाने उनसे कुछ भी नहीं

कहा। बीमारीमें भी रूबी उसे देखने तक नहीं आई—यह बात भी उसने नहीं कही।

:o: :o: :o:

प्राण मेरे,

तुमसे मिले तीन दिन बीत चुके हैं, परन्तु इन तीन दिनोंमें तुम्हारी याद पल भर भी मुझसे नहीं बिछड़ी। उस दिन तुम्हारे साथ बिताया गया एक-एक पल मेरी नस-नसमें याद बन कर घुल गया है। कितना सुहाना था वह दिन, है न विनोद? विनोद, सुन कर तुम चौंकना नहीं। मुझे वह तुम्हारा 'कवि प्रेमी' का सम्बोधन बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। तुम कवि हो, शायद तुम्हें अच्छा लगता हो। उस शब्दकी गहराईको तुम्हीं अधिक अच्छी तरह समझ सकते हो, मुझे तो बस विनोद अच्छा लगता है।

तुम्हें याद है विनोद जब तुम मुझसे पहली बार मिले थे, तो मैं तुम पर कितनी नाराज हुई थी...और वह भी कितनी छोटी-सी बात पर। तुम शशिके साथ खड़े मेरी पुस्तकें उलट-पुलट रहे थे। मैं वहाँ नहीं थी...जब मैं आई तब भी तुम मेरी पुस्तकें उलटते-पुलटते रहे और मुझे गुस्सा आ गया था...मैंने तुम्हें खूब खरी-खोटी सुनाई, फिर भी तुम मुस्कराते रहे। कितने शरीर थे तुम? थे क्या अभी भी हो...उस दिन क्या कम शरारत की थी तुमने मेरे साथ? फिर जब शशिने तुम्हारा परिचय कराया तो मैं कितनी झेंपी थी, है न? अरे! तुम तो वही प्रसिद्ध विनोद थे जिसकी कविताएँ मैं बड़े चावसे पढ़ती थी। परिचय होते ही कितने ढीठ स्वरमें तुमने कहा था—'गुस्सेमें बड़ी अच्छी लगती हो तुम!' 'तुम'...तुमने पहली बार भी 'आप' कहना उचित नहीं समझा, क्यों?

अरे, मैं कहाँ बहक गई। न जाने क्यों आज सब पुरानी बातें स्मृतियों की तह उधेड़ कर बाहर आ जाना चाहती हैं। खैर, मैं तो उस दिनकी

बात कह रही थी। मुझे घर लौटने में बहुत देर हो गई थी। माँ बहुत नाराज हैं। उस दिन उनकी तबीयत भी खराब थी...उनके सामने जानेकी मेरी बिल्कुल हिम्मत नहीं हुई। आज तीन दिन हो गए हैं मैं अभी तक उनके सामने नहीं गई हूँ। घरसे बाहर निकली भी नहीं हूँ। आज बाहर निकलनेका इरादा है इसीलिये यह पत्र लिख रही हूँ।

विनोद, पढ़ाई तो मेरी बिल्कुल नहीं हुई है। तुम मेरी सहायता करोगे न? पत्रोत्तर अवश्य देना और शीघ्र देना।

तुम्हारी अपनी
रूबी

वीनू,

तुमने पत्रका उत्तर नहीं दिया अभी तक। फिर भी मैं तुम्हें यह पत्र लिख रही हूँ। एक मजेकी बात बतानी है। कल जानी आया था, पुस्तक माँगनेका बहाना ले कर। मैंने उसे टका-सा जवाब दे दिया। मुझसे बहुत नाराज है। तुम्हारे और शशिके विषयमें बहुत-सी बेकारकी बातें कह रहा था। मैंने उसे एकदम डाँट दिया और उससे साफ-साफ कह दिया कि मैं तुम्हारे विरुद्ध एक शब्द भी नहीं सुनना चाहती... बेचारा...मुँह लटका कर चल दिया।

विनोद, पापा वापस आ गए हैं, मैं तुम्हें पिछले पत्रमें लिखना भूल गई थी। तुम पापासे मिल लो। अभीसे मिलते-जुलते रहोगे तो ठीक रहेगा। मैंने पिछला पत्र तुम्हें 'हिस्ट्री'की पुस्तकमें रख कर दिया था, वह पुस्तक लौटा देना, मुझे पढ़नी है।

हाँ भई, कल शशिसे खूब हँस-हँस कर बातें हो रही थीं। क्या बात थी? 'प्राइवेट' न हो तो हमें भी लिखना।

अमित प्यार सहित
केवल तुम्हारी
रूबी

निर्मोही,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम ऐसी बातें लिखोगे उसकी मुझे स्वप्नमें भी आशा नहीं थी, विशेष कर उस दिनकी घटनाके बाद। परन्तु पुरुष यदि शंकालू न हो, तो संभवत: वह पुरुष ही न हो। तुम मुझे क्या समझते हो? जानीके लिये मेरे मनमें कुछ होता तो उस दिन क्या मैं उसे घरसे यूँ ही भगा देती...इसके पूर्व भी उससे क्या सम्बन्ध था? केवल मित्रता का।...अब यह तो नहीं हो सकता कि वह बात करे तो मैं एक दम बात ही न करूँ, हँसू ही न? दुनियादारी भी तो कोई चीज़ है, निभाना तो सभी को पड़ता है। तुम क्या शशिसे बातें नहीं करते? लेकिन मैंने तुम्हें कभी कुछ कहा? किन्तु नहीं...तुम पुरुष हो, यदि एक हजार लड़कियोंके गलेमें बाँह डाल कर घूमो तो भी कोई बात नहीं है, और हम स्त्रियाँ यदि अपने भाईसे भी बात करें तो तुम्हें उसमेंसे बदबू आने लगती है।

खैर, यदि तुम अपनी विचारधारा नहीं बदल सकते तो यही उचित होगा कि हम सम्बन्ध तोड़ दें। तुम तो यही चाहते होगे और अब क्यों न चाहोगे—स्वार्थी जो हो, हर पुरुषकी तरह।

रूबी

जो किसीकी नहीं

और पत्र समाप्त कर रूबी सिसक पड़ी और सिसकते-सिसकते न जाने कब सो गई।

:o: :o: :o:

रूबी परीक्षा-भवनसे निकली तो बहुत उदास थी। विनोद बाहर खड़ा उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। रूबीको आते देख वह उसकी ओर बढ़ा तो रूबी मुँह फेर कर दूसरी ओर चल दी...विनोद भी उसके पीछे पीछे चला। समीप आ कर उसने रूबीका हाथ पकड़ लिया, कहा— "रूबी, बहुत नाराज़ हो?" रूबीने कोई उत्तर नहीं दिया। विनोदने

फिर कहा—"रूबी, मैं तुमसे क्षमा माँगने आया हूँ...क्या तुम क्षमा नहीं करोगी रूबी डार्लिङ्ग, प्लीज़...रिअली आई एम वेरी सारी...."

रूबीने आँखें उठा कर उसके चेहरेकी ओर अविश्वाससे देखा तो विनोदने उसके गाल पर हल्की-सी चपत मार दी। "अब बस करो भई ये रूठना! चलो कैन्टीन चलें, चाय पियेंगे और यह लो...."उसने कोटकी जेबसे एक नीला लिफाफा निकाल कर देते हुए कहा। रूबीने पत्र लिया ही था कि कला 'विनोद...विनोद' पुकारती वहाँ आ पहुँची। कलाने रूबीको देखा तो बोली—"हैलो रूबी डार्लिङ्ग, बड़ी 'सैड' हो, क्या बात है?"

रूबीने सँभलते हुए कहा—"नहीं बात कुछ नहीं...जरा पेपर बिगड़ गया, इसीसे 'मूड आफ' है।"

"अरे रईस बापकी बेटी हो कर फेल होनेसे डरती है च्...च्...च्... कला नाटकीय ढंगसे बोली—"अगले साल फिर सही!" और रूबीके चुटकी भरती हुई बोली—"अरे डार्लिङ्ग, घबराती क्यों हैं, हम भी तेरा साथ, देंगे समझी।"

और तीनों खिलखिला कर हँस पड़े, तभी बसका हार्न बजना शुरू हो गया।

गौरी दौड़ती हुई आ कर माँके गलेसे लिपट गई। "कैसी पागल है, इतनी बड़ी हो गई लेकिन बचपना अभी तक नहीं गया...छोड़ मुझे!" जानकीने स्नेहसे झिड़कते हुए कहा।

"माँ, तुम्हें कुछ पता भी है मैं क्यों खुश हूँ इतनी?" गौरीने मचल कर पूछा!

"क्यों खुश है भला बता!"

"माँ मेरे आज सब सवाल ठीक हुए हैं गणित के। सौ में से सौ नम्बर मिलेंगे...देखना 'फर्स्ट' आऊँगी?"

"ये 'फस्ट' क्या होता है बेटी?" जानकीने पूछा।

"फस्ट नहीं माँ, 'फर्स्ट' यानी पहला नम्बर लूँगी अपनी क्लास में ।"

"युग-युग जिये मेरी बेटी !" जानकी गद्-गद् हो कर बोली । गौरीकी बातोंमें उसे ध्यान नहीं रहा । आज ही पदम भैयाका पत्र आया था और उन्होंने उसे बुलाया था । गौरी नहीं थी तो काकासे उसने पत्र पढ़वा लिया था । पदम भैयाने लिखा था––

जानकी, तुम्हारा पत्र मुझे मिला । गाँवमें डाक देरसे आती है, इसलिये तुम्हारे पत्र भी मुझे देरसे मिलते हैं और मेरे पत्र भी । घर अब थोड़े ही दिनोंमें पूरा हो जायेगा । छत डालनी बाकी है । अभी मेरा विचार नहीं था कि घर फिरसे बनवाया जाय पर रधियाकी ज़िद थी, इसीलिये फिरसे बनवा दिया । रधिया चाहती है कि गौरीका ब्याह नए घरसे हो ।

तुमने गौरीकी परीक्षाके बारेमें लिखा था । उसकी परीक्षा शायद अब समाप्त हो गई होगी । तुम्हारी भाभीकी तबीयत ठीक नहीं है । उसकी तबीयत सँभलते ही तुम्हें लेने आऊँगा । रधिया गौरीको आगे पढ़ानेके पक्षमें बिल्कुल नहीं है ।

शेष कुशल है । तुम्हारी भाभी और रधिया तुम लोगोंको आशीर्वाद कहती है ।

तुम्हारा
पदम भैया,

जानकीने सोचा गौरीको वह पत्रकी सब बात बता दे, किन्तु उसे ज्ञात था कि गाँव जानेकी बात सुन कर गौरी उदास हो जाएगी । उसकी फूल-सी बच्ची अभी कैसी हँसती-खेलती आई है, उसे उदास करना क्या अच्छा होगा ? फिर अभी उसे कलकी परीक्षामें भी बैठना है ।

"क्या सोचने लगी माँ ?" गौरीने पूछा ?

"कुछ भी तो नहीं, हाँ. . .तेरी पढ़ाईके बारेमें सोच रही थी, आगे पढ़ेगी न ?"

"हाँ, माँ, तुम मुझे खूब खूब पढ़ा दो। फिर देखना मैं भी कैप्टन साहब जैसी बड़ी भारी अफसर बन जाऊँगी और तुम्हारे लिए एक छोटा-सा बँगला बनवा दूँगी। तुम्हें फिर किसीके जूठे बर्तन नहीं धोने पड़ेंगे... बस बँगलेमें रहना और खुद दो-चार नौकर रखना...!"

"बस...बस...ज्यादा मनके लड्डू मत खा..."

"अच्छा तो लड्डूके बदले खाना खिला दो।" गौरीने कहा।

"मुँह हाथ धो आ पहले और जा कर खाना खा ले रसोईमें ढका रखा है।"

"जानकीने निश्चय कर लिया आजके पत्रकी बात वह गौरीको नहीं बताएगी।

:o: :o: :o:

कैप्टन साहबके घरके वातावरणमें परीक्षाके कारण जो ऊहापोह उत्पन्न हो गया था वह समाप्त हो गया और दैनिक जीवनमें क्रमशः सामान्यता आ गई। सबकी दिनचर्या पूर्ववत हो गई। किन्तु रूबीके व्यवहारमें थोड़ा परिवर्तन हो गया। उसकी शोखी और चंचलताका स्थान गंभीरताने ले लिया। रूबी साधारणतः चुप रहती और अपने कमरेके भीतर ही रहती। उपन्यासों एवं अमरीकी पत्रिकाओंमें उसकी रुचि पहलेसे अधिक बढ़ गई थी। किसीसे बात करनेकी अपेक्षा वह इन पत्रिकाओंमें समय व्यतीत करना अधिक उपयुक्त समझती थी।

गौरीको पढ़ाईसे अवकाश प्राप्त हुआ तो उसने काकाके साथ मिल कर बागवानी करना प्रारम्भ कर दिया। उससे समय बचता तो वह काका को रामायण सुनाती। काकाके दिये कपड़ोंको पहन और उनके घरका खाना खा गौरीका रूप-रंग निखर गया। अब गौरीको देख कर काकाको कभी-कभी संदेह होता कि गौरी जानकीकी बेटी नहीं है। जानकीका रंग साँवला था, गौरी रूबीकी भाँति एकदम गौरवर्णकी थी। गौरी और जानकीके नाक-नक्शमें भी उन्हें कम साम्यता दिखाई देती थी। आँखों

गौरीकी बिल्कुल हेमाकी आँखोंकी भाँति बड़ी-बड़ी थीं। काकाने यह बात कभी किसीसे कही नहीं थी। जब-जब उनके मन यह विचार उठता. . .विचार की समाप्ति पर मुस्करा देते। सोचते—बेबीके प्रति जो उनका निस्सीम मोह है, इसी कारण उन्हें गौरीका चेहरा बेबीका-सा लगता है।

परीक्षा-फल निकला। गौरी पास हो गई। पास ही नहीं हुई कक्षामें प्रथम भी आई। गौरीकी सफलताकी सबसे अधिक प्रसन्नता काका को हुई। उन्होंने उसे एक नई साड़ी खरीद कर दी। हेमा भी गौरीके प्रति काफी सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करती थी, उसने गौरीको एक जोड़ा चप्पल खरीद दी। परीक्षाका परिणाम महीनेके अन्तमें निकला था अतः जानकीने चूड़ियाँ खरीदनेकी बात एक तारीख तकके लिये टाल दी। हाँ, पाँच पैसेके बताशे उसने उसी दिन चढ़ा दिये।

उस दिन काका बागमें आराम-कुर्सी पर बैठे अपने विचारोंमें खोये हुए थे। गौरी टामीसे खेल रही थी। उसके हाथमें गेंद थी वह गेंदको ज़ोरसे फेंक देती और टामी दौड़ कर उसे उठा लाता। तभी जानकी गौरीको बुलाने आ गई। हेमा और रूबी पिक्चर जा रहे थे और हेमाने गौरीको पास होने पर सिनेमा दिखानेका वादा किया था वह उसे भी ले जा रही थी। जानकी गौरीके सिनेमा देखनेके पक्षमें बिल्कुल नहीं थी पर मालकिनने स्वयं ही यह बात कही थी, इसलिये वह इसे टाल नहीं सकती थी। हेमा चाहती थी, जानकी भी उनके साथ जाए पर घरमें काम बहुत था अतः जानकीका जाना संभव नहीं था।

जब गौरी चली गई तो काकाने पूछा—"क्यों जानकी कैसी है तू ?"

'आपके "आसिरवाद' से अच्छी ही हूँ काका !" जानकीने कहा।

"तेरी गौरी तो बड़ी होशियार है जानकी, देख अव्वल आई है क्लास में।"

"आप लोगोंके "आसिरवाद" का फल है काका, वरना हम लोग क्या हैं ?" जानकीने दीनता दिखाते हुए कहा।

"आशीर्वाद...वाशीर्वाद तो ठीक ही है जानकी, असल बात तो आदमीकी अपनी मेहनत ही है। आशीर्वाद तो एक बहाना है। तूने देखा नहीं, गौरी कैसा मन लगा कर पढ़ती थी? परीक्षाके दिनोंमें तो आधी-आधी रात तक जागती रहती थी।...अरे हाँ...अब क्या इरादा है, उसे आगे पढ़ाना है या बस...!"

जानकी बोली—"काका, 'उनकी' तो इच्छा थी, गौरीको दसवीं तक अवश्य पढ़ा दिया जाए...मैं भी यही चाहती हूँ सरकार!"

"एक बात सोची जानकी कभी" काकाने जानकीकी दृढ़ताकी परीक्षा लेनेके विचारसे और कुछ परिहासके उद्देश्यसे कहा—"गौरीको इतना पढ़ा लिखा दोगी तो तुम्हें ऐसा पढ़ा-लिखा लड़का कहाँ मिलेगा?

"किसके भागमें क्या लिखा है, यह किसने देखा है काका...मेरी गौरी बडी तकदीरवाली है। पर यह तो समयका फेर है कि...!" और जानकी चुप हो गई।

"तेरी बात मेरी समझमें नहीं आई जानकी, खैर तू उसे आगे पढ़ाना चाहती है तो अवश्य पढ़ाना। मुझसे जो कुछ बनेगा तेरी सहायता अवश्य करूँगा।"

"आपको मेहरबानी तो करनी ही होगी काका, उसके बगैर कुछ नहीं होगा।"

"अच्छा क्या मेहरबानी करनी होगी मुझे?" काकाने हँसते हुए पूछा।

"इसे आप किसी अच्छे स्कूलमें दाखिल करा दीजिये। मैंने कुछ पैसे जमा कर लिये हैं उससे इसकी पहले महीनेकी फीस हो जायगी, फिर मैं अपनी तनखाहसे इसकी फीस देती जाऊँगी।" जानकीने कहा।

"फीसकी चिन्ता तू मत कर! गौरीकी फीस मैं ही हर महीने दे दिया करूँगा और किताबें भी मैं ही खरीद दूँगा।"

"आपकी मेहरबानी है काका!" जानकीने अवरुद्ध कंठसे कहा—"आपका अहसान जन्म भर नहीं भूलूँगी...आज वह होते...तो क्यों..." और वह पल्लेसे आँसू पोंछने लगी।

"रोती क्यों है। तेरी गौरीको दसवीं तक पढ़ानेका जिम्मा मैं लेता हूँ, पर तूने एक बात नहीं बताई कि उसे तू किस स्कूलमें शिक्षा दिलाना चाहती।"

"मैं अनपढ़ गँवार हूँ सरकार यह सब क्या जानूँ ? आपको जो स्कूल अच्छा लगे उसीमें भरती करा दीजिये। हाँ सरकार, एक बात है स्कूल लड़कियोंका ही हो और वहाँ पढ़ाई अपने देसी ढंगकी होती हो।"

"अच्छा. . ." काकाने सोचते हुए कहा—"अगर उसे इन्द्रप्रस्थ स्कूलमें भरती करवा दिया जाये तो कैसा हो ? सुना है वहाँ लड़कियोंको अंग्रेजी तौर-तरीकोंसे रखा और पढ़ाया नहीं जाता है। धार्मिक चर्चा भी होती है और पूजा-पाठ भी करवाते हैं।"

"तो काका उसी 'इन्दर' स्कूलमें गौरीको भरती कर दीजिये। यह स्कूल कहाँ है काका।"

"यह स्कूल पुरानी दिल्लीमें है।"

"फिर गौरी कैसे जाएगी उतनी दूर ?"

"स्कूलकी गाड़ीसे आया-जाया करेगी और कैसे आएगी जाएगी ?"

"काका, उस गाड़ीमें क्या लड़के भी आते-जाते हैं ?

"नहीं, वह तो लड़कियोंका स्कूल है और गाड़ी भी स्कूल की है, उसमें लड़कोंका क्या काम ? तू लड़कोंसे इतना घबराती क्यों है ? तेरी गौरी बड़ी समझदार लड़की है जानकी, तू क्यों डरती है।

"जमाना ही अच्छा नहीं काका ! आजकल लड़के-लड़की किसी-का भरोसा नहीं। पढ़ाईको मैं बहुत अच्छा भी नहीं समझती काका, खास कर लड़कियोंकी पढ़ाईको। परन्तु उनकी आखरी इच्छा थी इसीलिये गौरीको पढ़ा रही हूँ।"

"तू अच्छा ही कर रही है जानकी। आजकल लड़कियोंका पढ़ाना बहुत ज़रूरी। आगे चल कर पढ़ाई ही काम आती है। भविष्य किसने देखा है. . .ईश्वर न करे कहीं, उसे तेरी तरह दिन देखने पड़े तो वह इज्जतसे चार पैसे कमा तो सकेगी।"

"पढ़ाईकी बात तो ठीक है काका परन्तु हम गरीब लोग हैं। हम यदि थोड़ा भी चूक जाएँ तो ज़िन्दगी भरके लिए हमारे हाथ रोना ही रह जाएगा।"

"गरीब-अमीरकी इसमें क्या बात है? जो भी चूकेगा उसे भुगतना तो पड़ेगा ही।"

"नहीं काका, अमीरोंके यहाँ तो सब ही ढक जाता है परन्तु हम गरीब लोग फूँक-फूँक कर कदम रखते हैं फिर भी बदनाम हो जाते हैं और दुनिया भरकी दस बातें हमें सुननी पड़ती हैं वह अलग...अब अगर रूबीवाली बात कोई गरीब लड़की करती तो जिन्दगी भरके लिए..." न जाने कैसे जानकीके मुखसे यह बात निकल गई। वह सकपका कर रह गई। वह भेद जो उसे छिपा कर रखना था और हेमाने जिसे छिपा कर रखनेकी उसे कड़ी ताकीद की थी वह अनायास ही उसके मुँहसे निकल गया।

काकाने एक बार जानकीका वाक्य चबाया, जानकीका सकपकाना देखा फिर कुछ गंभीर हो कर बोले—"क्यों ऐसा क्या किया है रूबीने?" और उत्तर पानेके लिये उन्होंने अपनी आँखें जानकी पर गड़ा दीं। जानकी को कुछ समझमें नहीं आया कि वह काका को क्या उत्तर दे। अपनी बातको दबानेकी कोशिश करते हुए जानकीने कहा—नहीं काका...कुछ नहीं...मैंने तो...लेकिन कोई बात उससे बनी नहीं वह गे हाथों पकड़ी गई थी।

काकाने अत्यधिक गंभीर हो कर कहा—"जानकी बात छिपानेकी कोशिश मत कर। सच-सच बता रूबीने क्या किया है?"

काका की गम्भीरता ने जानकी की हिम्मत तोड़ दी। वह समझ गई कि काकासे अब वह कुछ छिपा नहीं सकेगी। अतः उसके सामने केवल यही रास्ता रह गया कि वह काका को सब कुछ बता दे वरना उसकी नौकरी, गौरीकी पढ़ाई सभी कुछ खटाईमें पड़ जायगी।

जानकी अभी यह सोच ही रही थी कि वह बात कहाँसे प्रारम्भ करे कि हेमा और गौरी वहाँ आ गये। गौरी ने काका की दी हुई नई साड़ी पहन रखी थी और बड़ी प्रसन्न थी क्योंकि पहली बार सिनेमा देखने जा रही थी।

हेमा ने कहा—"अच्छा जानकी, हमलोग 'पिक्चर' जा रहे हैं। तू जरा घरका ध्यान रखना। खानसामासे कहना कि वह काका और साहबको खाना खिला देगा और खाना हमारे आते तक गर्म रखेगा।"

जानकी ने कहा—"जी सरकार कह दूँगी।"

हेमा, और गौरी पोर्टिको तक गईं, जहाँ रूबी कारके पास खड़ी उनका रास्ता देख रही थी।

कार चली जाने पर जानकी निश्चिन्त होकर काका के पास बैठ गई। काका ने फिर पूछा—"हाँ, तो क्या बात थी वह ?"

जानकी कुछ गिड़गिड़ा कर बोली—"सरकार, मैं आपको सब कुछ बता दूँगी पर हुजूर मालकिनको मालूम हो गया तो वह मुझे जिन्दा नहीं छोड़ेंगी... फिर सरकार मेरी नौकरी... मेरी गौरी की पढ़ाई..." और जानकीका कण्ठ अवरुद्ध हो गया।

काका कुछ द्रवित हुए परन्तु वाणीकी गम्भीरताको उन्होंने बनाए रखा—"तुम सच-सच बता दोगी तो कुछ नहीं होगा। तुम निश्चिन्त रहो मैं हेमासे कुछ न कहूँगा और जब तक मैं इस घरमें हूँ तुम्हारी गौरीका और तुम्हारा कुछ बुरा नहीं होगा।"

काका का आश्वासन पाकर जानकी ने रूबीके साथ घटी उस दिनकी सम्पूर्ण घटना बता दी। किन्तु जानकीको उस व्यक्तिका नाम याद नहीं था और न ही उसने उसे कभी देखा था अतः उस व्यक्तिके सम्बन्धमें कोई विशेष विवरण वह काका को नहीं दे सकी। जानकी जानीके सम्बन्धमें जानती थी, उसकी बात उसने काका को अवश्य बता दी।

सब कह कर जानकी चुप हो गई और सब सुन कर काका चुप हो गये। वातावरण में चुप्पी फैल गई, किन्तु यह शान्ति केवल ऊपरी थी। इसकी तहमें दोनोंके हृदयोंमें तूफान उठा हुआ था। जानकी कहनेको सब कुछ कह गई परन्तु उसकी अन्तरात्मा उसे धिक्कार रही थी कि वह हेमाके दिये अपने वचनका निर्वाह न कर सकी। उसे यह भी डर था कि काका कहीं यह सब बातें हेमा या रघुनाथ को न बता दें। काका ने वायदा तो किया है परन्तु फिर भी बड़े आदमियों का क्या भरोसा ? इनकी मति बदलते क्या

देर लगती है... और फिर... फिर क्या होगा... जानकी आगे कुछ सोच न सकी, उसका मुँह लटक गया।

काका रूबीके सम्बन्धमें सोच रहे थे। रूबीके पतनका कारण स्वयं रूबी है या इस घर का वातावरण। उसका पालन ही ऐसे स्वतंत्र एवं उच्छृंखल वातावरणमें हुआ है जहाँ वह कभी भी भटक सकती थी। घरमें सबको स्वतंत्रता है। कहीं भी जाओ कोई कुछ नहीं कहता। पढ़ाई भी जिस प्रकार रूबीकी हुई है उसमें डांस ड्रामाको जितना महत्त्व दिया जाता है उतना चारित्रिक महत्त्वको नहीं... और रूबी भटक चुकी है। इसका परिणाम क्या होगा, कौन जानता है... और परिणाम क्या केवल रूबी तक सीमित रहेगा... उसकी काली छाया क्या पूरे परिवार पर नहीं पड़ सकती... रघुनाथ जिसने रूबीको इतनी स्वतंत्रता दे रखी है उसे यदि यह सब मालूम हो गया तो क्या होगा ? वह क्रोधसे पागल हो उठेगा और फिर न जाने क्या कर बैठेगा। हेमा ऊपरसे शान्त है परन्तु उसके भीतरका घुटन-भी वह अच्छी तरह जानती होगी। आखिर माँ है, लांछनका क्रूर प्रहार सबसे पहले उसको सहना होगा। उसे ही सब दोषी ठहरायेंगे...

काका को चुप देख कर जानकी को बहुत दुख हुआ। काका को दुखी करनेका एकमात्र कारण वही है। वह काका जो उसके सुख चैनका इतना ध्यान रखते हैं गौरीसे इतना स्नेह करते हैं, उन्हीं काका को उसने दुखी कर दिया। उसका मन ग्लानिसे भर गया बोली—"काका,मैं आपसे 'छिमा' माँगती हूँ... मैंने आपको भी दुखी किया और मालकिनका भी अपराध किया... मैं ही बड़ी मनहूस हूँ काका... आपको दुःखी कर..." और उसकी बात उसके गलेमें ही फँस कर रह गई। आँखें भींग गईं।

"इसमें तेरा क्या दोष है जानकी ? तू क्यों नाहक रोती है... मैं दुखी होकर भी क्या कर सकता हूँ। जो हो चुका उसे कोई मेट थोड़े ही सकता है। बस, इस घरकी इज्जत भगवान्‌के हाथमें है... लेकिन भगवान् भी क्या करेंगे ? ये विदेशी तौर-तरीकेसे रहना वैसे ही पढ़ना, वैसे ही बढ़ना... आखिर नतीजा दूसरा क्या होगा ?

"इसीलिये काका, मुझे कभी-कभी ऐसा लगता है कि गौरीको और पढ़ाना ठीक नहीं है। कहीं पढ़ने लिखनेसे वह भी न बिगड़ जाय।"

"पढ़ने-लिखनेसे कोई नहीं बिगड़ता पगली। हाँ, जिस वातावरणमें पढ़ाई हो रही हो वह दूषित नहीं होना चाहिये। मैं कितनी ही लड़कियों और औरतोंको जानता हूँ जो पढ़ लिख कर भी घरका सारा काम-काज करती हैं और हिन्दुस्तानी तरीकेसे रहती हैं। पढ़ना-लिखना एकदम बेकार नहीं है जानकी; आजकी दुनियामें तो कम-से-कम वह बहुत आवश्यक है।"

"वह भी हमेशा यही बात कहते थे सरकार और उनकी इच्छा भी यही थी कि गौरी पढ़ लिख जाय... और..." जानकी कुछ कहती-कहती रुक गई।

"और क्या इच्छा थी उनकी, बोल न ?" काका ने हँस कर पूछा।

"और उनकी इच्छा थी मालिक कि गौरीकी शादी कम-से-कम हाई स्कूलके मास्टरके साथ हो।" जानकी ने सकुचाते हुए उत्तर दिया।

"अच्छा उनकी दोनों इच्छाओंकी पूर्तिका जिम्मा मैं लेता हूँ बस। गौरी मेरी इतनी सेवा करती है तो क्या मैं उसके लिए इतना भी नहीं कर सकता ? अगर गौरी यहाँ न होती तो मेरे दिन इतनी खुशीसे शायद न बीतते।"

"वह तो आपकी ही बेटी है सरकार। आपकी सेवा न करेगी तो क्या करेगी ? लड़की की जात अभीसे सेवा करना नहीं सीखेगी तो कब सीखेगी मालिक।"

"अच्छा, बड़ी समझदार है तू तो। जा, जरा रसोईघरकी खबर भी ले ले। आज तो बातों ही बातोंमें बहुत समय बीत गया।"

जानकी उठ कर चली गई और काका वहीं विचारोंमें फिर खो गए।

—:o:—

अध्याय : ५ :

रूबी बहुत परेशान थी। विनोदके पिताजीका तबादला हो गया था और विनोद ने रूबीको लिखा था कि वह किसी भी तरह आज रातको ग्यारह बजे उससे अपने घरके पिछवाड़ेके सब्जी बागमें मिले। क्योंकि इसके बाद उनका मिलना शायद संभव न होगा। उसे भविष्यके संबंधमें उससे बहुतसी बातें करनी हैं और यदि वह आज मिलने नहीं आई तो वह समझेगा कि उसे उससे प्यार नहीं है। पिताजीका तबादला कहाँ हुआ है इस सम्बन्धमें विनोद ने कुछ नहीं लिखा था।

पत्र अप्रत्याशित रूपसे उसे प्राप्त हुआ था। हेमा परीक्षाके बाद उसे कभी घरसे बाहर न जाने देती थी। यदि वह हेमासे अधिक जिद करती या बहस करती तो हेमा फौरन काकासे उसकी शिकायत कर देती। काका की आवाजमें न जाने क्या जादू था कि वह न तो उनका उल्लंघन कर सकती थी न उन्हें उत्तर ही दे सकती थी। वह माँको खरी-खोटी सुना सकती थी, पितासे बहस कर सकती थी परन्तु काका... काका की आज्ञा आज्ञा होती थी बस। जिसका पूर्ण होना आवश्यक था और जो पूर्ण होती भी थी। अनेक बार उसकी इच्छा हुई कि वह काकासे विद्रोह कर दे किन्तु जब भी उसने काका की बातका उत्तर देना चाहा, उसकी जिह्वा ने उसका साथ देनेसे इन्कार कर दिया।

हेमा यदि रूबीका बाहर जाना आवश्यक ही समझती तो जानकीको उसके साथ भेज देती। जानकीसे रूबी बहुत घबराती थी। उसके पास आने-जानेवाले हर व्यक्तिको वह ऐसी दृष्टिसे देखती जैसी दृष्टिसे परीक्षक विद्यार्थीको देखता है। यहाँ तक कि उससे मिलनेवाली लड़कियोंको भी वह घूरती रहती... रूबी चाहती जानकीको वह झिड़क दे परन्तु ऐसा भी वह नहीं कर पाती थी। इसके दो कारण थे। प्रथम वह कि जानकी की निगरानीमें ही उसे बाहर निकलनेकी आज्ञा मिलती थी, जानकीको नाराज

करने पर यह थोड़ी बहुत स्वतंत्रता भी नष्ट हो जानेका डर था । दूसरे रूबी यह जानती थी कि उसके दिन भर गायब रहनेकी बात जानकीको मालूम थी और जानकी इस बातका भंडा फोड़ सकती थी जिसका फल बहुत बुरा हो सकता था । अस्तु, रूबीको अपनी भलाई इसीमें दिखाई देती कि वह जानकी से झगड़ा न करे ।

करीब आठ-नौ बजेकी बात होगी, उसने देखा विनोद उसके घरसे थोड़ी दूर बिजलीके खंभेसे लगा खड़ा हुआ उसे बुला रहा है । उसके हाथमें लिफाफे जैसी कोई चीज थी । रूबी समझ गई यह उसे पत्र देने आया है । विनोद तक कैसे पहुँचा जाय, यह एक पहेली थी । आवश्यकताके समय हमारा मस्तिष्क बहुत शीघ्रतासे सोचता है, रूबीके साथ भी यही हुआ उसे मालूम था कि रघुनाथ और हेमा अभी नीचे बैठे हैं । उसने झटपट कपड़े बदले, हाथमें एक पुस्तक ली और रघुनाथ और हेमाके सामनेसे निकल कर बरामदेकी ओर बढ़ी । अभी वह बरामदेसे संलग्न दरवाजे तक आई भी नहीं थी कि उसे हेमाके पुकारनेकी आवाज आई । रूबी इसके लिये पहलेसे तैयार थी । वह लौट कर वहाँ आई जहाँ रघुनाथ और हेमा बैठे थे ।

हेमा ने तनिक कठोर स्वरमें पूछा—"कहाँ जा रही हो सबेरे-सबेरे ?"

"शशिकी किताब वापस करने जा रही हूँ ।" रूबी ने शान्त स्वरमें कहा ?

"जानकीको साथ ले जाओ ।" हेमा बोली ।

"चार कदम पर तो घर है ममी और इतनीसी बातके लिये तुम जानकीको मेरे साथ भेज रही हो"... फिर रघुनाथकी तरफ मुड़ कर बोली—"क्यों पापा, क्या शशिके घर तक मैं अकेले नहीं जा सकती ?"

"क्यों नहीं जा सकती ?" रघुनाथने लाडसे कहा—"अब तो तुम्हें अकेली इंगलैण्डमें रहना है, इतनी दूर अकेले जानेमें हर्ज ही क्या है ?"

"ये जा चुकी इंग्लैण्ड ।" हेमा ने तिनक कर कहा ।

"तुम भी हेमा, बेचारी बच्चीके पीछे दिन-रात हाथ धोकर पड़ी रहती हो ।" और रूबीकी ओर देख कर बोले—"जा बेटी जा, परन्तु जल्दी आ जाना, समझीं ।"

रूबी हँसती हुई फौरन चली गई। हेमाको उसने खुली मात दी थी और बड़ी खुशी थी। उसकी हँसीमें शरारत घुली हुई थी।

"कब तक उसे इसी तरह 'बेचारी बच्ची' बनाये रहोगे मेरी समझमें नहीं आता। उन्नीस-बीस बरसकी हो गई है तुम्हारी लाडली समझे।!"

"अरे उन्नीस-बीस बरस भी कोई उम्र होती है? तुम्हें याद है हेमा जब तुम मुझसे मिली थी तो तुम्हारी क्या उम्र थी।" रघुनाथ ने ठिठोली करते हुए पूछा।

"हटिये भी...बूढ़े हो रहे हैं पर..."

"पर जवानीकी आदत नहीं गई...है न?" और रघुनाथ जोरसे खिलखिला कर हँस पड़े।

:o: :o: :o:

रूबी ने विनोदको पुस्तक दे दी। उसमें पत्र रखा था। विनोदका पत्र उसने जल्दीसे छिपा लिया। दोनोंमें कोई बात नहीं हुई। विनोद भी जल्दीमें था, फौरन चला गया।

रूबी लौट रही थी तो रास्तेमें जानी मिला। रूबी ने मुस्करा कर उसका स्वागत किया। जानी ने शिकायत की—"रूबी आजकल दीखती नहीं हो; बहुत 'बिज़ी' हो क्या?"

"नहीं जानी अब क्या बिज़ी? अब तो 'एक्ज़ाम' भी 'ओवर' हो गये है?"

"इसीलिये तो कह रहा हूँ कि 'एक्ज़ाम' 'ओबर' हो गये फिर भी नहीं दीखती हो। घर भी नहीं आती आजकल।"

"अरे जानी, तुम्हें पता नहीं, ममी आजकल बहुत 'स्ट्रिक्ट' हो गईं हैं...और वह कलमुँही आया भी ऐसी है कि साथमें छायाकी तरह लगी रहती है।"

"हाँ भई, तुम्हारी जैसी खूबसूरत लड़कीके साथ 'बाडीगार्ड' होना भी ज़रूरी है।"

"फिर लगे बनाने, झूठे कहीं के।" रूबी इठलाती हुई बोली।

"इसमें भी बनानेकी क्या बात है डार्लिंग, तुम विनोदसे पूछ लो न...'

"देखो फिर छेड़ने लगे झूठमूठ ।" रूठते हुए रूबीने कहा ।

"बेचारा ! बड़े चक्कर लगाता है तुम्हारे ? तुम भी तो बड़ी 'मेहरबान' हो उस पर ।"

' तुम भी कैसी बातें करते हो ? मैं उस पर क्या खाक मेहरबान हूँ... आ जाता है तो मजबूरीमें बातें करनी पड़ती हैं ? भई 'मैनर्स' का सवाल है न ? अच्छा 'जानी' अब चलूँगी ।"

"रूबी अब कब मिलोगी ? हमसे मिले बहुत दिन हो गये । काश, तुम समझ पातीं, हाऊ आइ एम पासिंग दी डेज़ विदाउट यू ?"

"तुम तो समझते हो, जैसे मुझे 'फील' ही नहीं होता...लेकिन कहा न आजकल 'ममी' बड़ी 'स्ट्रिक्ट' हो गई हैं ।... फिर भी कोशिश करूँगी... अच्छा...टा...टा.."

रूबी जब घर पहुँची तो रघुनाथ नहाने चले गये थे । हेमा रसोईमें थी, काका अपने कमरे में । रूबी सीधी अपने कमरेमें पहुँची और दरवाजा अन्दरसे बन्द कर विनोदका पत्र पढ़ने लगी ।"

:o: :o: :o:

विनोद पत्र देकर सीधा काफी हाउस पहुँचा । शशि वहाँ उसकी प्रतीक्षा कर रही थी । विनोदके समीप आते ही वह उस पर उबल पड़ी—"कबसे प्रतीक्षा कर रही हूँ तुम्हारी । आज सबेरे-सबेरे तुम्हारे कारण झूठ बोलना पड़ा...आधा घण्टा हो गया यहाँ खड़े-खड़े उल्लुओंकी तरह आँखें फाड़ कर सड़कें घूर रही हूँ..."

"आइ एम व्हेरी सारी, शशि । मुझे रास्ते में, प्रोफेसर कैलाश मिल गए थे इसीलिए जरा देर हो गई ।"

"यह जरा देर है तुम्हारे लिये ।"

"अच्छा बाबा, बहुत देर हो गई बस, चलो पहले चल कर अन्दर बैठो फिर इतमिनानसे झगड़ लेना ।"

"अच्छा जी, तो मैं झगड़ा कर रही हूँ ।"

"अब चलो भी...तुम क्यों झगड़ा करोगी, मेरा ही दिमाग खराब हुआ है जो तुम लोगों..." और विनोद कुछ कहता कहता रुक गया ।

शशि उसकी अधूरी बातका मतलब नहीं समझ सकी। विनोदके पीछे पीछे वह भी काफी हाउसके एक खाली केबिनमें जा बैठी।

विनोद ने पूछा—"अच्छा बताओ, क्या पियोगी... मेरा मतलब है 'हॉट काफी' लोगी या 'कोल्ड'।"

"मुझे कुछ नहीं पीना है।"

"अभी तक गुस्सा नहीं उतरा रानीजी का, क्यों?" विनोद ने शशिके दोनों हाथ अपने हाथोंमें लेते हुए कहा—"देखो शशि, रास्तेमें कोई मिल जाए तो उससे दो बातें तो करनी ही पड़ती हैं? फिर प्रोफेसर कैलाशको तो जानती ही हो कितने भले आदमी हैं। मेरी प्रतिभाको चमकानेका कार्य उन्हींने किया। मैं जो कुछ लिखता हूँ उन्हींकी प्रेरणासे लिखता हूँ... और... उसे याद आया एक दिन उसने रूबीसे कहा था—"रूबी मेरी प्रतिभा को विकसित करनेका कार्य तुम्हीं ने किया है। मैं जो कुछ लिखता हूँ तुम्हारी प्रेरणासे लिखता हूँ।"

रूबी... उसमें न जाने कौनसी आकर्षण शक्ति है जो हर किसीको अपनी ओर खींच लेती है। किसीसे मिलो लेकिन रूबीसे मिलने पर जो आनन्द प्राप्त होता किसी औरसे मिलने पर नहीं होता है। उसकी वह कटोरेसी बड़ी-बड़ी आँखें... जब भरपूर नजरसे वह किसीको देख लेती तो... अभी मिली थी... शृंगार नहीं था पर कितनी भली लग रही थी?

"अच्छा। तुम तो कहते थे कि तुम मेरी प्रेरणासे लिखते हो?" शशि दो क्षण मौन रह कर बोली।

"मैंने कब कहा कि तुम्हारी प्रेरणासे नहीं लिखता... मूल प्रेरणा तो तुम्हारी ही रहती है, मेरी शशिकी प्रेरणा।" और उसने 'बेल' जोरसे बजा दी।

बेयरा आया तो विनोद ने 'सेंडविच' और 'हॉट काफी' का आर्डर दिया।

शशि उसकी ओर एकटक देख रही थी। "मैं इसकी कविताकी प्रेरणा हूँ... किसी दिन विनोद बड़ा भारी कवि बन जायगा... कितनी प्यारी-

प्यारी कविता लिखता है,... यहाँ तो कुछ नहीं अगर वह इंग्लैण्डमें होता तो अवश्य 'पोएट लारियेट' बना दिया जाता और मैं..."

शशिकी आँखोंसे विनोदको रूबी झाँकती दिखाई दे रही थी। शशिकी आँखें छोटी-छोटी हैं, रूबीकी इसके विपरीत बड़ी-बड़ी... रूबी आज आएगी अवश्य... परसों वह दिल्ली छोड़ कर चला जाएगा। कहते हैं कलकत्ता भी बहुत बड़ा शहर है लेकिन दिल्लीका सा आनन्द, मालूम नहीं वहाँ मिलेगा या नहीं मिलेगा... यहाँ ऐशके लिये लड़कियाँ भी थीं और उनके पैसे भी... कितनी बेवकूफ हैं ये लड़कियाँ... ये समझती हैं मैं इनसे प्यार करता हूँ, इन पर कविताएँ लिखता हूँ। क्या कविता लिखनेके लिए इन लड़कियोंका होना आवश्यक है... कविता तो स्वस्फूर्त है... लड़कियोंका उनसे क्या सम्बन्ध... और 'प्यार'... प्यार बकवास है। प्लेटो ने ठीक कहा था कि प्यार एक बेवकूफी है और टैगोर ने कहा था कि प्यार खिड़कीसे प्रवेश करता है तो दरिद्रता उस घरमें दरवाजेसे आती है।... लेकिन मैंने इसके विपरीत सिद्ध कर दिया है इस जीवनमें। मेरे घर प्यार ने खिड़कीसे प्रवेश किया तो अमीरी ने दरवाजेसे।... ये बेवकूफ शशि अभी पूरा बिल पटाएगी... अपने प्यारका हवाला देगी और रूबी... वह भी ऐसा ही करती है प्यारके नाम पर... और..."

क्या सोचने लगे विनोद ?" शशि ने अपने स्वरमें स्नेह घोलते हुए पूछा। विनोद चौंक गया... बोला—"कुछ तो नहीं... तुम ही कुछ सोच रही थीं... मैं कहाँ कुछ सोच रहा था... मैं तो रूप-सुधाका पान कर रहा था।"

"झूठे कहीं के। कुछ सोच जरूर रहे थे। बताओ न क्या सोच रहे थे ?"

"नहीं पहले तुम बताओ, क्या सोच रही थी ?"

"मैं बताऊँ... मैं तुम्हारे बारेमें सोच रही थी... मैं सोच रही थी अगर तुम इंग्लैण्डमें होते तो एक दिन तुम 'पोएट लारीयेट' बन जाते... और..."

"अच्छा, सपने देख रही थीं।"

"सपना कहो या 'विशफुल थिंकिंग' कहो। मैं सोच यही रही थी तुम क्या सोच रहे थे ?"

"मैंने कहा न तुम्हारे बारे में सोच रहा था।"

"लेकिन क्या सोच रहे थे ?"

"यही कि... कि..." विनोदसे बात बनाते नहीं बन रहा था।

"कि... कि... क्या कर रहे हो, बताओ ?"

"कि तुमसे शादी हो जाए तो कैसा अच्छा हो ?"

"ओह। इतनीसी बात कहनेके लिये इतनी भूमिका बाँध रहे थे।"

"तुम्हारे लिये यह इतनीसी बात होगी शशि, पर मेरे लिये यह जीवन मरणका प्रश्न है।" विनोद ने थोड़ा 'रोमांटिक' होते हुए कहा—

"अच्छा उस दिन तो तुम कह रहे थे कि शादी ब्याह को तुम ढकोसला समझते हो।"

"अरे वह तो मैं मज़ाक कर रहा था शशि डार्लिंग... और वह फिर लड़खड़ा गया। बार-बार कोशिश करने पर भी वह शशिसे ठीक तरहसे बातें नहीं कर पा रहा था। रूबीका चेहरा उसे बार-बार याद आता और उसकी बात टूट कर रह जाती।

बेयरा ने लाकर सेंडविच और काफी रख दी। शशि ने घड़ी देखी और कहा—"विनोद तुमने बताया नहीं क्यों बुलाया था ?"

"कुछ नहीं, यूँ ही तुमसे मिलनेकी इच्छा हुई इसलिये बुला लिया था और मैं..."

"तुम क्या ? आज तुम्हें हुआ क्या है ? कैसी उखड़ी-उखड़ी बातें कर रहे हो। लगता है आज एकदम कविताके मूडमें हो.. खोये-खोयेसे।"

"ऐसी कोई बात नहीं है शशि... हाँ मूड थोड़ा 'ऑफ' है।" सेंडविच चबाते हुए, कहा विनोद ने।

"विनोद, तुमसे रूबी मिली थी क्या ?" अचानक बात बदलते हुए शशि ने पूछा।"

"रूबी... नहीं तो... कब... कहाँ।" कुछ घबरासा गया विनोद।

"रूबीका नाम सुन कर तो तुम इस तरह घबरा गए जैसे साँप देख

लिया हो...उस दिन हमारे घर मिसेज़ चोपड़ा आई थीं, कह रही थीं रूबी एक दिन, दिन भर घर से गायब रही.."

"रूबी दिन भर घरसे गायब रही इससे मेरा क्या सम्बन्ध ? क्या पता कहाँ थी ?"

"ओफ्फोह, मैंने कब कहा इससे तुम्हारा सम्बन्ध है ?"

"तुमने पहले पूछा न कि तुमसे रूबी मिली थी क्या ?"

"अरे बाबा, तुम हदसे ज्यादा शक्की हो। जबरदस्ती खुदको इस मामलेमें घसीट रहे हो। मुझे मालूम है वह कहाँ गई थी, किसके पास गई थी।"

"तुम्हें मालूम है ? सच बताओ तुम्हें मालूम है ?"

"हाँ मुझे मालूम है।" शशि ने गर्वसे कहा।

"तुम्हें कैसे मालूम हुआ ? रूबी ने बताया था क्या ?"

"तुम तो ऐसे घबरा रहे हो विनोद जैसे रूबी तुम्हारे ही साथ थी ?" और शशि शरारतभरी हँसी हँस पड़ी।

"और तुम मूझे इस तरह पहेलियाँ बुझा रही हो जैसे मैं ही उसके साथ था।" विनोद ने खीझ कर कहा।

"अच्छा विनोद अब चलूँगी।" शशिने घड़ी देखते हुए कहा—"बहुत देर हो गई है मुझे आए हुए।"

"तुमने बताया नहीं शशि किसके साथ थी रूबी ?"

"छोड़ो भी जाने दो वह बात।"

"अच्छा जाने दो परन्तु थोड़ी देर बैठो न।" उसने शशिका हाथ पकड़ कर बैठाते हुए कहा।

"नहीं विनोद मैं जाऊँगी अब। तुम्हें कुछ काम भी तो नहीं है खास।"

"काम कैसे नहीं है, तुम बैठो भी तो।"

"एक्सक्यूज़ मी विनोद। सच बहुत देर हो गई...मैं बड़ी मुश्किलसे बहाना बनाकर के आई थी।"

"खैर, तुम जाना ही चाहती हो तो जाओ। तभी बेयरा ने आकर बिल सामने रख दिया। विनोद ने अपनी जेबमें हाथ डाला किन्तु शशि ने पहले ही पैसे उस पर रख दिये और बेयरा सलाम कर चला गया।

"यह ठीक नहीं है शशि । तुम ही हर बार बिल अदा करती हो ।"

"सब ठीक है । अरे...तुम नहीं जा रहे हो क्या ?"

"नहीं भई, हम अभी नहीं जायेंगे । और फिर तुम जाओगी बससे और हम अपनी गरीब साइकिलसे ।"

"अच्छा तो जा रही हूँ ।"

"अच्छा" विनोदने फिरसे बेल बजा दी । उससे यह भी नहीं हुआ कि वह शशिको दरवाजे तक पहुँचा दे ।

उसने सोचा शशिसे मिलना बेकार हुआ । यह भी कोई मुलाकात हुई...लेकिन दोषी तो वही है । वह तो स्वयं आज उखड़ा-उखड़ा था और फिर काफी हाउस भी कोई मिलनेकी जगह है ? मुलाकात तो आज रूबीसे होगी । रूबीका नाम लेते ही उसके दिमाग पर एक नशासा छा गया और उसे लगा जैसे रूबी उसके बाहुपाशमें कैद है । उसकी गर्म-गर्म साँसे उससे टकरा रही हैं और उसके अधर रूबीके अधरोंसे उलझे हुए हैं...

"क्या लाऊँ साहब ?" बेयरा ने परदा हटा कर पूछा ।

"एक काफी लाओ, 'हॉट' ।" विनोद ने चौंक कर कहा ।

काफी आ गई । बेयरा चला गया । विनोद फिर अपने खयालोंमें खो गया । आज रूबीसे वह अन्तिम बार मिलेगा । आजके बाद रूबीका सुन्दर शरीर कभी उसके बाहुपाशमें कैद नहीं होगा, उसकी आँखोंकी गहराईमें वह फिर कभी नहीं डूब सकेगा और कोमल कपोलोंको उसके अधर कभी नहीं छू सकेंगे, उसकी ऊँगलियाँ कभी उसके रेशमी बालोंसे नहीं खेल सकेंगी और वह फिर कभी रूबीके हृदयकी उठती गिरती धड़कनोंको सिर रख कर नहीं गिन सकेगा...आज रूबी उससे अन्तिम बार मिलेगी, इसीलिये आज उसे रूबीसे वह सब कुछ पा लेना होगा जो वह रूबीसे पा सकता है...

फिर बिजलीकी तरह उसके मस्तिष्कमें एक शब्द चमक गया...परिणाम ! कहीं रूबीको इसका कुपरिणाम भोगना पड़ा तो ? ऊँह, कुपरिणाम क्या भोगना पड़ेगा और भोगना पड़ा तो इसके लिये वह जितना दोषी है उतनी ही रूबी भी है । जब स्वयं रूबीको चिन्ता नहीं तो उसे क्यों हो ? अब उसे यहाँ रहना भी तो नहीं है; जो कुछ होगा वह रूबी ही

भोगेगी। क्या वह इतना बेवकूफ है कि जाकर रूबी को अपना पता भेजेगा। रूबीको जब उसका पता ही नहीं मालूम होगा तो वह क्या करेगी और क्या प्रमाण होगा उसके पास कि मेरे ही कारण उसे दुर्दिन देखने पड़े ! ...यह सब बेकारकी बातें सोचने लगा वह ? उसे तो केवल मिलनकी घड़ियोंका स्मरण करना चाहिये और वह बेकारकी बातोंमें उलझ गया ?

:o: :o: :o:

रूबी सोच रही थी विनोद उसे कितना चाहता है। जा रहा है और इसीलिये जानेके पहले उससे मिल लेना चाहता है...परन्तु वह उससे मिलेगी कैसे ? अगर रातको किसी ने देख लिया तो क्या होगा ? आज घरमें सब जल्दी ही सो जायँ तो अच्छा है। कहीं पापा आज भी देरसे क्लबसे आए, तो फिर जाना कठिन हो जायगा। पापा भी अजीब हैं... रातको देरसे घर आते हैं और फिर आधी रात तक जागते पड़े रहते हैं माँ के कमरे में।...और उसके शरीरमें रोमांच हो आया। उसे उस दिनकी याद आ गई जब वह विनोदसे मिली थी। उसके गाल लाल हो गये। उसने निर्णय कर लिया, वह आज विनोदसे अवश्य मिलेगी और उससे कहेगी कि वह अपने पितासे कह कर पापासे उसके बारेमें बात कर लें। विनोद गरीब घरानेका लड़का है तो क्या हुआ उसके पिता तो अमीर हैं और वही उनकी एकमात्र संतान है। आखिर पिताजी इतना पैसा क्या करेंगे। काका के पास भी काफी पैसा है, वह भी उसीको मिलेगा ? अच्छा हुआ बेबी... छि:-छि: मैं कैसी बुरी बात सोच रही थी। अपनी बहनके बारेमें कोई सोचता है ऐसा ? खैर...अब तो बेबी है ही नहीं काका को भी अपना धन उसीको देना पड़ेगा। फिर विनोद और उसके पास बहुतसा धन इकट्ठा हो जायगा। वह एक खूबसूरतसा बँगला बनवाएगी। विनोद नौकरी नहीं करेगा, बिजनेस करेगा। पैसा तो बस 'बिजनेस' में है... फिर... फिर...

:o: :o: :o:

और रातकी काली चादर ने पृथ्वीको ढक लिया। सड़कोंका कोलाहल नीरवतामें डूब गया। कुहरे ने अँधेरी रातको और गहरा कर दिया। सन्नाटेका साम्राज्य छा गया। रूबी आठ बजे ही अपने कमरेमें जाकर

सोनेका बहाना कर चुकी थी। रघुनाथ क्लब नहीं गए थे; उनके सिरमें दर्द था। काका दस बजेके बाद कभी जागते नहीं थे। रूबी ने रेडियमके चमकते काँटोंको देखा, पौने ग्यारह बजे थे। घरमें सब सो चुके थे। वह धीरेसे कमरेसे निकली और...

विनोद रूबीका इन्तजार कर रहा था। किसी छायाको अपनी ओर आते देख उसने दबी आवाजसे पुकारा—"रूबी।" रूबी ने उत्तर में कहा—"विनोद।"

:o: :o: :o:

सबके प्यालोंमें टेबुल पर रखी चाय ठंडी हो रही थी। सामने 'हिन्दुस्तान टाइम्स' की प्रति उल्टे मुँह पड़ी थी। टेबिलके चारो ओर हेमा, काका और रघुनाथ बैठे हुए थे। रूबी अपने कमरेमें पड़ी रो रही थी (रोने का उपक्रम कर रही थी)।

रघुनाथको विश्वास ही नहीं होता था कि रूबी फेल हो गई है। हेमा और काका चुप थे परन्तु उनके चेहरोंसे ऐसा प्रतीत नहीं होता था कि उनके लिये कोई अप्रत्याशित घटना नहीं घटी है। काका को तो विश्वास ही था कि रूबी इस वर्ष पास नहीं होगी। हेमा भी संदिग्ध थी। रूबीकी हरकतें उससे छिपी नहीं थी। अपने इस सन्देहको हेमा क्रोधके आवेगमें कई बार प्रकट भी कर चुकी थी। परन्तु जब रूबी सचमुच फेल हो गई तो उसे दुःख हुआ। कुछ भी हो आखिर रुबी उसकी अपनी सन्तान है। उसकी रानी बिटिया फेल हो गई और नौकरानीकी लड़की पास हो गई। पास ही नहीं हुई कक्षामें प्रथम भी आई। गौरीकी सफलता रूबीके मुँह पर एक तमाचा थी। रघुनाथको भी गौरीकी सफलताका ज्ञान था। उन्होंने उसकी सफलतामें कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई थी। वैसे भी वह नौकर-चाकरोंमें कभी कोई दिलचस्पी नहीं लेते थे। उनकी दृष्टिमें ये सब हेय प्राणी थे और उनसे अधिक बात करना या उन्हें मुँह लगाना स्वयंकी बेइज्जती करना था। यह बात भी उन्हें याद नहीं थी कि गौरी कक्षामें प्रथम पास हुई है, किन्तु रूबीके परीक्षा-फल ने उन्हें एकदम झिझोड़ दिया और उनके मस्तिष्क पर जिस वस्तु ने अधिक कठोरतासे प्रहार किया वह

रूबीकी असफलता कम और गौरीकी सफलता अधिक थी। वह रूबीकी कितनी प्रशंसा करते थे... कैसे-कैसे महत्त्व उन्होंने बना रखे थे। घरमें प्रत्येकके विरोधके बावजूद वह रूबीको पूरी स्वतंत्रता दे कर पढ़ा रहे थे। उन्होंने दृढ़ निश्चय कर लिया था कि वह रूबीको इंग्लैण्ड भेजेंगे... किन्तु उनके कल्पना महलकी आज एक-एक ईंट टूट कर धराशायी हो गई। कुछ समझमें नहीं आ रहा था कि उन्हें रूबी पर क्रोधित होना चाहिये या उससे सहानुभूति प्रकट करना चाहिये। दोनों भावनाओंमें द्वन्द्व हो रहा था। जैसे ही उनकी इच्छा होती कि वह रूबीको जाकर समझाएँ उन्हें लगता कि गौरी उनके सामने खड़ी जोर-जोर से हँस रही है... और उन्हें क्रोध आ जाता कि रूबी ने मेरा अपमान कराया। तब उनकी इच्छा होती कि वह रूबीको जा कर खूब पीटें... किन्तु तभी उनका मन उनसे कहता, वह तो स्वयं दुःखी है। उस पर क्रोध करना क्या उचित होगा और उनका क्रोध शान्त हो जाता... वह वहीं बैठे रह जाते।

जानकी बर्तन उठाने आई तो उसने देखा रघुनाथके कपमें चाय पूरी रखी है। काका का कप आधा भरा है और हेमा ने शायद एक तिहाई चाय पी है। खानेकी वस्तुओंको किसी ने हाथ नहीं लगाया है, वह उसी तरह रखी हुई है। चाय ठंडी हो चुकी है। उसने हेमासे पूछा—"मालकिन, चाय फिरसे गर्म कर लाऊँ ?"

हेमा ने जानकीको कोई उत्तर न देकर रघुनाथसे कहा—"आपने चाय नहीं पी बिल्कुल ?" रघुनाथ जैसे सोतेसे जाग गए जानकीसे बोले— "हाँ जरा चायके लिये और गर्म पानी ले आओ।" फिर हेमासे बोले—

"क्यों हेमा, यह रूबी क्यों फेल हो गई ?"

"आप तो मुझसे ऐसे पूछ रहे हैं जैसे मैं ही फेल हो गई हूँ... ये बात तो आप को रूबीसे पूछनी चाहिये !"

"तुम्हीं देखो न हेमा, रूबीको पढ़ाने दो-दो मास्टर आते थे। पुस्तकोंका उसके कमरेमें ढेर लगा है। पढ़नेके अतिरिक्त उसे कुछ काम करना नहीं पड़ता... फिर भी वह फेल हो गई !"

"पढ़ाई मास्टरों और पुस्तकोंसे ही नहीं होती, पढ़ाईके लिये तो मन लगाना पड़ता है। गौरीको देखो!"——काका ने कहा।

"आपका मतलब है रूबीका मन पढ़ाईमें नहीं लगता ?" रघुनाथ गौरीके सम्बन्धमें न कुछ कहना ही चाहते थे न सुनना चाहते थे, इसीलिये गौरीका नाम आते ही उन्होंने काका को बीचमें टोक दिया।

"मुझे तो ऐसा ही लगता है कि रूबीका मन पढ़ाईमें नहीं लगता।"

"आपके इस कथनका कोई आधार भी तो होगा ?" रघुनाथ ने पूछा।

"क्यों हेमा, तुम्हें मेरी बात ठीक जँचती है क्या ?" काका ने रघुनाथको उत्तर न दे कर हेमासे प्रश्न किया।

हेमा क्या उत्तर देती। हेमाका हृदय इस कथनकी गहराईमें छिपी सत्यताको जानता था। वह जैसे पकड़ ली गई हो, उससे न हाँ कहते बना न नहीं कहते। यदि वह 'हाँ' कहती तो रघुनाथ उससे वही प्रश्न करते जो उन्होंने काकासे किया था और न कहने पर उसे स्वयंसे झूठ बोलनेका पाप करना पड़ता। काका की बातकी सत्यताको वह जानती थी। यह भी जानती थी कि रूबीका मन किन उलझे हुए रास्तोंमें भटक गया है। उसने बात टालनेकी कोशिशकी कहा——"काका, मैं आपका मतलब समझी नहीं ?"

"काका ने ऐसी कौन-सी पहेली बुझा दी जो तुम उनका मतलब नहीं समझीं। सीधी सी तो बात है कि रूबी मन लगा कर पढ़ती है या नहीं ?"

"मन लगा कर पढ़ती है या नहीं यह मैं कैसे कह सकती हूँ। हाँ, रातमें देर तक पढ़ती रहती थी, यह मैं देखती थी इतना ही मैं बता सकती हूँ। मैं कोई अन्तर्यामी तो हूँ नहीं कि यह भी जान सकूँ कि मन पुस्तकमें है या कहीं और है।"

'ओह तुम तो बात यूँ ही उलझा रही हो। मैं कहता हूँ...!"

"क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ ?" सधा हुआ स्वर सुनाई दिया। रघुनाथकी बात अधूरी रह गई। सबने देखा रूबीके ट्यूटर कुंजीलालजी दरवाजे पर खड़े थे। श्वेत वर्ण, ऊँचा पूरा साढ़े पाँच हाथका शरीर, और

उस पर घुँघराले बाल। चेहरे पर सौम्यता, वाणीमें दृढ़ताका स्वर। सफेद कुरता-पाजामा पहन रखा था। एक उदासीकी लकीर उनके चेहरे पर छाई रहती थी जो ध्यान देने पर उस समय भी देखी जा सकती थी, जब वह बच्चोंकी तरह खिलखिला कर हँसते थे। वैसे भी कुंजीलालजी सदैव मुस्कराते रहते थे... यह और बात थी कि यह उदासीकी लकीर जो समयकी कटुता ने उनके मुख पर खींच दी थी, कभी नहीं मिट पाती थी।

"आइये कुंजीलालजी!" काका ने उनका स्वागत करते हुए कहा। काका को कुंजीलाल बहुत पसन्द थे।

कुंजीलाल अन्दर आ गए। तो उन्हें रूबी वाली कुर्सी पर बैठा दिया गया।

रघुनाथ ने कहा—"रूबी...!"

"जी हाँ! उसका परीक्षाफल देख कर ही आ रहा हूँ। उसके असफल होनेका मुझे बहुत दुःख है। तीन महीने मैंने उसे पढ़ाया था और उसे इस योग्य भी न बना...!"

"इसमें आपका क्या दोष है?" काका ने उन्हें बीचमें रोकते हुए कहा—"आप उसे पढ़ा सकते हैं, समझा सकते हैं; उसे घोल कर पिला तो नहीं सकते? और फिर आप ही नहीं रूपलालजी भी उसे पढ़ाते थे। आप तो केवल आधा घंटा उसे पढ़ाते थे, वह उसे एक घण्टा पढ़ाया करते थे।"

"उनकी बात मैं नहीं जानता।" कुंजीलाल ने कहा—"मुझे ऐसा अनुभव होता है कि मैं अपना कर्त्तव्य पूरा नहीं कर सका इसीलिये मैं आपकी ट्यूशन फीसके ये रुपये लौटाने आया हूँ।" जेबसे निकाल कर उन्होंने एक लिफाफा रघुनाथके सामने रख दिया और उठ खड़े हुए—"अच्छा, मुझे आज्ञा दीजिये...नमस्ते!"

रघुनाथ यह सब देख कर किंकर्त्तव्यविमूढ़ रह गए...उन्होंने कहा—"सुनिये..!" देखिये, लेकिन तब तक कुंजीलाल दरवाजेसे गुजर कर आगे जा चुके थे। रघनाथ उठ कर दरवाजेकी ओर बढ़े कि उन्हें रूबीके कमरेसे उल्टी होनेकी आवाज आई। वह उधर न जा कर रूबीके कमरेकी ओर चल

पड़े । रूबी बिस्तर पर औंधे पड़ी थी और कै कर रही थी । रघुनाथका गुस्सा फौरन उतर गया । वह उसके समीप पहुँचे और उसकी पीठ सहलाने लगे । हेमा और जानकीको भी आवाज़ दी । रूबी जोर-जोरसे सिसकियाँ भर रही थी और उल्टी कर रही थी । रघुनाथ उसे चुप कराने लगे । उन्होंने कहा—"अरे पगली इतनी-सी बातके लिये रो रही है । तू इस साल पास हो जाना... बस... चुप हो जा अब !"

जानकी पानी ले आई थी । रूबी ने मुँह धोया और रघुनाथकी गोदमें सिर रख कर रोने लगी । हेमाकी आँखोंमें भी आँसू भर आए और वह भी वहीं दूसरी ओर बैठ कर रूबीको चुप कराने लगी । काका ने डाक्टरको बुलानेकी सलाह दी लेकिन रघुनाथ ने यह कह कर मना कर दिया कि अधिक रोनेके कारण उसकी तबीयत खराब हो गई है । आराम करने से ठीक हो जायगी ।

काका की तबीयत अचानक खराब हो गई । दोपहर में वह कहीं बाहर कामसे गये थे । जब वापस लौटे तो शरीर कुछ गर्म मालूम पड़ा । आ कर अपने पलंग पर लेट गये । देखते ही देखते उन्हें तेज़ बुखार चढ़ गया । गौरी काका के कमरेमें चाय ले कर आई तो उसने देखा काका आँखें बन्द किये जोर-जोरसे साँसें ले रहें हैं । जब दो-तीन बार काका को आवाज़ दी, तो उन्होंने आँखें ख़ोली । काका की आँखें अंगारोंकी तरह लाल-लाल हो रहीं थीं । उसने काका के माथे पर हाथ रखा तो वह तवे की तरह जल रहा था । गौरी उल्टे पैर वहाँसे वापस हुई और आ कर अपनी माँ और हेमाको यह सब हाल सुना दिया ।

हेमा और जानकी दौड़ी-दौड़ी काका के कमरेमें आईं । काका बेसुध पड़े थे । किन्तु बार-बार उनके होंठ कुछ बड़बड़ा उठते थे । वह क्या बोलते थे यह किसी को समझमें नहीं आता था, परन्तु इतना स्पष्ट था कि वह कुछ बोल अवश्य रहे हैं ।

हेमा ने वापस आ कर रघुनाथको टेलीफोन किया कि वह फौरन चले आएँ क्योंकि काका की तबीयत बहुत खराब है । रघुनाथ ने हेमासे कहा कि उनका फेमिली डाक्टर बाहर गया है वह डा० वर्माको फोन कर रहे हैं ।

डाक्टर आ कर काका को देख जाएगा और आफिसके कामसे फुरसत मिलते ही वह घर आ जाएँगे।

जब डाक्टर आया तो काका जोर-जोरसे चिल्ला रहे थे—"पकड़ो... पकड़ो... इस यमदूतको पकड़ो...मेरी बेबीको ले कर यह भाग रहा है... वह देखो बेबी आ रही है... देखो हेमा रघुनाथसे कह दो कि वह बेबीके लिए कुछ न करे... वह मेरी बेटी है समझो... अरे गौरी! जरा बेबीको देख तो क्या हो गया?... क्यों रो रही है... अहा... हा... मेरी बे... बी... बेबी बेटी...!" डाक्टर ने थर्मामीटर लगा कर देखा तो पता लगा टेम्परेचर एक सौ पाँच डिग्री है। डाक्टर ने काका को इञ्जेक्शन दिया और हेमाको दवा लिख कर दी कि वह किसी को उसके साथ भेज कर दवाखानेसे दवा मँगा ले। अचानक काका ने डाक्टरका हाथ मजबूतीसे पकड़ लिया और पूछा—"तुम कौन हो?"

डाक्टर ने हाथ छुड़ानेकी कोशिश करते हुए संयत स्वरमें कहा—"मैं डाक्टर वर्मा हूँ।"

"तुम डाक्टर हो!... तुम डाक्टर हो न?... तुम मुझे बचा लो... तुम मुझे बचा लो... मैं बेबीको ढूँढ़े बगैर इस दुनियासे नहीं जाना चाहता हूँ... डाक्टर तुम्हें मालूम है बेबी कहाँ है?... तुमको अवश्य मालूम होगा ... देख डाक्टर ये सब पागल हैं... तुम इनकी बातों में नहीं आना... ये सब झूठ बोलते हैं डाक्टर... ये सब झूठ बोलते... ये कहते हैं मेरी बेबी तूफानमें बह गई...ये बिल्कुल झूठ है, डाक्टर मेरी बेबीको तूफान नहीं निगल सकता...बेबी...मेरी बेबी..!" और काका जोरसे रोने लगे। जानकीकी आँखोंका बाँध टूट गया। वह वहाँसे एकदम हट गई। काका का एक-एक शब्द जानकीके हृदय पर हथौड़ेकी तरह पड़ रहा था। गौरी काका के पैरोंसे लिपट कर रोने लगी। हेमा काकाके सिरहाने बैठ कर आँसुओंको रोकनेकी असफल चेष्टा करने लगी।

डा० वर्मा काका को इञ्जेक्शन देकर जाने लगे, तो जानकी उनके साथ-साथ काका के लिये दवा लेने चली। उसने पूछा—"डाक्टर साहब, काका अच्छे हो जायेंगे न?"

"बूढ़ा शरीर है और बीमारीका तेज हमला है। कुछ कहा नहीं जा सकता।"

"तो क्या काका...?" जानकीका गला रुँध गया और उसकी आँखोंमें आँसू छलछला आए।

डाक्टर वर्माको आश्चर्य हुआ कि इसे घरकी नौकरानी होते हुए भी अपने मालिकसे कितनी सहानुभूति है। उन्होंने कहा—"नहीं नहीं... ऐसी बात नहीं है। उनकी देखरेख ठीकसे होगी और दवा वगैरह ठीक समय पर मिलती रहेगी तो ठीक ही हो जायेंगे...तुम जानती हो ये बेबी कौन है?"

"बेबी...बेबी डाक्टर साहब...!" जानकी परेशान हो गई कि डाक्टरको क्या उत्तर दे। एक-एक शब्दको बड़ी कठिनाईसे उगलते हुए उसने कहा—"बेबी...इनके भतीजे कैप्टन साहबकी छोटी लड़की थी डाक्टर साहब...वह...डूब कर मर...गई!" अपनी बात पूरी करते-करते उसे पसीना छूट आया। उसे लगा जैसे सचमुच कोई गौरीका गला पकड़ कर दबा रहा है और गौरी मर रही है। उसके मुँहसे हल्की-सी चीख निकल गई। डाक्टर ने पूछा—"क्या हुआ?"

"जी कुछ नहीं...ठोकर लग गई।" जानकी ने उत्तर दिया और आँचलसे अपने माथेका पसीना पोंछने लगी।

बर्फकी पट्टियाँ काका के सिर पर रखी जा रही थीं। रातके दो बजे थे। कैप्टन रघुनाथ 'ईज़ीचेयर' पर वहीं लेटे थे। हेमा काका के सिरहाने बैठी थी और जानकी पैरोंकी ओर। गौरीको एक बजे हेमा ने जबरदस्ती वहाँसे सोनेके लिये भेज दिया था। डाक्टर एक बार और आ कर जा चुका था।

काका चुप रहते-रहते एकदम चीखने चिल्लाने लगते थे। काका ने फिर चिल्लाना शुरू किया—"तुम मुझे ले जाने आए हो...नहीं...नहीं... मैं नहीं जाऊँगा...मुझे बेबीको एक बार देख लेने दो...बस एक बार! फिर चुप हो गए...चुप्पी दो क्षणों की थी...काका ने फिर चिल्लाना शुरू किया—"तुम मुझे बेबीके पास ले जाओगे...अच्छा तो चलो मैं भी चलता हूँ...देखो हेमा तूफान आ रहा है...मैं जा रहा हूँ, बेबीके पास जा

रहा...!" काकाकी आवाज गलेमें फँस कर टूट गई। वह मूर्च्छित हो गए। रघुनाथ टेलीफोनकी ओर दौड़े। हेमा ने काकाके मुँह पर पानी छिड़का।

जानकीका मन अन्दरसे कचोट गया। उसने सोचा अगर काका यूँ ही मर गए तो उनकी आत्माको कभी शान्ति नहीं मिलेगी। उसके पतिका आत्माको भी कभी शान्ति नहीं मिलेगी क्योंकि उनकी अंतिम इच्छा यही थी कि गौरीको उसके माता-पिताके हाथ सौंप दिया जाय...और वह यदि गौरीको उसके माता-पिताको सौंपे बगैर मर गई तो उसे नर्क मिलेगा क्योंकि वह दूसरेकी वस्तु पर जबरदस्ती अधिकार जमाये हुए है...गौरी एक-न-एक दिन दूसरेकी हो ही जायेगी, फिर यह झूठा मोह क्यों ?...काका अपनी बेबीको सामने होते हुए भी नहीं देख सकते, केवल उसीके कारण। वह बेबी और काकाके बीच दीवार बन कर खड़ी हुई है। काकाके प्राणोंकी इस तड़प-का पाप उसी पर पड़ रहा होगा।...उसकी इच्छा हुई वह अभी सब कुछ बता दे किन्तु वह सब व्यर्थ था। काका होशमें नहीं थे।

"बे...बी...!" डूबती हुई साँसोंसे काका ने फिर पुकारा।

डाक्टर वर्मा ने उसी समय प्रवेश किया। जानकी वहाँसे उठ कर हेमाके कमरेमें आई, जहाँ कृष्ण भगवान् की मूर्ति रखी थी। उसकी आँखोंमें आँसू बह रहे थे। उसने आँखें बन्दकी और हाथ जोड़ कर बोली—"हे भगवान्! तू काकाको अच्छा कर दे...मैं उन्हें सब कुछ बाता दूँगी...तू उन्हें जरूर अच्छा कर दे...यदि न बताऊँ तो मुझे मेरे पतिकी कसम है।" और जानकी ने अपना सिर भगवान् के चरणोंमें टेक दिया।

चार बजे सबेरे काका का बुखार एक सौ दो डिग्री हो गया और उन्हें नींद आ गई। डाक्टर वर्मा तब कैप्टन रघुनाथकी गाड़ीसे वापस हुए।

तीन दिन काका की तबीयत इसी तरह बनती-बिगड़ती रही। जब बुखार तेज होता तो काका बड़बड़ाने और रोने लगते, जब बुखार कम होता तो चुपचाप पड़े रहते। किसीसे कोई बात नहीं करते...चौथे दिन सबेरे काका का बुखार बिल्कुल उतर गया। टेम्परेचर 'नार्मल' हो गया। घरमें सबके उदास चेहरों पर खुशीकी एक लहर दौड़ गई।

काका स्वस्थ हो गये किन्तु उन्हें अभी कमजोरी इतनी अधिक थी कि चल फिर नहीं सकते थे। प्रायः दिन-रात खाट पर पड़े रहते थे। उनका रंग कुछ काला पड़ गया था। गौरी काकाके पास बैठी उन्हें अपने स्कूलकी बातें सुना रही थी। कैप्टन साहब दफ्तर गए हुए थे। हेमा स्वयं रूबीको ले कर डाक्टर वर्माके दवाखाने काका की दवा लेने गई थी।

जानकी ने देखा कि काकासे सब कुछ कह देनेका यही अच्छा अवसर है। वह काकाके कमरेकी ओर बढ़ी किन्तु उसके पैर लड़खड़ा गए। उसके साहसने जवाब दे दिया। वह हेमाके कमरेमें आई। तीन दिनोंसे ही हेमा का कमरा अत्यधिक अव्यवस्थित हो चुका था। वह जा कर कृष्णकी मूर्तिके आगे घुटने टेक कर बैठ गई—"हे प्रभु, तुमने मेरी बात सुन ली... मेरी लाज रख ली... मैं तुम्हारा कैसे धन्यवाद करूँ... प्रभु! मैं अपनी बात पूरी करने जा रही हूँ, तुम मुझे शक्ति दो... मैं बहुत कमजोर हूँ भगवन्... तुम साहस दोगे... तभी सच्चाई मेरे मुखसे निकल सकेगी!"

काका के कमरेमें जानकी ने काँपते पैरोंसे प्रवेश किया। गौरीकी ओर नीची नजर किये हुए ही उसने कहा—"गौरी, मालकिनका कमरा बहुत गंदा हो गया है, तू जरा जा कर साफ कर दे उसे।"

काका ने गौरीको रोकना चाहा परन्तु गौरी स्वयं उठ कर चली गई। काका ने जानकीसे कहा—"जानकी, हेमा बता रही थी, तूने मेरी बीमारीमें बड़ी सेवाकी... रात-दिन भर जागती रही तू!"

"मैं क्या सेवा करती सरकार, वह तो मालकिनकी मेहरबानी है जो ऐसा कहती हैं। एक बात पूछूँ सरकार! आप बेबीको बहुत चाहते हैं क्या... आप सरकार बीमारीमें बार-बार उसीका नाम लेते थे... इसीसे पूछती हूँ।"

बेबीका नाम सुन कर काका थोड़े उदास हो गये, बोले—"हाँ जानकी, बेबीको मैं बहुत चाहता था! मैं अपनी सारी जायदाद उसे दे देना चाहता था पर विधाता ने मुझसे उसे छीन लिया!"

जानकी जहाँ खड़ी थी वहीं बैठ गई। बोली—"सरकार, अगर आपकी बेबी मिल जाये तो आप बहुत खुश होंगे न?"

"यह भी कोई पूछनेकी बात है पगली, परन्तु मेरे ऐसे भाग्य नहीं है रे कि बेबी मुझे मिल जाती !"

"और सरकार जिसके पास अब तक बेबी रही उसे आप क्षमा भी कर देंगे ?"

"तू तो आज ऐसी बातें कर रही है जैसे बेबीके बारेमें तुझे सब कुछ मालूम ही है ।"

"हाँ सरकार, मुझे बेबीके बारेमें...सब कुछ मालूम है...!" जानकी ने काँपते हुए स्वरमें कहा ।

"क्या मालूम है तुझे ? दिमाग तो ठीक है तेरा ?"

"हाँ काका, दिमाग तो अब ही ठीक हुआ है मेरा...ये गौरी...है न...काका...ये मेरी...बेटी नहीं...आपकी...बेबी है !"

"क्या कह रही है तू ! गौरी मेरी बेबी है ?...तुझे कैसे मालूम !"

"ये गौरी मेरी बेटी नहीं है काका ! हिन्दनमें जब बाढ़ आई थी तो वह मेरी ननदको नदीके किनारे बेहोश मिली थी ।"

"बाढ़में मिली थी...लेकिन बाढ़में तो बहुत-से बच्चे बहे होंगे...कहीं गौरीको मेरा धन दिलानेके लिये...!"

"नहीं, काका नहीं ! मुझे इतनी नीच मत समझो । मैं गरीब सही पर धनके लिए इतना नीचे गिरनेवाली नहीं हूँ । मैं यहाँ आई थी तभी मैंने बेबीका फोटो देख कर यह जान लिया था कि गौरी आपकी बेबी है । गौरीका बचपनका एक फोटो, जो उन्होंने गौरीके मिलनेके थोड़े ही दिन बाद खिचाया था, मेरे पास अभी भी रखा है...और काका गौरीके बचपनके कपड़े, कान बुन्दे और लाल जूते सभी मेरे पास रखें हैं...उन्हें देख कर आप अवश्य पहचान जायेंगे कि गौरी कोई दूसरी नहीं आपकी बेटी है, आपकी बेबी है ।"

"जरा वह गहने-कपड़े ला कर दिखा तो ?" काका ने अविश्वाससे कहा ।

जानकी वहाँसे उठ कर अपनी कोठरीमें आई । उसकी पसलियोंमें जैसे बर्फ समा गई हो । उसकी आँखें रो रही थीं, उसका मन रो रहा था । काँपते हाथोंसे सारा सामान ला कर उसने काका के हाथोंमें रख दिया ।

सामान एक छोटी-सी टोकरीमें बँधा हुआ था। कपड़े इत्यादि पुराने हो गए थे परन्तु फिर भी काका को उन्हें पहचानते देर न लगी। बुन्दोंको वह एक टक देखने लगे। काका उन बुन्दोंको आज तक नहीं भूले थे। जानकी ने गौरीके बचपन का फोटो काका के हाथोंमें देते हुए कहा—"उन्होंने गौरीका यह फोटो मेलेमें उतरवाया था!"

सब वस्तुओं और अन्तमें फोटोको देख कर काकाको विश्वास हो गया कि गौरी उनकी बेबी ही है, अन्य नहीं। खुशीके मारे उन की आँखोंमें आँसू बहने लगे। दो क्षण चुप रह कर उन्होंने गौरी-गौरी कह कर पुकारना शुरू किया और उठनेका उपक्रम किया परन्तु दुर्बलताके कारण पुन: खाट पर गिर पड़े।

जानकी ने उन्हें खाट पर ठीकसे बैठाते हुए करुण स्वरमें कहा—"काका, आप परेशान मत होइये! मैं गौरीको अभी आपके पास भेज देती हूँ।" जानकी जानेको उद्यत हुई तो काका ने कहा—"मेरी बेटीको इतने दिन छुपा कर तूने अच्छा नहीं किया जानकी...यदि मैं मर जाता तो मेरी आत्मा...!"

"ऐसी अशुभ बातें नहीं कहते काका...मैंने कृष्ण भगवान्से पैर पड़ कर उनसे प्रार्थना की थी कि वह आपको अच्छा कर दें और आप जैसे ही अच्छे होंगे मैं आपको सब कुछ बता दूँगी।"

"फिर भी जानकी तूने...!"

"हाँ काका, मुझे मालूम है आपको ये बात अच्छी नहीं लगी होंगी क्योंकि बेबी आपकी बेटी है...पर काका मेरा मन गौरीको देते हुए कितना दु:खी हो रहा है, आप जानते हैं? आप उसे नहीं समझ सकते काका! गौरीको मैंने अपनी बेटीसे अधिक प्यार किया है। मालकिन जितना रूबीको प्यार करती हैं उससे मैंने गौरीको कम प्यार नहीं किया है...हाँ हम गरीब लोग हैं काका...रूबीकी तरह गौरीको न रंग-बिरंगे कपड़े पहना सके, न घी-दूधसे नहला सके; फिर भी माँकी ममता जितनी गौरीको मैं दे सकती थी मैंने दी है...मेरा और कौन है काका...वह चले गये तो गौरीको ही मैंने अपना सब कुछ समझा...मैं जानती हूँ, उसके जानेसे संसार मेरा

सूना हो जायेगा...हम लोग ब्राह्मण हैं काका मैंने आपके घर नौकरी इसलिये नहीं की थी कि मुझे धन चाहिये था... ईश्वरका दिया गाँवमें बहुत कुछ है ... नौकरी मैं गौरीके माँ-बापको ढूँढ़नेके लिये ही कर रही थी... मैं गौरीको पहले ही दे देती, पर मेरी ममता... मेरा प्यार मुझे पकड़े रहे और आज आप मुझ पर धनका लालची होनेकी लांछना...!" और जानकी फूट-फूट कर रो पड़ी।

"अरे नहीं जानकी...तू ऐसा मत सोच...बीमारीमें मेरी मति खराब हो गई है इसीसे ऐसी बात कह गया...तू मुझे क्षमा कर दे...तू तो कितनी महान् है जानकी...ऐसे लोग...!"

"नहीं सरकार मैं महान्-वहान् नहीं हूँ। एक कमजोर माँ हूँ इसीलिये तो आज...!"

"मैंने कहा न जानकी, मैंने जो कुछ कहा उसका मुझे बड़ा दुःख है। तू क्या मुझे क्षमा नहीं कर सकती ?"

"काका, माफी तो मुझे माँगनी चाहिए आपको आपकी प्यारी बेटीसे इतने दिन अलग रखा और...!"

तभी गौरी आ गई दौड़ती हुई। जानकी से बोली—"माँ-माँ! मैंने मालकिनका कमरा साफ कर दिया।"

जानकी वहाँसे उठ कर एकदम चली गई। गौरी उसके पीछे जाने लगी तो काका ने पुकारा—"गौरी बेटा...सुनो!"

गौरी देख रही थी कि जानकी रोती हुई गई है। क्या हो गया माँ को! कहीं काका ने कुछ कह दिया क्या ?" गौरी काका की बात सुन कर रुक गई। "गौरी...बेबी...इधर आओ!"

गौरी मशीन-सी चलकर वापस आ गई। काका ने उसे गलेसे लगा लिया और जोर-जोरसे रोने लगे। उसकी समझमें कुछ नहीं आया कि काका को क्या हो गया है और वह क्यों इस तरह व्यवहार उसके साथ कर रहे हैं?...पर गौरीको अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। रोते-रोते काका ने गौरीको सब कुछ बता दिया। गौरी यह सुन कर काका की गोदमें सिर रख कर सुबक पड़ी...उसे भी याद आ गया कि मरते वक्त बापू ने कहा था...

इतनेमें पोर्चमें कार रुकनेकी आवाज आई। काका वहींसे अपनी पूरी शक्ति लगा कर पुकारने लगे—"हेमा... रघु... रूबी... इधर आओ... यहाँ आओ... जल्दी आओ...!"

रघुनाथ हेमाके साथ ही आए थे। काकाको इस तरह आवाजें देते देख घबरा गए। सबके सब उनके कमरेकी ओर लपके कि कहीं काका की तबीयत पुनः तो खराब नहीं हो गई। जब सबने कमरेमें प्रवेश किया तो उन्होंने देखा कि काका की आँखोंसे आँसू बह रहे हैं, पर वे हँस रहे हैं। उनके आते ही काका ने कहना शुरू किया—"रघु अपनी बेबी मिल गई... हेमा देखा तुमने मैं कहता था न बेबी एक दिन अवश्य मिलेगी... अपनी बेबी आखिर मिल गई न!"

"कहाँ है बेबी?" हेमा ने डरते-डरते और कुछ आश्चर्य मिश्रित स्वरमें पूछा।

"अरे यही गौरी अपनी बेबी है... देखो ये रहे उसके बचपनके कपड़े, गहने, फोटो!" एक-एक वस्तु काका ने रघुनाथ और हेमाको दिखाते हुए कहा।

रूबी ध्यानसे गौरीको देख रही थी और गौरी सबके उत्साह एवं उत्सुकता भरे मनोभावोंको देख कर समझ नहीं पा रही थी कि वह हँसे रोये या चुप रहे। हेमाको सब वस्तुएँ देखनेके बाद, गौरीके संबंधमें विश्वास करते देर न लगी। उसने उसे गलेसे लगा लिया। कैप्टन रघुनाथ खुशीसे फूल गये।

एक घण्टेमें गौरी घरकी नौकरानीसे रानी बन गई। उसके लिये नये कपड़े-गहनोंका प्रबंध होने लगा। सबकी आज्ञा सुननेवाली गौरी सबको आज्ञा देनेवाली मालकिन बन गई।

जानकी वहाँसे उठ कर सीधे अपनी कोठरीमें चली आई थी। उसका मन बहुत भारी हो गया था। कोठरीमें आ कर वह फूट-फूटकर रोने लगी। उसके लिये दुनियामें कोई अपना कहनेवाला नहीं रह गया, दुनियाकी इस टेढ़ी-मेढ़ी सड़क पर वह अकेली रह गई थी। आज जिन्दगीके जुएमें वह अपना सब कुछ हार चुकी थी और हारे हुए जुआड़ीकी तरह वह यह नहीं

सोच पा रही थी कि उसे अब कौन-सी बाजी चलनी है ? उसे रोता देख 'हीरामन' गौरी-गौरी... राम-राम... गौरी-गौरी... राम-राम चिल्ला रहा था... जानकी उठी और उसने पिंजरेका दरवाजा खोल दिया। दो पल चारों तरफ देख कर तोता उसमें से 'फुर्र' से उड़ गया और उसकी आँखोंके सामने पिंजड़ा खाली लटका झूलने लगा।

कोठरीमें सारे शहरका अंधकार भरा था। रोशनीकी एक किरण भी वहाँसे गुजरने से डर रही थी। इस अंधकारमें डूबी-डूबी सिसकियाँ उभर कर कोठरीकी आत्माको तड़पा देतीं। तभी, गौरीने कोठरीमें प्रवेश किया। दियासलाई ढूँढ़ी और दीया जला दिया। दीया जला कर जानकीके समीप आई और घुटने टेक कर बैठ गई। जानकी की आँखोंमें उसकी ममताके दो मोती चमक रहे थे...जो ढूलक गये थे उनका हिसाब नहीं था। गौरीने अपनी पतली-पतली उँगलियाँ बढ़ा कर उसकी आँखोंसे आँसू पोंछ दिये। भरे गलेसे पूछा—"माँ, तू रो रही है ?"

जानकीकी इच्छा हुई वह हाथ बढ़ा कर गौरीको खींच ले और गले-से लगा कर खूब रोये। जानकीने हाथ बढ़ाया पर वह उठे नहीं, हाथ बढ़ाना चाहा पर उसे लगा कि गौरी उससे बहुत दूर खड़ी हुई है इतनी दूर कि उस तक उसके हाथ नहीं पहुँच सकते, उसने उसकी ओर बढ़ना चाहा, किन्तु नहीं बढ़ सकी...उसने देखा उसके और गौरीके बीचमें एक बहुत ऊँची दीवार है, उसे पार करना उसके लिये असंभव है...गौरी और समीप आ गई; जानकीकी गोदमें उसने सिर डाल दिया, फिर गले लग गई और रो पड़ी, कहा—"माँ, तू चुप क्यों है, तू मुझे प्यार क्यों नहीं करती, तुझे क्या हो गया...क्या तू अब मेरी माँ नहीं रही...!"

पर जानकी चुप रही। उसकी आँखें रोती रहीं।

गौरीने फिर कहा—"माँ, तेरे मनमें क्या है ? कहीं तू मुझे छोड़ कर चली जानेकी बात तो नहीं सोच रही है...माँ तू मुझे छोड़ कर मत जाना माँ...मैं तेरे बगैर इस अनजान घरमें नहीं जी सकती...मैं मर जाऊँगी माँ...!" शब्द टूट गए, रुदन बढ़ गया।

जानकीने गौरीकी पीठ थपथपा कर भर्राये हुए गलेसे कहा—"यह घर अनजान नहीं है गौरी. . .यह तुम्हारा घर है. . .मैं तुम्हारी माँ नहीं हूँ. . .तुम्हारी माँ हेमा है. . .कैप्टन साहब तुम्हारे पिता हैं. . .मैंने तुम्हें बहुत दुःख दिया है गौरी. . .बहुत दुःख दिया है. . .!"

"तू कैसी पागलोंकी तरह बात करें रही है माँ. . .तू ऐसा मत बोल. . .!" गौरीने कहा ।

परन्तु जानकीने जैसे उसके ये शब्द सुने ही नहीं । वह अपने आप ही अपनी बात आगे बढ़ाती गई—

"मैं तुम्हारा कुछ भला नहीं कर सकी गौरी. . .न तुम्हें सुखसे रख सकी. . .न लिखा-पढ़ा सकी. . .तुम मुझे माफ कर देना मालकिन. . .बिटिया तुम अब जाओ. . .अपने घर जाओ. . .यह जगह तुम्हारे बैठनेके लायक नहीं है. . .!"

गौरीने अश्रुभरी आँखें उठा कर देखा—जानकीका चेहरा निष्प्राण, निष्प्रभ हो चुका है. ..वह न जाने कहाँ शून्यमें देख कर यह सब बोल रही है. . .जानकी इतनी कठोर क्यों हो गई ? कुछ खीझ कर रोती हुई गौरी बोली—"इसी एक दिन फेंक देनेके लिये तूने मुझसे इतना प्यार किया था माँ ?"

नहीं गौरी मैं तुम्हें फेंक नहीं रही हूँ. . .मैं तो तुम्हें ठीक हाथोंमें दे रही हूँ, तुम्हें तुम्हारे अपने घरमें पहुँचा रही हूँ. . ."

गौरी जानकीके गलेसे लग गई, तड़प कर बोली—"माँ मेरे लिये तेरे ही हाथ ठीक हैं माँ, तू मुझे किसीको मत दे. . .मैं तेरे साथ ही रहूँगी माँ. . .मैं तुझे छोड़ कर अलग नहीं रह सकती. . ."

"नहीं गौरी, अब यह सब नहीं हो सकता. . .तुम्हें मुझसे अलग रहना ही होगा. . .मैं चाह कर भी तुम्हारे साथ नहीं रह सकती ।"

"क्यों नहीं रह सकतीं, इसके साथ जानकी ?" दरवाजेसे हेमाकी आवाज़ आई—"जानकी, सच पूछो तो गौरी तुम्हारी ही बेटी है, मुझसे अधिक उस पर तुम्हारा अधिकार है, मैंने तो उसे सिर्फ जन्म दिया है, तुमने उसे पाल-पोस कर अपना लहू पिला कर उसे इतना बड़ा बनाया. . .

आजसे इस घरकी तुम नौकरानी नहीं हो, मालकिन हो. . .तुम मेरी बहन हो. . .उठो अपना जी ऐसा भारी नहीं करते. . ." हेमाने जानकीके समीप आते हुए कहा ।

जानकी हेमाको इस तरह आँख फाड़-फाड़ कर देख रही थी जैसे इसके पूर्व उसने हेमाको कभी न देखा हो । हेमाने फिर कहा—"जानकी ! हमें इतना नीच न समझो कि जिसने हमारी बेटीको गले लगा कर पाला, हमें उसे ही छोड़ देंगे ।. . .छिः. . .कैसी पगली है तू. . .और जरा सोच तो गैरी तेरे बगैर यहाँ एक पल भी रह सकेगी. . .चल, घर चल !" हेमाने जानकी को उठाते हुए गौरीसे कहा—"बेटी तू यहाँका दरवाजा बंद कर आ । मैं इसे ले कर काका के पास चलती हूँ ।' . . .वे ही इसका दिमाग ठीक करेंगे ।"

अध्याय : ६ :

यह निश्चित किया गया कि एक हफ्ते बाद एक बहुत बड़ी पार्टी की जाय जिसमें सब रिश्तेदारों, मित्रों एवं जान-पहचान वालोंको बुला कर बेबीके प्राप्त होनेकी सूचना दी जाये। एक हफ्तेमें काका भी चलने-फिरने लायक हो जाएँगे और उनमें शक्तिका संचार हो जाएगा। काका की इच्छा थी कि इस अवसर पर सत्यनारायणकी कथा की जाए किन्तु दोनों बातें एक साथ संभव नहीं थीं, अतः कथाका आयोजन पार्टीके दूसरे दिन रखा गया। कथाके पक्षमें जानकी सबसे अधिक थी। हेमा दोनों ओर ही समान झुकाव दिखाती थी, रघुनाथ इस सम्बन्धमें तटस्थ थे, पार्टी अवश्य हो यह उनका निर्णय था।

गौरी जबसे बेबीके रूपमें सामने आई थी घरकी चहल-पहल और रौनक बढ़ गई थी। अब प्रत्येक कार्यमें उसीको प्राथमिकता दी जाती थी, उससे सभी पहले सलाह ले कर उसके महत्त्वको प्रदर्शित करते। रूबी-की आभा गौरीके संमुख मन्द पड़ गई थी, उसी तरह जिस प्रकार चन्द्रमाके उदित होने पर तारोंकी ज्योति मन्द हो जाती है। काका तो गौरीको पहलेसे ही बहुत प्यार करते थे अब उसे आँखोंसे एक पलके लिये भी दूर न करते। रघुनाथके मनमें रूबीके परीक्षा-फलके समय गौरीके प्रति अन्य भाव उत्पन्न हो गया था, वह अब अभिमानमें परिणत हो गया।...वह भी गौरीसे बहुत प्रसन्न थे; रूबीसे भी मिलते थे किन्तु वह पहले जैसा उत्साह नहीं था। यद्यपि प्रेम उतना ही था। हेमा गौरीके चारित्रिक गुणों एवं सात्विक व्यवहारके कारण उससे अत्यधिक प्रसन्न थी। फिर रूबीके आचरणके सम्बन्धमें भी उसे ज्ञात था, अतः गौरी सरलतासे उसकी भी स्नेह-भाजन बन गई। जानकी गौरीसे जहाँ तक होता नहीं मिलती थी, कतराती थी, किन्तु गौरीके मनमें जानकीके प्रति वही पुरानी आत्मी-यता थी। वह उससे उसी दुलारसे, लाडसे मिलती जिस दुलारसे वह पहले

जानकीसे मिला करती थी। जानकी में गौरीके मालिककी बेटी बन जाने से हीनता की भावना उत्पन्न हो गई हो ऐसी बात नहीं थी। उसके कतराने-का कारण अन्य ही था। वह गौरी पर पहले-सा अधिकार नहीं पाती थी। उसका गौरी पर एकाधिकार था——आज वह एकाधिकार छिन्न-भिन्न हो गया था। फिर भी वह ऐसा न करती कि गौरीसे एक दम न मिले। गौरीका मन रखनेके लिये वह उससे मिलती और स्नेह जतानेकी कोशिश भी करती, क्योंकि वह जानती थी कि आजके युगमें किसीका मन रखना ही बहुत है। वैसे भी किसीका मन रखना बड़ा कठिन काम है, त्यागकी उसमें आवश्यकता पड़ती है और त्याग किसे अच्छा लगता है? त्याग तो हमेशा उत्पीड़न ही देता है, आत्मपीड़न देता है। दूसरेका मन रखनेके लिये आत्मपीड़न क्यों सहन किया जाय?...फिर भी जानकी ऐसा करती थी, उसकी दृष्टिमें यह भी एक पुण्य था और इसका बदला उसे अगले जन्ममें अवश्य मिलनेवाला था।

घरमें गौरीसे दो प्राणी असन्तुष्ट थे। एक तो खानसामा और दूसरे रूबी। खानसामा इसलिये असन्तुष्ट था कि गौरी जो कल तक नौकरानी थी तथा उसकी अपनी 'औकात' की थी आज मालकिन बन गई थी और उस पर हुक्म चलाने लगी थी। खानसामाके पकाए खानेमें सबसे अधिक गलतियाँ गौरी बताती थी। पहले भी गौरी उसकी बिल्कुल परवाह नहीं करती थी, फिर भी वह कभी-कभी उस पर हुक्म चलानेकी कोशिश कर लेता था किन्तु अब तो बात ही दूसरी थी।

रूबीके असंतोषका कारण था उसकी गौरीके आगमनसे होनेवाली उपेक्षा। कल जो उसकी आज्ञाके आगे झुक सकती थी आज उसके सामने सीना तान कर ही नहीं चलती बल्कि घर-भरकी लाडली भी बन गई थी। रूबी और गौरी एक माँ-बापकी सन्तान थीं फिर भी गौरी और रूबीके संस्कार अलग-अलग थे। दोनोंके साधारण कार्योंसे भी संस्कारोंकी यह विभिन्नता स्पष्ट परिलक्षित होती थी। एक शालीन, उदार सहृदया दूसरी उच्छृङ्खल, अनुदार और कठोर। एक घरके नियमोंको पूज्य समझनेवाली, दूसरी उन्हें बंधन समझनेवाली। एक सबके साथ सामंजस्य

करके चलनेवाली, दूसरी स्वयंको ही सबसे अधिक प्रमुखता देनेवाली।

:o: :o: :o:

समयकी मालाको सात दिनोंके मनके सरकाते देर न लगी। सबेरेसे घरमें तैयारियाँ प्रारम्भ हो गईं। हेमा और काका के ज़िम्मे सजावट और प्रबंधका कार्य था। रसोईका पूरा भार जानकीके सुपुर्द था। जानकी दौड़-दौड़ कर रसोई-घरकी आवश्यकताओंकी पूर्ति कर रही थी। बाहरसे एक दूसरा खानसामा भी बुलाया गया था।

गौरीके लिये विशेष कपड़े और गहने तैयार किये गये थे, कानोंके बुन्दे बचपनके ही पहनाए जानेवाले थे इस सत्यके बावजूद कि तबकी बेबी और अबकी गौरीमें महान अन्तर था...परन्तु यह काकाकी इच्छा थी। आजकी पार्टी और कलकी कथाका पूरा खर्च काका ही कर रहे थे।

गौरी बहुत खुश थी। वह काकाके साथ घूम-घूम कर काममें उनका हाथ बटा रही थी। रूबीका 'मूड' आफ था। वह अपने कमरेमें पड़ी थी। हेमाके कहने पर भी वह किसी काममें हाथ लगानेको तैयार नहीं थी।

शाम हो गई। हल्की नीली रोशनी बागमें फैल गई। चमकते हुए टेबल-कुर्सियों पर धीरे-धीरे लोग आ कर बैठने लगे। कारोंका ताँता बँध गया। लोग आते और सजावटकी तारीफ करते न थकते थे। हर वस्तु जो रखी गई थी उसका विशेष स्थान था जिससे उसकी सुन्दरतामें चार चाँद लग गए थे। आनेवाले मेहमानोंमें स्त्री-पुरुष सभी थे। सेंट और इत्रकी खुशबूसे सारा वातावरण महक उठा। नीली रोशनीमें रंगीन साड़ियाँ मुस्कराहटें बिखेर रही थीं, तो खूबसूरत सूट ठहाकोंसे वातावरणको गर्म बनाए हुए थे। साधारणतः लोग रघुनाथके सौभाग्य-की बातें कर रहे थे। रघुनाथ और हेमा दरवाज़े पर खड़े मेहमानोंका स्वागत कर रहे थे। लोग आते रघुनाथको बधाई देते और आगे बढ़ कर नियत स्थान पर बैठ जाते। थोड़ी दूर हट कर एक स्थान पर बड़ी मेज़

रखी थी जिसके साथ छै कुर्सियाँ लगी हुई थीं और उन कुर्सियोंका मुख मेहमानोंकी ओर था।

समारोहकी कार्यवाहीके सम्बन्धमें यह तय किया गया था कि सब मेहमानोंके आ जानेके पश्चात् रघुनाथ गौरीके सम्बन्धमें विस्तारसे सूचना देंगे और काका गौरीको ले कर सब मेहमानोंके सामने उपस्थित होंगे। काका जानकी का परिचय देंगे और हेमा जानकी को लेकर उपस्थित होगी। यह सब बड़ा नाटकीय था परन्तु इस तरीकेका निश्चय रघुनाथने किया था। प्रत्येक कार्यको 'नावेल' ढंगसे किया जाये, यह उनका सिद्धान्त था।

जब सब लोग एकत्रित हो गये तो रघुनाथ और हेमा बड़ी मेजके सामने आये। हेमा बैठ गई। रघुनाथने आगन्तुकोंको सम्बोधित किया—"लेडीज़ एण्ड जेन्टलमैन...!"

...और रघुनाथ बोले जा रहे थे...किस प्रकार वह १९४४ में दिल्ली-के बाहर गये...बेबी कैसे गुम हुई...उसके बगैर उन्होंने और विशेष रूपसे काका और हेमाने कैसे दिन गुजारे...और बेबी उन्हें कैसे मिली...? इत्यादि-इत्यादि...

"लेडीज़ एण्ड जेन्टलमेन...यू मस्ट बी व्हेरी एङ्कशश टू सी माई डाटर...बेबी एलियस गौरी, एण्ड आई डोन्ट विश टू ट्राई योर पेशेन्स मच...नाऊ आई शैल आस्क माई काका टू एप्पियर बिफोर यू विद गौरी...थैंक यू !"

तालियोंकी गड़गड़ाहटसे लान गूँज गया। सबकी नज़रें उस ओर उठ गईं और वहीं जम कर रह गईं जहाँसे काका एवं गौरी प्रवेश कर रहे थे। काकाने काली शेरवानी और चूड़ीदार पाजामा पहन रखा था। उनकी शेरवानीमें एक सफेद रंगका गुलाब लगा हुआ था। शेरवानीमें गुलाब आज काकाने न जाने कितने वर्षोंके बाद लगाया था। गौरीने मेरून रंगकी साड़ी पहन रखी थी और सुनहरे रंगका ब्लाउज़ जो उसके गौर वर्ण पर अत्यधिक खिल रहा था। गौरी सकुचाती हुई चल रही थी और काका सीना ताने हुए। मेज़के समीप आते ही गौरीने हाथ जोड़ कर सबको नमस्ते किया। एक बार फिर तालियाँ बज उठीं और काफी

देर तक बजती रहीं। जब तालियाँ बन्द हुईं तो काका बोलनेके लिये लिये खड़े हुए। उनका स्वागत भी तालियोंसे किया गया। काकाने बोलनेके पहले रूबीके कानमें कहा कि वह और हेमा जा कर जानकी को ले आयें। काका ने अपना भाषण हिन्दीमें प्रारम्भ करते हुए कहा—

"बहनो और भाइयो !

आप इस समय जिसे मेरे साथ देख रहे हैं ये मेरी गौरी है...मेरी बेबी है...!" काका इतने अधिक आवेशमें थे कि वाक्य पूरा करते-करते उनका गला भर गया।

"इसके खोने और मिलनेकी कहानी आप सुन ही चुके हैं...उसे मैं दोहराऊँगा नहीं। मैं तो उस व्यक्ति, उस माँकी कहानी आपको बताऊँगा, उससे आपको परिचित कराऊँगा जिसने गौरीका निर्माण किया है जिसने अमूल्य त्याग किया है...!"

रूबी हेमाको छोड़ कर अपने कमरेमें चली गई।

हेमा जानकीको नई साड़ी ब्लाउज़ इत्यादि दे कर अपने कमरेमें छोड़ आई थी कि वह तैयार हो ले। हेमा जब अपने कमरेके पास पहुँची तो उसे आश्चर्य हुआ कि उसके कमरेमें अँधेरा है। उसने आ कर रोशनी की, तो देखा कि उसकी दी हुई साड़ी-ब्लाउज़ वैसा ही रखा हुआ है...वहाँसे निकल कर हेमा रसोईघरमें जानकीको देखने आई तो वहाँ उसे ज्ञात हुआ कि रसोईघरमें जानकी पिछले आधे घण्टेसे नहीं आई है। हेमा जानकी की कोठरीकी ओर बढ़ी। वहाँ तेलका दीया जल रहा था। कोठरीमें जाकर हेमाने देखा सारा सामान अस्त-व्यस्त पड़ा है किन्तु वहाँ कोई नहीं है। हेमाकी समझमें कुछ नहीं आया कि जानकी कहाँ चली गई ? जब वह लौटने लगी तो उसे घर का खानसामा मिला। उसने पूछा—

"मालकिन आप जानकीको ढूँढ़ रही हैं क्या ?"

हेमाने सिर हिला कर हाँ कहा। खानसामाने एक मुड़ा हुआ कागज़ निकाल कर मालकिनके हाथमें दिया। उसने जल्दीसे कागज़ खोल कर देखा। वह किसीके नाम नहीं था। उस पर केवल एक पंक्ति लिखी हुई थी—"मेरा कार्य पूरा हो गया है और मैं वापस जा रही हूँ—जानकी।"

जानकीको पढ़ना-लिखना नहीं आता था अतः स्पष्ट था कि जानकीने यह पुरज़ा किसीसे लिखवाया था। कागज़ इतना मुड़ा हुआ था कि यह स्पष्ट था कि वह दो-तीन दिन पहलेका लिखवाया हुआ प्रतीत होता था। हेमाने उससे पूछा—"यह तुझे कब मिला?" खानसामाने बताया अभी चौकीदार उसे देकर गया है।

हेमा जब वापस समारोहमें पहुँची तो काका उसे अकेली देख घबरा गए। उन्होंने एक दम पूछा—"जानकी कहाँ है?" हेमाने कुछ नहीं कहा। केवल वह कागज़का टुकड़ा उनकी ओर बढ़ा दिया। काका पढ़ कर आश्चर्यचकित रह गये...दो पल चुप रहनेके पश्चात् बोले—"बहनो और भाइयो...! जिस नारीके त्यागकी मैं अभी आपसे प्रशंसा कर रहा था और अभी मैं जिससे आपका परिचय कराना चाह रहा था, वह हम लोगोंको छोड़ कर चली गई। वह गरीब थी लेकिन उसमें आत्म-सम्मानकी कमी नहीं थी। आत्मसम्मान की इसी भावनाने शायद उसे यहाँ न रहनेके लिये मजबूर कर दिया और वह लिख कर चली गई कि उसका काम पूरा हो गया और वह जा रही है।"

सारी सभामें सन्नाटा छा गया। किसीने तालियाँ नहीं बजाईं। सब आपसमें फुसफुसा कर बातें कर रहे थे। रघुनाथने खड़े हो कर सबसे पार्टी प्रारम्भ करनेकी प्रार्थना की। आधीसे ज्यादा पार्टी खत्म हो चुकने पर अचानक काका का ध्यान रूबीकी कुर्सी पर गया, वह खाली थी। काकाने रघुनाथसे इशारेसे पूछा तो वह हेमाके कानमें फुसफुसा कर बोले—"रूबी तुम्हारे साथ गई थी न, आई नहीं?" वह तो थोड़ी दूर तक ही गई थी मेरे साथ फिर वापस हो गई...अच्छा ठहरो मैं देख कर आती हूँ।" हेमाने कहा।

"नहीं, तुम बैठो, मैं ही देख कर आता हूँ...तुम सबेरेसे बहुत काम कर रही हो।" और वह आस-पासके लोगोंसे "एक्सक्यूज़ मी" कह कर घरके भीतर चले गये।

रूबीके कमरेमें गए तो देखा रूबी बिस्तर पर पड़ी है। उन्होंने उसे आवाज दी तो रूबी उठ कर बैठ गई। उसकी पीठ थपथपा कर रघुनाथने कहा—"अरे...यहाँ क्यों बैठी हो? पार्टीमें चलो न?"

"नहीं पापा, मेरी तबीयत ठीक नहीं है, मैं नहीं जाती ।"

"कैसी पागल लड़की है...अपनी सगी बहनकी पार्टीमें नहीं जा रही है...चलो उठो !" स्नेहसे हाथ पकड़ कर उठाते हुए रघुनाथने कहा ।

रूबी रघुनाथके हाथका सहारा ले कर उठी और चल पड़ी किन्तु अभी दरवाजे तक भी नहीं पहुँची थी कि चक्कर खा कर गिर पड़ी । रघुनाथने उसे उठा कर बिस्तर पर लिटा दिया और जल्दीसे डाक्टर नारंगके पास आए । डा० नारंग उनके फैमिली डाक्टर थे और उसी दिन वापस दिल्ली आए थ ।

जब रघुनाथ डा० नारंगके पास आए तो काका सबको धन्यवाद दे चुके थे और लोग जानेकी तैयारियाँ कर रहे थे । डाक्टर नारंगसे रुकनेके लिये कह कर वह मेहमानोंको विदा करने लगे । तभी काका उनके पास आए । रघुनाथने काका से कहा कि रूबीकी तबीयत जरा खराब है, वह डाक्टर नारंगको ले जा कर उसे दिखा दें । हेमा स्त्रियों को विदा करनेमें व्यस्त थी । गौरी हेमाके साथ थी ।

काका डाक्टरको ले कर रूबीके कमरेमें आए । डाक्टरने जाँच की और काका से पानी लानेके लिये कहा । पानीके दो-चार छींटें मारनेके पश्चात् रूबीको थोड़ा होश आ गया । काकाने जब पूछा कि क्या बात है तो डाक्टर चुप रहे । उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया । डाक्टरने थोड़ी देर चुप रहनेके बाद काकासे पूछा—"इनकी तबीयत कबसे खराब है ?"

काकाने कहा—"मुझे तो मालूम नहीं, शायद हेमाको मालूम होगा । मैं तो पहली बार ही यह स्थिति देख रहा हूँ...बात क्या है, बताइये न ?"

उसी समय रघुनाथ और हेमा भी लोगोंको जल्दी-जल्दी विदा करके आ गये । डा० नारंगने रघुनाथको अलग ले जा कर कहा—"कैप्टन योर डाटर इज़ प्रेग्नेंट !" (कैप्टन साहब आपकी बेटी माँ बननेवाली है)

"क्या कहते हैं आप ?" रघुनाथने एक दम भड़क कर कहा—"आपको शायद धोखा हुआ है !"

"नहीं मिस्टर रघुनाथ...मैं पूरी जाँचके बाद ही यह बात आपसे कह रहा हूँ !" डाक्टरने शान्त स्वरमें कहा ।

हेमा और काका भी वहीं आ गए। रघुनाथ हेमा पर उबल पड़ा—"देखती हो क्या हो गया ?...ये तुम्हारी बेटी रूबी...!"

डाक्टरने कहा—"एक्साइटेड मत होइये कैप्टन साहब ! ठंडे दिमाग से विचार कीजिये...कोई रास्ता शायद निकल आए।...किसीको मेरे साथ भेज दीजिये मैं दवा दे दूँगा, अभी तो रूबी होशमें आ ही गई है।" और डाक्टर चले गए।

डाक्टरके जाते ही कैप्टन रघुनाथ तेजीसे रूबीके कमरेमें घुसे। रुबी उसी समय उठ कर बैठी थी। उन्होंने उसके गाल पर ज़ोरसे एक तमाचा लगाया। तमाचा खाकर रुबी तिलमिला गई। उसकी आँखोंके आगे तारे नाच गए। रघुनाथने अपना हाथ उसका गला पकड़नेको बढ़ाया ही था कि काका आ गए। रघुनाथको पकड़ कर खींचते हुए बोले—

"पागल हो गए हो क्या ?"

"इस कुल-कलंकिनी का मैं अभी गला घोट दूँगा !" रघुनाथने काकासे स्वयंको छुड़ानेकी चेष्टा करते हुए कहा। पर काका किसी तरह रघुनाथको घसीट कर अपने कमरेमें ले गये। काका बुरी तरह हाँफ गए। वह अभी बीमारीसे उठे थे। उन्होंने दरवाज़ा अन्दरसे बन्द कर लिया।

"तुम एक दम पागल हो रघुनाथ...ज़रा सोचो तो इससे क्या होगा ? इस तरह शोर मचाओगे तो अभी सारे मुहल्लेमें बात फैल जायेगी और किसीको मुँह दिखाने लायक नहीं रहोगे...।"

"अभी कौन-सा मुँह दिखाने लायक रह गये हैं ?" रघुनाथने उबलते हुए कहा—"इसे मैंने कितना प्यार किया...इसकी कौन-सी इच्छा पूरी नहीं की...इसे कौन-सी स्वतंत्रता नहीं दी...और उसका बदला उसने..."

हेमाने दरवाज़ा खटखटाया। दरवाज़ा खुलने पर उसने प्रवेश किया। वह रो रही थी।

गौरी रूबीके ही कमरेमें थी। रंगमें इस तरह भंग पड़ते देख वह परेशान हो उठी।

:o: :o: :o:

पद्मशंकर और रधिया घरम बहुत उदास बैठे थे। रधियाकी समझमें नहीं आ रहा था कि जानकीको क्या हो गया। वह तीन चिट्ठियाँ उसे लिखवा चुकी थी पर न उसके पत्रोंका उत्तर ही आया, न जानकी आई। अब केवल एक ही रास्ता रह गया था कि पद्मशंकर स्वयं जा कर जानकीको दिल्लीसे वापस ले आएँ। पद्मशंकर तो पहले ही दिल्ली जाते लेकिन दो बातोंके कारण न जा सके। एक तो उनकी पत्नीकी तबीयत खराब रहती थी और दूसरे जानकीने गौरीकी परीक्षाके संबंधमें लिख रखा था। पद्मशंकरने अपनी पिछली दोनों चिट्ठियोंमें यह पूछा भी कि गौरीकी परीक्षा समाप्त हुई या नहीं, किन्तु जानकीने कोई उत्तर नहीं दिया।

पिछले दो दिनोंसे पद्मशंकरकी पत्नी की तबीयत कुछ ठीक थी इसीलिये रधिया और पदम भैया यह तय करने बैठे थे कि जानकीके सम्बन्धमें किस तरह समाचार प्राप्त किया जाये? रधिया मनमें बहुत डरी हुई थी। दिल्लीकी भीड़भाड़ और सवारियोंकी तेज़-रफ़्तारी उसके दिमागमें बार-बार घूम जाती थी, फिर उसे चन्दूकी याद आ जाती जो ऐसी ही भीड़में एक दिन मोटरसे कुचल गया था। कहीं जानकी भी...और उसके शरीरका एक-एक रोम खड़ा हो जाता! वह काँप जाती। अपनी बातको पूरा सोचनेकी शक्ति भी उसमें नहीं रह जाती, वह दोनों हाथोंसे अपनी आँखें बंद कर लेती, किन्तु जल्दी ही उसे अपने हाथोंको आँखोंसे हटाना पड़ता, क्योंकि उसकी बन्द आँखोंके आगे एक मोटर बहुत तेज़ीसे गुजर जाती...

रधियाने अपने मनकी इस शंकाको जब पदम भैयासे कहा था तो वह भी क्षण भरको काँप उठे थे किन्तु शीघ्र ही उन्होंने अपनेको सँभाल लिया। रधियासे बोले—"कैसी पागल है तू? ऐसा बुरा सोचती है उसके बारे में? रधिया बुरा तो अपने शत्रुके बारेमें भी नहीं सोचना चाहिए।"

"वह तो ठीक है भैया!" रधियाने एक ठंडी आह भरते हुए कहा था—"पर मन जिसको जितना प्यार करता है, उसके बारेमें उतनी ही 'संका' मनको सताती है।"

रधियाका कहना भी ठीक था, पद्मशंकर यह जानते थे। उनके मनमें भी कभी-कभी ऐसी ही कुशंकाएँ उठती थीं परन्तु ऐसी बातोंको वह जान-बूझकर महत्त्व नहीं देते थे। इनसे दुःख ही हाथ आता है और क्या मिलता है ?

पद्मशंकर कहते थे कि वह दो-चार दिन और रधियाकी भाभीकी तबीयत देख लेते, फिर जाते। घरके प्रति उनका मोह भी उतना ही स्वाभाविक था जितना रधिया का जानकीके प्रति। अपने और परायेमें यही अन्तर होता है। पद्मशंकर रधिया और जानकीको सगेसे अधिक प्रेम करते हुए भी अपनी पत्नीके लिये दो-चार दिन रुकना चाहते थे। रधियाने पद्मकी पत्नीकी इस बीमारीमें इतनी सेवा की थी कि शायद कोई रिश्तेदार भी नहीं करता, फिर भी रधिया चाहती थी कि पदम भैया दो दिन और न ठहर कर पहले जानकीऔर गौरीको ले आएँ।

पत्रोंके उत्तरकी आशा दिवसकी धूलकी तरह बैठ चुकी थी। जानकीके स्वयं आनेका कोई प्रश्न नहीं उठता था। रधियाको मालूम था जानकी कितनी जिद्दी है। गौरीके माँ-बापको ढूँढ़नेके लिये न जाने कहाँ-कहाँकी खाक छानती फिर रही होगी...लेकिन वह भी क्या करे ? उसके पतिकी अन्तिम इच्छा है, उसे कैसे पूरी न करे ? पतिकी आत्माकी शान्तिका प्रश्न है। जानकी जैसी धर्मपरायण स्त्रीके लिये वह स्वाभाविक है।...लेकिन ऐसा भी क्या ढूँढ़ना कि अपने जीने-मरनेकी खबर ही देना बन्द हो जाय। जानकीको क्या मालूम कि मेरी आत्मा यहाँ उसके लिये कितनी तड़प रही है। चन्दूके बाद उसका और कौन है...और मेरा ही कौन है ?...अगर उसको कुछ हो जाय तो इतनी दूर बैठ कर मैं कुछ कर भी तो नहीं सकती और अगर मुझे ही कुछ हो गया तो...उसकी सूरत देखे बगैर मैं मर जाऊँगी...!

"नहीं पदम भैया, तुम कल चले ही जाओ। दो दिनकी तो बात है...भौजीको मैंने इतने दिन सँभाला तो क्या दो दिन और नहीं सँभाल सकूँगी...मेरा मन बड़ा कच्चा है भैया...पता नहीं दो दिनसे मुझे क्या हो गया है...नींद नहीं आती। अगर थोड़ी-सी आँख झपती भी है तो बुरे-बुरे सपने दिखने लगते हैं...!"

"तुम तो यूँ ही शंका करती हो रधिया ! दो दिन ठहर जाओ... अब जहाँ इतने दिन सबर किया है तो दो दिन और कर लो। निश्चिन्त हो कर जाऊँगा और दो दिनमें जानकीको तुम्हारे सामने ला खड़ा करूँगा।"

"मेरी कोई जोर-जबरदस्ती तो नहीं पदम भैया, जो तुम्हें भेज ही दूँ। खैर जब तुम्हारी इच्छा हो चले जाना...न हो तो न जाना !" कुछ रूठती-सी, कुछ करुण होती-सी रधिया बोली।

पदम भैयाने कहा—"अरे दुःखी क्यों होती हो...तुम चाहती हो तो आज शामको ही चल दूँगा, बस ! लो अब खुश हो। दो दिनमें जानकी-को तुम्हारे सामने ला कर खड़ा न कर दूँ मेरा नाम पदम नहीं।"

"अब दो दिन भी नहीं लगेंगे भैया !" दरवाजे पर से आवाज़ आई।

रधिया और पद्म भैयाने मुड़ कर दरवाज़ेकी ओर देखा, वहाँ जानकी खड़ी थी। रंग जैसे एकदम काला पड़ गया था। आँखें लाल-लाल और सूजी हुई, जैसे या तो कई दिनोंसे सोई नहीं या कई दिनोंसे लगातार रोती रही है। दोनों उसे देखते रह गए। अचानक रधिया उठी और दौड़ कर जानकीके गले लग गई। दोनों ज़ोर-ज़ोरसे हिचकियाँ ले-ले कर रोने लगीं। फिर जानकी आगे बढ़ी और उसने पदम भैयाके चरण छू लिये।

"गौरी नहीं आई ?" पदम भैयाने आश्चर्यसे पूछा।

"गौरी...भैया...गौरी अपने घर गई...उसके माँ-बाप मिल गये... उन्हें सौंप आई हूँ !"

पद्मशंकरकी समझमें अब आया कि जानकी अचानक कैसे चली आई और उसकी ऐसी दुर्दशा क्यों हो गई है कि एक दम बूढ़ी लग रही है।

रधियाने पूछा—"कौन थे गौरीके माँ-बाप, कब मिले, कहाँ मिले ?"

"फिर पूछा लेना रधिया !" पद्म भैयाने कहा—"पहले बेचारीको मुंह-हाथ धो कर चैनसे बैठ लेने दो, कुछ खा-पी लेने दो। तुम तो बस उसके पीछे हाथ धोकर पड़ गईं।" ...और जानकी की तरफ मुड़ते हुए बोले—"जानकी, तू बहुत दिन जियेगी। अभी हम लोग तेरी ही बात

रहे थे...अच्छा जा तो जल्दीसे मुँह-हाथ धो आ...फिर तुझे तेरी भाभीके पास ले चलता हूँ।...रधिया तू भी चल...!"

:o: :o: :o:

रातके नौ बजे थे। काका, हेमा और रघुनाथ गहरी चिन्तामें डूबे थे। तीनोंके मत अलग-अलग थे किन्तु परेशानी एक ही थी। हेमा और रघुनाथ एक-दूसरेको (समस्यासे हट कर) दोषी भी ठहराते जाते थे। हेमा का मत था कि पुलिसमें खबर कर दी जाय। रघुनाथ कहता कि कुछ न किया जाय, काका इस पक्षमें थे कि वे लोग स्वयं रूबीको ढूँढ़ने निकलें।

रूबी शामको पाँच बजे तक घर पर ही थी। सच पूछा जाय तो उसे दिन भर पहरेमें ही रखा गया था। रघुनाथ ने सबेरे उठ कर रूबीको खूब भला-बुरा कहा था। घरमें अपनी स्थिति समझते रूबीको देर न लगी। उसे विनोदकी याद आई परन्तु उसे तो महीनों बीत गए और उसने जा कर एक पत्र भी नहीं दिया था। स्पष्ट था कि उसे कहीं सहारा नहीं मिल सकता था...अब क्या करे? उसके सामने विकट समस्या थी। अपनी गलतीका अनुभव उसे अब हो रहा था। लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी...इतनी कि गलतीको अब सुधारा नहीं जा सकता था। घरमें रहना एक समस्या थी? घरमें वह रहे भी किस मुँह से? उसने माँ-बापकी इज़्ज़तसे खिलवाड़ किया है। काका ठीक ही कहते थे कि उसे गलत शिक्षा दी जा रही है। तब काका उसे कड़वे लगते थे। आज उसे काका प्रिय लग रहे थे और पिता बुरे। वह इतनी स्वतंत्रता नहीं देते, तो वह क्यों इतनी उच्छृंखल होती...पिताको दोष देना भी व्यर्थ था, दोषी तो वह स्वयं है। पिता ने उसे, अति स्नेह दिया था तो इसका यह अर्थ नहीं था कि सीमाहीन हो जाय। उसी ने पिताके सीधेपनका नाजायज फायदा उठाया था...

उसकी दृष्टि सामने टँगे चित्र पर पड़ गई। चित्र, माँ एक खूबसूरत बच्चेको अपना दूध पिला रही थी। रूबीको यह चित्र बहुत पसन्द था। अचानक उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह बच्चा जोर-जोरसे रो रहा है और उसकी गोदमें आ गया है। उसे उस बच्चे पर प्यार नहीं आया, ममता नहीं हुई...उसने दोनों उँगलियों उस बच्चेके गले पर रख दी।...

वह पसीना-पसीना हो गई। वह इस बच्चेसे प्यार नहीं कर सकती... वह विनोदका बच्चा है, उसका बच्चा नहीं है। विनोद... स्वार्थका पुतला क्षणिक सुखको ही विशेष महत्त्व दिया... इसीलिये आज उसे इस प्रकार अन्धे रास्तों पर भटकना पड़ रहा है।

वह घरमें नहीं रहेगी। उसने फैसला किया। घरके लोगोंको वह अपने पापके कारण कलंकित न करेगी वह चली जायगी... कहाँ चली जायगी?... कहीं भी चली जायगी!...

रघुनाथ ने कहा—"वह हमारी सन्तान नहीं है। जहाँ जाती है जाने दो। इस घरमें उसके लिये कोई जगह नहीं है... अच्छा हुआ वह स्वयं चली गई... वरना मैं उसका गला घोंट कर उसे मार डालता..."

"बाप हैं न आखिर! आप इतने कठोर नहीं होंगे तो कौन होगा? माँके मनसे पूछिए! बेटे-बेटीका प्यार क्या होता है?... बच्चे गलती करें तो उन्हें मार नहीं डालते...!"

"यह कोई छोटी बात नहीं है हेमा! सोसाइटीमें आज हम सबके आगे नाक उठा कर चलते हैं। आज तक किसी ने इस घरकी ओर उँगली नहीं उठाई... लेकिन अब लोग इस घरको देख कर ठहाके लगायेंगे...

"अभी बात इतनी नहीं बढ़ी है आप ठंडे दिमागसे सोचिये तो! हम रूबीको ले कर बाहर चले जाएँगे और...!" हेमा चुप हो गई।

"और बच्चेको मार डालेंगे... यही न?" काका ने कहा।

"और किया भी क्या जा सकता है?" हेमा ने कहा।

काका बोले—"नहीं, यह ठीक नहीं है हेमा! क्यों न उस व्यक्तिका पता लगाया जाय और रूबीकी शादी...!"

"पता नहीं कौन था, किस नीची जात का... किस ज़लील खानदानका था वह... उसके साथ रूबीकी शादी करेंगे तो लोग क्या कहेंगे?" कैप्टन रघुनाथको अभी खानदान, जात-वर्णकी इज्ज़तका ध्यान था।

"पहले उसे ढूँढ़ तो लिया जाय!" हेमा ने कहा—"फिर दूसरी बातें बैठ कर बादमें तय की जा सकती हैं... कहीं उसने आत्महत्या कर ली तो...?" और हेमा रोने लगी।

रघुनाथकी इच्छा हो रही थी, कह दे कि ऐसा हो गया तो बहुत अच्छा होगा, परन्तु हेमाको रोते देख वह कुछ न कह सका ।

काका ने कहा—"हेमाका विचार ही ठीक है पुलिसको भी खबर कर दी जाय और खुद भी चल कर ढूँढ़ा जाय..."

"आप पुलिसको 'फोन' कर दीजिये न ?" हेमा रघुनाथसे रोती-रोती बोली ।

"काका, आप फोन कर दीजिये ।" रघुनाथ ने काकासे कहा ।

उसी समय टेलीफोनकी घंटी बजी । आशंकासे तीनोंके मन भर गये । हेमा दौड़ कर टेलीफीन 'रिसीव' करने पहुँची । बोली—"जी... मैं हेमा बोल रही हूँ...हाँ...हाँ...कैप्टन साहब भी हैं...कुंजीलालजी बोल रहे हैं...हाँ...कहिये न क्या बात है...रूबी आपको मिली है... हम लोग आ रहे हैं...अच्छा...आप ही आ जाइये...होशमें आ गई न रूबी...उसे भी लेते आइये...जल्दी आ जाइये...जी टैक्सी करके आ जाइये...पैसे...!" पर उधरसे फोन बन्द हो गया ।

"देखो मैं कहती नहीं थी कि कहीं वह आत्महत्या न कर ले...सौभाग्यसे बच गई ।"

"सौभाग्य नहीं, दुर्भाग्य !" कैप्टन साहबके व्यवहारमें इस समाचारसे कोई अन्तर नहीं पड़ा । उन्हें इससे दुःख ही हुआ ।

"तुम...आप बाप हैं...या कसाई हैं । कसाई भी इतना बेरहम नहीं होता होगा जितने आप हैं !"

"कैसे मिली कुंजीलालको ?" काका ने पूछा । उनका स्वर शान्त था ।

"ओखला गए हुए थे शामको । वहीं उन्हें किसीके नदीमें कूदनेकी आवाज आई...देखा तो रूबी थी...पहचान गए । अपने घर ही ले गए...अभी थोड़ी देर हुई...होश आया है रूबीको ।"

"उनका घर मालूम है तुम्हें, रघुनाथ !" काका ने पूछा ।

"नहीं," रघुनाथ बोले ।

"लेकिन वह तो खुद आ रहे हैं रूबीको ले कर...उन्होंने कहा न अभी टेलीफोन पर...!"

काका और हेमा उठ कर प्रवेश-द्वार पर आ गये और बेचैनीसे रूबीकी प्रतीक्षा करने लगे। कोई भी कार दिखाई देती तो वह यही समझते कि इसमें रूबी आ रही है। आशाकी किरण रोशनीके साथ अंधेरेमें लीन हो जाती।

दस बज गये। हेमा और काका की आँखें रास्तों पर टिकी हुई थीं। हेमाको याद आया। इसी तरह उस दिन अँधेरे, रास्तोंको घूरती रही थी रूबीके लिये...और आज फिर...क्या रूबी ऐसे अँधेरे रास्तोंपर भटकनेके लिये ही जन्मी है? ...उसके जीवनमें प्रकाश-किरण कभी नहीं चमकेगी? उसका भविष्य भी कितना अन्धकारमय है? अब क्या करना होगा, यह स्पष्ट हो कर भी बहुत कुछ अस्पष्ट था।

घरके अन्दर टेलीफोनकी घंटी बजनेकी आवाज फिर सुनाई दी। हेमा दौड़ कर अन्दर गई। रघुनाथ अपने स्थान पर सिगरेट पीते बैठे थे। टेलीफोनकी घंटीकी उन्हें कोई परवाह नहीं थी।

"हाँ...हाँ...हमलोग कितनी बेचैनीसे रास्ता देख रहे हैं आपका... जी क्या कहा? रूबी यहाँ नहीं आना चाहती..हाँ-हाँ तबीयत तो उसकी अभी खराब होगी ही...जी उसे टेलीफोन पर...अच्छा अच्छा रहने दीजिये...तो आप सबेरे आएँगे...रूबीको लानेका वायदा नहीं करते... क्यों भला?...डरी हुई है...आप उसे समझाइये न, डरनेकी कोई बात नहीं है...हमलोग उसे कुछ नहीं कहेंगे...जी अच्छा...लेकिन सबेरे अवश्य आ जाइयेगा...हमलोग बहुत परेशान हैं...जी...हाँ...जी...वैसे तो कोई बात परेशानीकी नहीं है...आप ठीक कहते हैं फिर भी...अच्छा ...अच्छा अपनी माताजीको भी लेते आइयेगा...जी हाँ, परन्तु सबेरे जल्दी ही आ जाइयेगा नहीं...नहीं...अभी जिद न कीजिये रूबीसे आनेके लिये ...सबेरे तक उसका दिमाग आप ही ठीक हो जायेगा...बहुत-बहुत धन्य-वाद...अरे हाँ देखिये...आप अपने घरका पता तो...!" लेकिन उधर टेलीफोन रखा जा चुका था...। रघुनाथ उठ कर अपने कमरेमें चले गये।

:o: :o: :o:

कुंजीलाल सबेरे कैप्टन रघुनाथके घर आए तो अकेले थे । उनके साद न रूबी थी न उनकी माँ । हेमा ने आते ही पूछा—"रूबी...!"

उन्होंने शान्तिपूर्वक उत्तर दिया—"धीरज रखिये । अभी सब बात मालूम हो जायगी । आपके काका और कैप्टन साहब कहाँ हैं...? उन्हें भी यहाँ बुला लीजिये ।"

कुंजीलालकी वाणीमें ऐसी गंभीरता थी कि हेमा उनसे कोई अन्य प्रश्न नहीं कर सकी । उसने कुंजीलालको बीचके कमरेमें बैठा दिया और स्वयं रघुनाथ और काका को बुलाने चली गई । रघुनाथ बाथरूममें थे । सिर्फ काका वहाँ थे, और वह आनेकी तैयारी कर ही रहे थे ।

हेमा ने कहा—"काका, रूबी मास्टरजीके साथ नहीं आई है ।"

"अच्छा !...चिन्ताकी कोई बात नहीं है हेमा, मास्टरजी बहुत भले आदमी हैं...कुछ कारण होगा जिससे रूबी नहीं आई । जाओ, रघुनाथको जल्दी बुला लाओ ।"

जब सब लोग इकट्ठे हो गये तो कुंजीलाल ने कहा—"किसीके घरेलू मामलातमें दखल देना मैं उचित नहीं समझता हूँ किन्तु भाग्यकी विडम्बना कहिये या परस्थितियोंका चक्र, मुझे आज आपके घरेलू मामलातके बारे में ही चर्चा करनी पड़ रही है ।"

सब चुप थे । काका ने 'हूँ' कहा और कुंजीलालकी ओर देखने लगे ।

"मुझे रूबी ने सब कुछ बता दिया है ?"

"क्या सब कुछ बता दिया है ?" हेमा और रघुनाथ ने एक साथ पूछा ।

"यही कि वह गर्भवती है । उसे अपने गलत कदमका भी ज्ञान है और इसीलिये वह डूब कर आत्महत्या करना चाहती थी । सौभाग्य से मैं वहीं था...और रूबी बच गई ।"

"लेकिन वह यहाँ क्यों नहीं आई ?" हेमा ने उतावलेपनसे पूछा ।

"उसे शायद आपलोगों ने बहुत डराया-धमकाया है, इसीलिये वह यहाँ आनेके लिये तैयार नहीं हुई ।...कल रात और आज सबेरेमें उसमें एक परिवर्तन हुआ है । कल रात तक वह चाहती थी कि उसके पेटमें जो बच्चा है वह मर जाय !"

"उसे मरना ही पड़ेगा !" रघुनाथ ने क्रोधसे कहा ।

"किन्तु यह उचित नहीं है ।" कुंजीलाल ने संयत स्वरमें कहा ।

"और उसने जो कुछ किया है वह उचित है ?...और अब उसे पाल कर वह समाजमें हमारी नाक कटाना चाहती है...इस स्थितिमें उसे स्वीकार ही कौन करेगा । हाँ, यदि अभी बात दबा दी गई और ठीक इंतजाम हो गया तो शायद बादमें किसीसे शादी भी हो जाय ।"

"यानी आप दूसरेको धोखा दे कर रूबीकी उससे शादी करेंगे ?" कुंजीलाल ने पूछा—"अगर उसे पता लग गया तो रूबीके जीवनका क्या होगा, इस प्रश्न पर भी विचार किया है आपने ?"

यह तर्क इतना कटु था कि रघुनाथ उसे पचा नहीं सके, कहा—"फिर उससे शादी करेगा कौन ? आप जैसा कह रहे हैं, उससे तो यही सिद्ध होता है...कि दोनों ही स्थितियोंमें उसकी जिन्दगी बरबाद हो चुकी है और उसकी शादी नहीं हो सकती...तो फिर आपने उसे डूब कर मर क्यों न जाने दिया ?"

यह कोई हल नहीं है ।" कुंजीलाल ने उत्तर दिया ।

"फिर हल क्या है ?" काका इतनी देर बाद बोले—"क्या आप उस व्यक्तिको जानते हैं जिसने अपना स्वार्थ निकालनेके लिये इस लड़कीका जीवन बरबाद कर दिया ? क्या वह इसे स्वीकार करेगा ?"

"उस व्यक्तिके सम्बन्धमें मुझे ज्ञात है और यह भी ज्ञात है कि वह उसे स्वीकार नहीं करेगा ?" कुंजीलाल ने उत्तर दिया ।

"कौन है वह हरामजादा !" रघुनाथ एकदम उबल पड़े—"उसे अभी गोली मार कर समाप्त कर दूँगा ।"

"कैप्टन साहब, गोली मारना इतना आसान नहीं है ! व्यर्थ गर्म न होइये । वह शायद बहुत चालाक है । स्वार्थ निकाल कर वह यहाँसे जा चुका है..." कुंजीलाल ने बताया ।

"लेकिन वह है कौन ?" हेमा ने पूछा ।

"वह रूबीका एक सहपाठी था...विनोद ! जैसा कि मुझे रूबी ने बताया उसके पिताका यहाँसे 'ट्रांसफर' हो चुका है और उसे यहाँसे गये दो

महीने बीत चुके हैं... जानेके बाद उसने न रूबीको पत्र दिया, न अपना पता ही।" कुंजीलाल बोले।

"इसका मतलब यह है कि अब दूसरा कोई रास्ता शेष नहीं है सिवाय इसके कि उस...!"

"बच्चेकी हत्या कर दी जाये। कैप्टन साहब, यह बात जब आपने पहले बार कही, तभी आपको सोचना चाहिए था कि ऐसी बातें बाहरके लोगोंके सम्मुख नहीं की जातीं... वह इसका दुरुपयोग भी कर सकता है।"

"आपका मतलब है मास्टरजी कि आप हमारी शिकायत पुलिसमें कर देंगे या हमें बदनाम कर देंगे।"

"मैं ऐसा नहीं करूँगा, किन्तु ऐसा कोई कर भी तो सकता है न? कैप्टन साहब! आप मुझसे इतने बड़े हो कर भी इतनी-सी बात नहीं समझते?"

"आप ही बताइये, क्या किया जाय?" काका ने कुंजीलालसे यह पूछा—"इस स्थितिमें उसे कोई स्वीकार नहीं कर सकता... आप तो बहुत सिद्धान्तोंकी बातें करते हैं न? बताइये आपके सामने कोई ऐसी पतित लड़की हो तो आप उसे स्वीकार करेंगे...?"

कुंजीलाल इस अचानक आक्रमणसे घबरा गये। इस पक्ष पर उन्होंने सोचा ही नहीं था। यह ठीक था कि वह यह जानते थे कि बच्चेकी हत्या न हो परन्तु उन्हें ही किसी 'पतित' का उद्धार करनेका 'चैलेंज' मिल जायेगा ऐसा उन्हें स्वप्नमें भी न सूझा था।

इस विचार मात्रसे वह पसीने-पसीने हो गये। उनकी परेशानी और उनका पसीने-पसीने हो जाना किसीसे छिपा नहीं रह सका। रघुनाथ पागलों-सा जोरसे ठहाका मार कर अट्टहास कर उठे, बोले—"घबरा गये मास्टर जी!...शाबास काका! सिद्धान्तवादियोंके क्रिया एवं कर्मकी विभिन्नताकी आपसे बड़ी सरलतासे पोल खोल दी।" रघुनाथ उठ कर कुंजीलालके समीप आये और उनकी पीठ सहला कर कहा—"मास्टरजी! इन्सान सिद्धान्तोंके भरोसे नहीं जी सकता... और सच तो यह है कि सिद्धान्तों का उपयोग मात्र आवरणका है जिन्हें ओढ़कर हम समाजमें अपनी उच्चताका

ढिंढोरा पीट सकते हैं परन्तु जब उन्हीं सिद्धान्तोंको कार्यरूपमें परिणत करने का अवसर आता है तो हमारा वास्तविक रूप सामने आ जाता है ।...आप पसीना पोंछ लीजिये । इतना बड़ा त्याग न आप कर सकते हैं न वह आपसे माँगा जायेगा...आप रूबीको ला दीजिये...जीनेके लिये थोड़ा धोखा खाना और धोखा देना दोनों ही आवश्यक होते हैं ।" रघुनाथ ने विजयके स्वरमें कहा ।

कुंजीलाल मौन रहे । सिर झुका कर न जाने क्या सोच रह थे । हेमाको तो जैसे काठ मार गया था, वह कुछ बोल ही नहीं पा रही थी ।

रघुनाथने फिर कहा—"रूबीको हमलोग समझा लेंगे...नाराज हो कर हम क्या कर सकते हैं...आखिर हमारी सन्तान है, हम ही उसे स्वीकार करेंगे कोई दूसरा नहीं...रूबीकी गलतीकी जिम्मेदार वही नहीं...हमलोग भी हैं...विशेष रूपसे मैं हूँ । काश, मैं काका की बात पर ध्यान देता तो आज यह स्थिति नहीं आती ।"

कुंजीलाल ने सिर उठाकर काकाके चेहरेको देखा, फिर धीरे-धीरे किन्तु दृढ़ शब्दोंमें कहा—"आपने जो कुछ कहा मैं उसका अर्थ आपसे पूछना चाहता हूँ कि आपने मेरी परीक्षा लेनेके लिये यह बात कही या आप बातका वही अर्थ है जो आपने कहा है ?"

"अब इसे जाने भी दीजिये ।" रघुनाथ ने उपेक्षासे कहा ।

"नहीं, जानेकी बात नहीं कैप्टन साहब ! सिद्धान्तोंको ले कर आपने खूब हँसी उड़ा ली, परन्तु आपको यह ज्ञात नहीं है कि सिद्धान्तोंकी हँसी वही उड़ाते हैं, जिनके अपने जीवनमें कोई सिद्धान्त नहीं होते...मैं अपनी बातका उत्तर चाहता हूँ ।"

"यदि यह मान भी लिया जाय कि काका ने जो कुछ कहा उसके प्रत्येक शब्दका वही अर्थ है तो क्या आप ऐसी लड़की से...रूबीसे शादी करनेके लिये तैयार हो जायँगे ?"—रघुनाथ ने काका के बदले उत्तर दिया ।

कुंजीलाल ने रघुनाथके प्रश्नके उत्तरमें दूसरा प्रश्न किया—"यदि मैं 'हाँ' कहूँ, तो क्या आप रूबीका ब्याह मुझसे करनेके लिये तैयार होंगे ?"

रघुनाथ इस प्रश्नकी अपेक्षा नहीं कर रहे थे। उनके इन्कार करनेका अर्थ था उनकी हार और उस बेइज्ज्तीकी उन्हीं पर वापसी, जो उन्होंने अभी थोड़ी देर पहले कुंजीलालकी की थी। उन्होंने दूसरा प्रश्न किया— "और रूबीके पेटमें पलनेवाले पापको आप इसी तरह पलने देंगे, उसे भी स्वीकार कर लेंगे ?"

"कैप्टन साहब, मैं रूबीको इसीलिये स्वीकार करूँगा कि एक मनुष्यकी हत्या न हो...मुझे ब्याहका मोह नहीं है, मोह है तो सिद्धान्तोंका है, इन्सानियतका है, इन्सानोंका है। एक मनुष्यका गला घोंट कर आप ईश्वरकी एक सर्वोत्तम कृतिका नाश कर देंगे। एक माँकी ममताका गला घोंट देंगे, एक बापके दुलारकी हत्या कर देंगे...मुझे उसीसे प्यार है...और अगर आप चाहें तो मैं रूबीको स्वीकार करनेको तैयार हूँ।"

सब आश्चर्यचकित रह गये। कुंजीलाल आदमी है, देवता है या पागल !...किसीकी समझमें कुछ नहीं आया। हेमाकी आँखोंमें आँसू भर आये; वह उठकर अन्दर चली गई।

"लोग आपको क्या कहेंगे जब समयसे पहले...!" काका बोलते-बोलते चुप हो गये।

"लोग मुझे ही तो कुछ कहेंगे न ? उसकी चिन्ता आप मत कीजिये ...आप पर और रूबी पर मैं आँच नहीं आने दूँगा।"

"सब कुछ बहुत जल्दी करना होगा।" काका ने कहा—"प्रबन्ध करनेमें...!"

"प्रबंध किसी प्रकारका न कीजियेगा...बिलकुल सीधे-सादे ढंगसे आपको यह शादी निपटानी होगी। बाह्य आडम्बरको मैं घृणाकी दृष्टिसे देखता हूँ।" कुंजीलाल बोले।

:o: :o: :o:

रघुनाथके घरमें आज खूब चहल-पहल है। रूबीके मुन्नेकी आज वर्षगाँठ है। रूबीकी शादीको एक वर्ष बीत गया। समय कितनी जल्दी

निकल जाता है, यह हमें तब ज्ञात होता है जब हम उसके दूसरे छोर पर पहुँचते हैं ।

मुन्नेके हाथोंसे 'केक' कटवाया गया । तालियोंसे 'लान' गूँज उठा । फिर काका खड़े हुए । उन्होंने काली शेरवानी पहन रखी थी और उनकी शेरवानीमें सफेद गुलाबका फूल लगा हुआ था । काका ने कहा—"आपको शायद याद होगा आजसे एक वर्षसे कुछ अधिक हुए हमने गौरीके मिलने की खुशी मनाई थी । उस दिन मैं आप सबको उस नारीके दर्शन नहीं करा सका जो गौरीको जन्म न देकर भी उसकी माँ रही. . . आज मैं उसे आपके सामने लानेमें बड़ी कठिनाइयोंसे सफल हो सका हूँ. . ."

हेमा ने जानकीको खड़ा कर दिया । उसके चेहरेसे परेशानी भी टपक रही थी और प्रसन्नता भी । उसने हाथ जोड़ कर सबको नमस्ते किया ।

काका ने फिर कहा—"जानकीको लानेमें मैं इसी कारण समर्थ हो सका कि गौरीकी शादीकी घोषणा भी इसी अवसर पर मुझे करनी है । सेंट स्टीवंस कॉलेजके प्रोफेसर कैलाशसे आपमें से अधिकांश लोग परिचित होंगे । गौरीका पाणिग्रहण उनसे करना तय कर दिया है और. . ."

काका की बात तालियोंकी गड़गड़ाहटमें डूब गई ।